सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 16, नई दिल्ली । गुरुवार, 27 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 दिल्ली के एक लाख करोड़ रुपए के बजट का कोई सिद्धांत नहीं है...
06 अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ के खतरे
08 रांची में भाजपा नेता की हत्या, पूर्व मुख्यमंत्री ने मांगा हेमंत का इस्तीफा

# दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारियों की शय पर दिल्ली में पुरानी ई-रिक्शा का चेसिस नंबर बदल कर लोग करवा रहे हैं नया पंजीकरण

संजय बाटला

**नई दिल्ली।** दिल्ली में आज की तारीख़ में दिल्ली परिवहन विभाग के आला अधिकारियों की शय पर कुछ ई वाहन निर्माता और ट्रेड डीलर दिल्ली में पुराने किसी भी निर्माता द्वारा निर्मित और पंजीकृत करवाकर बेची हुई ई रिक्शा के चेसिस नम्बर बदलकर अपने नाम के पेपर जमा करवाकर उसी पुराने ई रिक्शा को नया पंजीकरण करवाकर बेच रहे है और सरकार को लाखों रुपए का चूना लगा रहे हैं। दिल्ली में बिना फिटनेस, बिना इंश्योरेंस, बिना टैक्स भरे चल रहे रिक्शा की फिटनेस करवाने में जो खर्चा आता है उससे बहुत कम कीमत पर उसी रिक्शा को परिवहन विभाग के क्षेत्रीय शाखाओं से नया पंजीकरण नंबर जारी करवाकर सरकारी राजस्व को चुना लगा कर अपना तो घर भर ही रहे हैं साथ ही सड़को पर असुरक्षा का माहौल भी उत्पन्न कर रहे हैं और ये सब उस दिन से और तेजी से होने लगा जब से दिल्ली परिवहन आयुक्त ने अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने पद के बल का दुरुपयोग कर और बॉक्सरो की मदद से दिल्ली की सड़को पर चल

रहे बिना कागजों वाले या बिना मान्य कागजों के चल रहे ई रिक्शा को उठवा कर सुपुर्द कर रहे हैं। **क्या सच में वाहन स्क्रैप डीलर उठाए हुए ई रिक्शा को स्क्रैप कर रहे है या बाहर इन्हीं डीलरो को बेच रहे है जो चेसिस नम्बर बदल कर पुराने ई रिक्शाओं का दिल्ली परिवहन विभाग की क्षेत्रीय शाखाओं से नए पंजीकरण बेखौफ करवाकर बेच रहे है और दिल्ली परिवहन विभाग कोई कार्यवाही करने के लिए तैयार नहीं।**

आपकी जानकारी हेतु बता दें यूपी में भी पुरानी ई-रिक्शा को नया करके उन पर चेसिस नंबर बदल कर बेचने वाले एक व्यक्ति को पुलिस ने गिरफ्तार किया है, जो गणपति स्पेयर पार्ट्स का मालिक है। पुलिस ने आरोपित के पास से दो ई-रिक्शा बरामद किया है। सिविल लाइन थाना प्रभारी संजय कुमार सिंह ने बताया कि गुरुवार रात को एसआइ विनोद कुमार अत्री और एसआइ जितेंद्र, भाटी पुलिस टीम के साथ चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान उन्हें सूचना मिली थी कि एक व्यक्ति पुरानी ई-रिक्शा को डेंट-पेंट कर और नया चेसिस नंबर गोदकर बेचने के लिए आ रहा है। सूचना के आधार पर पुलिस ने एक व्यक्ति को ई-रिक्शा के साथ पकड़ लिया और उससे पूछताछ की। ई-रिक्शा के कागज चेक करने पर पता चला कि पुरानी ई-रिक्शा पर ताजा पेंट लगा हुआ था और उसके चेसिस नंबर को भी बदला गया है। थाना प्रभारी संजय कुमार सिंह ने बताया कि आरोपित की निशानदेही पर एक ओर ई-रिक्शा बरामद कर ली गई। थाना प्रभारी ने बताया कि एसआइ विनोद कुमार की तहरीर पर आरोपित नीटूपाल निवासी जनकपुरी मोहल्ला के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया। उन्होंने बताया कि आरोपित की सहारनपुर अड्डे के पास गणपति स्पेयर पाट्स के नाम से दुकान भी है।

**अब आप समझ ही सकते हैं दिल्ली परिवहन विभाग किस प्रकार से दिल्ली की सड़को पर सुरक्षा की धज्जियां उड़ाने में और सरकारी राजस्व में चुना लगवा रहा है।**

## अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वीएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योतिचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला
संपादक

# दिल्ली बजट मेट्रो के लिए 6 गुना ज्यादा बजट, जानिए कौन-कौन से इलाके जुड़ेंगे

परिवहन विशेष न्यूज

मंगलवार को दिल्ली का बजट पेश करते हुए मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने इसे 'ऐतिहासिक बजट' करार दिया जो कि आधुनिक राजमार्गों, विश्वस्तरीय मेट्रो नेटवर्क और दुनिया भर में सबसे बड़े इलेक्ट्रिक बस बेड़े में से एक के साथ 'नये' दिल्ली की नींव रखेगा।

**नई दिल्ली:** दिल्ली सीएम रेखा गुप्ता ने मंगलवार को राजधानी का 1 लाख करोड़ रुपये का ऐतिहासिक बजट पेश किया. यह पिछले बजट से 31.5 प्रतिशत से अधिक है. दिल्ली के बजट में सीएम और वित्त मंत्री रेखा गुप्ता ने कई बड़ी घोषणाएं की. आम से लेकर खास तक हर आदमी की जरूरत का ध्यान बजट में रखा गया है. बजट में मेट्रो सिटी की कनेक्टिविटी को और बेहतर बनाने के लिए खास ऐलान किए गए, जिससे दिल्लीवासियों का सफर आने वाले दिनों में और आरामदायक हो जाएगा. मंगलवार को दिल्ली के बजट में मेट्रो और परिवहन विभाग से जुड़ी दो बड़ी घोषणाएं की गईं. ट्रांसपोर्ट, सड़कों और मेट्रो विस्तार के लिए 12,952 करोड़ रुपये का आवंटन किया गया है. बजट में आवंटित की गई इस रकम को बेहतर सड़कें, पब्लिक ट्रांसपोर्ट और कनेक्टिविटी में इस्तेमाल किया जाएगा.

**दिल्ली मेट्रो को बजट 6 गुना तक बढ़ा**

दिल्ली सरकार ने परिवहन बजट में पिछले साल की तुलना में 6 गुना बढ़ोतरी की है, जो अब 2,929.66 करोड़ रुपये हो गया है. दिल्ली मेट्रो रेल कॉरपोरेशन (डीएमआरसी) ने मंगलवार को अपने नेटवर्क में चार और स्टेशनों को जोड़ा, जिसके बाद मेट्रो का कुल नेटवर्क 394.24 किलोमीटर तक पहुंच गया है, जिसमें 289 स्टेशन शामिल हैं. दिल्ली सरकार ने मेट्रो के लिए इस साल 2,929.66 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है, जो पिछले साल के 500 करोड़ रुपये के बजट से करीब 6 गुना अधिक है.

दिल्ली मेट्रो के चरण-4 के विस्तार के लिए 2,929.66 करोड़ रुपये समर्पित किये जाने से बढ़ावा मिला है. दिल्ली मेट्रो के चरण-4 के विस्तार में, लाजपत नगर-साकेत जी ब्लॉक, इंद्रलोक-इंद्रप्रस्थ और रिठाला-बवाना-नरेला-नाथूपुर (कुंडली) जैसे प्रमुख गलियारे शामिल हैं.

फेज चार में 3 प्रमुख मेट्रो कारिडोर का निर्माण कार्य 60 प्रतिशत पूरा हो गया है. इसमें जनकपुरी पश्चिम - आरके आश्रम, मजलिस पार्क - मौजपुर और तुगलकाबाद- एयरोसिटी कारिडोर शामिल है. इसकी कुल लंबाई 65.202 किलोमीटर व 45 मेट्रो स्टेशन होंगे. इसके अलावा इस साल मार्च में तीन अन्य कारिडोर के निर्माण के लिए स्वीकृति मिली है. जिसमें रिठाला- नाथूपुर (कुंडली), साकेत जी ब्लाक- लाजपत नगर और इंद्रलोक- इंद्रप्रस्थ कारिडोर शामिल हैं. इन तीनों कारिडोर की कुल लंबाई 47.225 किलोमीटर होगी और 39 स्टेशन होंगे. इस तरह फेज चार में कुल 112.427 किलोमीटर कारिडोर का निर्माण होना है.

दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन (DMRC) अपने फेज 4 कॉरिडोर के विस्तार के साथ आगे बढ़ रहा है. 2026-2027 के अंत तक, कॉर्पोरेशन की योजना एनसीआर में कम से कम 44 नए मेट्रो स्टेशन बनाने की योजना है. भारत में सबसे लंबे मेट्रो नेटवर्क DMRC के पास मौजूदा वक्त में 12

कॉरिडोर में फैले 289 स्टेशन हैं. नए स्टेशन दिल्ली मेट्रो फेज-4 कॉरिडोर का हिस्सा होंगे, जो नोएडा मेट्रो एक्वा लाइन और रैपिड मेट्रो गुरुग्राम सहित 395 किलोमीटर से अधिक की दूरी तक फैला होगा. फिलहाल, DMRC केवल जनकपुरी पश्चिम और कृष्णा पार्क एक्सटेंशन के बीच फेज 4 रूट पर मेट्रो ट्रेनें चलाता है.

**दिल्ली मेट्रो के चौथे फेज के प्रमुख स्टेशन**

**1. मौजपुर-मजलिस पार्क कॉरिडोर (12.318 किमी, 8 स्टेशन)**

यमुना विहार भजनपुरा झारोदा माजराबुराड़ी खजूरी खाससोनिया विहारसूरघाटजगतपुर गांव.

**2. कृष्णा पार्क एक्सटेंशन से रामकृष्ण आश्रम मार्ग कॉरिडोर (26.462 किमी, 21 स्टेशन)**

केशोपुर पुष्पांजलि दीपाली चौक पीतमपुरा प्रशांत विहारउत्तरी पीतमपुराहैदरपुर बादली मोड़ भलस्वा मजलिस पार्क आजादपुरअशोक विहार डेरावल नगरघंटा घर पश्चिम विहार पश्चिम विहार पश्चिम मंगोल पुरी मेट्रो स्टेशन नबी करीम रामकृष्ण आश्रम मार्ग वेस्ट एन्क्लेवपुलबंगाशसदर बाज़ार मेट्रो स्टेशन

**3. दिल्ली एयरोसिटी से तुगलकाबाद (23.622 किमी, 15 स्टेशन)**

दिल्ली एरोसिटी से तुगलकाबाद कॉरिडोर (15 स्टेशन)

महिपालपुर वसंत कुंजकिशनगढ़ मेट्रो स्टेशन तुगलकाबाद रेलवे कॉलोनी तुगलकाबाद छतरपुर छतरपुर मंदिर इग्नूनेब सरायसाकेत जी ब्लॉक अंबेडकर नगर खानपुर संगम विहार-तिगरीआनंदमयी मार्ग जंक्शन

**5,000 नई EV बसों से बनेंगी ग्रीन दिल्ली**

दिल्ली के बजट में सीएम रेखा गुप्ता ने पर्यावरण के लिहाज से साफ-सुथरा बनाने के लिए भी बड़ी घोषणा की गई है. सरकार ने 2025-26 तक दिल्ली की सड़कों पर 5,000 से अधिक नई इलेक्ट्रिक बसें उतारने की योजना बनाई है. वर्तमान में दिल्ली में 12,952 बसें चल रही हैं, जिनमें से 2,152 इलेक्ट्रिक बसें हैं. दिल्ली परिवहन मंत्रालय के अनुसार, इन नई बसों को जोड़ने के बाद दिल्ली में कुल बसों की संख्या 17,952 हो जाएगी, जिसमें से 7,152 इलेक्ट्रिक बसें होंगी. दिल्ली के परिवहन मंत्री ने कहा, ₹हमारा लक्ष्य दिल्ली को प्रदूषण मुक्त बनाना है. इलेक्ट्रिक बसों के जरिए हम न केवल प्रदूषण कम करेंगे, बल्कि यात्रियों को सस्ती और आरामदायक यात्रा का अनुभव भी देंगे.₹ इन नई बसों में आधुनिक सुविधाएं जैसे जीपीएस, सीसीटीवी, और आरामदायक सीटें होंगी, जिससे यात्रियों को बेहतर अनुभव मिलेगा.

**दिल्ली सरकार का बजट में बड़ा इजाफा**

दिल्ली सरकार ने परिवहन क्षेत्र को मजबूत करने के लिए इस साल बजट में भारी बढ़ोतरी की है. मेट्रो और बसों के लिए कुल 2,929.66 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जो पिछले साल की तुलना में 6 गुना अधिक है. मेट्रो के लिए 2,929.66 करोड़ रुपये और बसों के लिए 1,000 करोड़ रुपये से अधिक का बजट आवंटित किया गया है. इस बजट से न केवल मेट्रो का विस्तार होगा, बल्कि इलेक्ट्रिक बसों की संख्या बढ़ने से दिल्ली की हवा भी साफ होगी. सरकार ने केंद्रीय सड़क निधि (सीआरएफ) और शहरी विकास निधि (यूडीएफ) के जरिए दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) के बीच बेहतर संपर्क के लिए 1,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं.

**यात्रियों को मिलेगी राहत, पर्यावरण को फायदा**

इन दोनों योजनाओं से दिल्ली के यात्रियों को बड़ी राहत मिलेगी. मेट्रो के नए रूट्स से दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में कनेक्टिविटी बेहतर होगी, जिससे जाम की समस्या कम होगी. वहीं, इलेक्ट्रिक बसों के बढ़ने से प्रदूषण में कमी आएगी और यात्रियों को सस्ती और सुरक्षित यात्रा का विकल्प मिलेगा. दिल्ली सरकार का यह कदम न केवल परिवहन को बेहतर बनाएगा, बल्कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी एक बड़ा कदम साबित होगा. दिल्ली के लोगों ने इस पहल की सराहना की है. एक यात्री ने कहा, ₹मेट्रो का विस्तार और नई इलेक्ट्रिक बसें आने से हमारी रोजमर्रा की यात्रा आसान हो जाएगी. साथ ही, प्रदूषण कम होने से हमारी सेहत को भी फायदा होगा." दिल्ली सरकार की इस पहल से न केवल परिवहन व्यवस्था में सुधार होगा, बल्कि यह शहर को एक स्वच्छ और हरित भविष्य की ओर ले जाएगा।

# ट्रैफिक पुलिस सख्त कार्रवाई : बिना हेलमेट बाइक चलाने वालों की खैर नहीं!

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू कर दी है। अब बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने सीट बेल्ट और वैध लाइसेंस के बिना गाड़ी चलाने पर भी सख्त कार्रवाई होगी। बिना हेलमेट दोपहिया वाहन चलाने पर अब ड्राइविंग लाइसेंस जब्त किया जा सकता है।

**नई दिल्ली।** भले ही सड़क हादसों में लोग गंभीर रूप से घायल हो जाएं, यहां तक कि उनकी जान तक चली जाए, बावजूद इसके दिल्लीवासी यातायात नियमों का पालन नहीं करते। दिल्ली में प्रतिदिन होने वाले सड़क हादसों में किसी न किसी की जान जाती है।

इसी को देखते हुए यातायात पुलिस ने अब नियमों की अवहेलना करने वाले चालकों के खिलाफ कार्रवाई तेज कर दी है। अब बिना हेलमेट दो पहिया वाहन चलाने, सीट बेल्ट और वैध लाइसेंस के बिना गाड़ी चलाने पर भी सख्त कार्रवाई होगी।

**अब ड्राइविंग लाइसेंस होगा जब्त**

इसी क्रम में बिना हेलमेट दो पहिया वाहन चलाने पर अब ड्राइविंग लाइसेंस जब्त किया जा सकता है। इसको लेकर एडिशनल पुलिस कमिश्नर सत्यवीर कटारा ने बीते माह सभी ट्रैफिक कर्मियों को एक सर्कुलर भेजा था, जिसमें दोपहिया वाहन चालकों पर कार्रवाई तेज करने के संबंध में निर्देश जारी किए गए थे।

पिछले साल सड़क दुर्घटनाओं में लगभग 40 प्रतिशत मौतें दोपहिया वाहन सवारों की हुई थीं। राजधानी में हुई दुर्घटनाओं में 611 दो पहिया वाहन चालक मारे गए थे और 2,233 घायल हुए थे।

दिल्ली ट्रैफिक के आंकड़ों के अनुसार, दोपहिया वाहन सवारों की मौत के कारणों का विश्लेषण करने पर पता चला कि उनमें से कई या तो बिना हेलमेट के थे या उन्होंने ठीक से हेलमेट नहीं पहना था, जिसके कारण उन्हें सिर पर गंभीर चोटें आईं।

**हेलमेट नियमों का उल्लंघन करने पर 1,000 रुपए का जुर्माना**

हेलमेट की खराब गुणवत्ता भी मौतों का एक और कारण थी। ट्रैफिक फ्लो के विपरीत चलना, तेज गति से वाहन चलाना और लाल बत्ती पार करना ऐसे सवारों की मौत और चोटों के दूसरे कारण थे।

सत्वीर कटारा ने सर्कुलर में कहा कि हेलमेट नियमों का उल्लंघन करने पर 1,000 रुपए का जुर्माना लगता है। दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के हेड कांस्टेबल और उससे ऊपर रैंक के अधिकारी अपराध को कम करने के लिए अधिकृत हैं।

मोटर वाहन अधिनियम की धारा 206 की उप-धारा 4 के अनुसार, अपराधी/चालक का लाइसेंस जब्त किया जा सकता है और धारा 19 के तहत अयोग्यता या निरस्तीकरण की कार्यवाही के लिए लाइसेंसिंग प्राधिकारी को भेजा जा सकता है। हमने सभी ट्रैफिक अधिकारियों को निर्देशों का पालन करने का निर्देश दिया है।

**तीन बार यातायात उल्लंघन पर रद्द होगा लाइसेंस**

वहीं हाल ही में स्पेशल सीपी ट्रैफिक अजय चौधरी ने दिल्ली परिवहन विभाग को पत्र लिखकर उन लोगों के ड्राइविंग लाइसेंस रद्द करने की सिफारिश की थी, जिन्होंने मोटर वाहन अधिनियम, 1988 की धारा 184 और/या 185 का तीन या अधिक बार उल्लंघन किया है।

धारा 184 खतरनाक ड्राइविंग से संबंधित है। इसमें रेड लाइट जंप करना, गलत तरीके से ओवरटेक करना और गाड़ी चलाते समय फोन का इस्तेमाल करना जैसे अपराध शामिल हैं। धारा 185 शराब या नशीली दवाओं के प्रभाव में गाड़ी चलाने से संबंधित है।

**पिछले तीन सालों में सड़क हादसों की बढ़ी**

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, पिछले तीन सालों में सड़क हादसों की संख्या 1.38 लाख से बढ़कर 1.68 लाख से अधिक हो गई है। साल 2021 में दिल्ली में 1,206 सड़क हादसों में 1,239 लोगों की मौत हुई थी।

2024 में 15 दिसंबर तक 1,398 हादसों में यह संख्या बढ़कर 1,431 हो गई। इसका मतलब है कि 2021 में, औसतन प्रतिदिन तीन लोगों की सड़क हादसों में मौत हुई है और 2024 में यह संख्या बढ़कर चार हो गई।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

# गुसैल किंतु कर्मठ स्वभाव के होते हैं वृश्चिक राशि वाले जातक

ज्योतिषाचार्य पंडित योगेश पौराणिक (इंजी)

नक्षत्र मंडल में जब चंद्रमा का गोचर विशाखा के अंतिम चरण से लेकर ज्येष्ठा के अंतिम चरण तक होता है तब वृश्चिक राशि होती है।

वृश्चिक स्थिर संज्ञक, शुभ्रवर्ण वाली, स्त्री जाति की, जल तत्व वाली, उत्तर दिशा की स्वामिनी, कफ प्रकृति वाली मानी गई है। यह राशि ब्राम्हण वर्ण वाली, हठी, दंभी, दृढ़ प्रज्ञ और निर्मल प्राकृतिक स्वभाव वाली है। कुंडली में इससे कद और गुप्त अंगों का विचार किया जाता है। मंगल, सूर्य और बृहस्पति ग्रह का प्रभाव इस राशि के जातकों में देखने को मिलता है।

**गुण और स्वभाव:** वृश्चिक राशि के जातक लंबे कद के घुंघराले बाल लिए हुए सुंदर स्वरूप वाले होते हैं। इनका सीना चौड़ा तथा माथा कुछ बड़ा होता है। वृश्चिक राशि के लोग दृढ़ निश्चयी, एकाग्रचित तथा भौतिकवादी होते हैं। इन्हे संगीत से अधिक लगाव रहता है। इन्हे गुस्सा भी बहुत जल्दी आता है और अगर कोई शत्रु बन गया तो बदला लिए बगैर ये नही मानते। वृश्चिक राशि के लोग प्रेम प्रसंग में तीव्र, उदार स्वभाव तथा दयालु प्रवृत्ति के होते हैं। यह काफी भावुक परिवार से लगाव रखने वाले ,निष्ठावान होते हैं। जीवन में जल्दबाजी ही इन्हे नुकसानदायी होती है इसलिए कोई भी कार्य सोच समझ कर करें।

**कैरियर:** वृश्चिक राशि के जातक पुलिस अधिकारी, सेना में उच्च पद पर, राजनयिक, दवा विक्रेता, शल्य चिकित्सक, अनाज का व्यापार, कलाकार, स्त्री रोग विशेषज्ञ, जासूसी, बंदरगाह या तट रक्षक, वकील, क्लर्क, वैज्ञानिक, लोहे तथा जमीन से संबंधित व्यापार आदि में सफलता प्राप्त करते हैं।

**रोग:** वृश्चिक राशि के लोगो को मूत्र विकार, किडनी के रोग, चोट, पथरी बबासीर, हड्डी टूटना , अल्सर, फोड़ा, फुंसी, अंडकोष वृद्धि, रक्तचाप, हृदय विकार आदि रोग परेशान कर सकते हैं।

**भाग्यशाली दिन** : रवि, सोम, मंगल और गुरुवार

**भाग्यशाली रंग** : पीला, लाल और संतरी

**भाग्यशाली अंक** :3,4,9

**शुभ रत्न** : लाल मूंगा

**उपाय:** वृश्चिक राशि के लोगो को मंगलवार का व्रत तथा हनुमानजी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक मंगलवार को भगवान शिव का अभिषेक गुड़ मिश्रित जल से करें और कपूर से आरती करें। सुंदरकांड पाठ करना इन्हे भाग्यशाली बनाता है।

# सनातन नव वर्ष 30 मार्च 2025 नव सम्वत २०८२ रविवार

नव सम्वत का प्रवेश हो रहा है। नूतनता का चतुर्दिक प्रसार दिखाई देता है। रस-राग और सुगन्ध से भरी हुई प्रकृति में तितलियाँ, भ्रमर और कोयलें अपने उन्मुक्त उल्लास के द्वारा मानो समृद्धि का संकेत कर रहे हैं। भारत देश इस अर्थ में विलक्षण है। यहाँ वर्ष का नवीकरण मात्र आंकिक गणनाओं के अधीन नहीं है, अपितु सम्पूर्ण पर्यावरण नवीनता को अंगीकार करके नये सम्वत्सर के आगमन का उत्सव मनाता सा प्रतीत होता है। *पारम्परिक रूप से भारत में नव वर्ष को 'नव सम्वत्सर' कह कर मनाया जाता है। जिसमें ऋतुयें बसती हैं, उसे सम्वत्सर कहते हैं। सम्वत्सर शब्द का अर्थ इसकी अन्तःक्रिया को व्यक्त करता हुआ इसकी चरितार्थता को भी स्पष्ट करता है। सम्वत्सर के प्रथम ऋतु के रूप में वसन्त का आगमन होता है। वसन्त ऋतु के चैत्र और वैशाख नामक दो महीने हैं, जिन्हें क्रमशः मधुमास और माधवमास कहा जाता है- 'वसन्तौ मधुमाधवौ'। यह मधुऋतु है, मधु अर्थात् जीवन का सत्त्व। इसी से जीवन की गति है। इसी मधु की न्यूनता, इसका सूख जाना शिशिर ऋतु के रूप में दिखाई पड़ता है। पत्ते वृक्षों से गिर जाते हैं। वनस्पतियाँ अपने रस-राग से रहित प्रतीत होने लगती हैं। इन दोनों के बीच ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतु का क्रम रहता है। *इसी वसन्त से प्रारम्भ होता है हमारा नव सम्वत्सर। यह सम्वत्सर कालपुरुष के अनवरत चंक्रमण का ही प्रतिफल है। महाभारत में राजा जनक एवं ऋषि अष्टावक्र के संवाद के क्रम में अष्टावक्र ने कहा है -"चौबीस पर्व, छः नाभि, बारह अंश और तीन सौ साठ अरे वाला संवत्सर रूप कालचक्र आप की रक्षा करे।" यह संवाद सम्वत्सर में निहित भारतीय विज्ञान को प्रकट करता है। इस कालचक्र को समझने चलेंगे तो हमें अपने जीवन के गहरे सन्देश अनुभव होंगे। *नव सम्वत्सर अपने आगमन से ही हमारा ध्यान मधु की ओर ले जाता है। सारा जीवन अन्तर्निहित मधु का ही विलास है, तो हमारे जीवन का मधु क्या है ? क्या है जिसे हमें सुदीर्घ जीवन में भोगते और चुकाते जाते हैं। वेद कहते हैं - मधु। भूयासं मधु सदृशः - हम मधु सदृश हो जायें। *यही मधु हमारे जीवन में 'आनन्द' कहलाता है। यह आनन्द जीवन का मधु है, इसी से परमात्मा ने सृष्टि को रचा है। अपने सत और चित से असावधान होकर भी जीव की लालसा इस आनन्द के प्रति कम नहीं होती। इस आनन्द तत्त्व को स्वयं में पहचानने का अवसर है नव सम्वत्सर। बदलते जाते ऋतुचक्र में हमारा आनन्द क्षरित होता जाता है, शुष्कता आती जाती है। ग्रीष्म, वर्षा और शरद जीवन की ऋतु बनकर बीत जाते हैं। *नव सम्वत्सर का स्वागत करते हुये हम अपने आनन्द तत्त्व को पहचानने का यत्न करें। अपना मधु खोजने में लगें। देखें कि जगा हुआ मधु प्रसादन करता है, यह हमें खिलाता है। यह हमारे भीतर की दिव्यताओं को रूप-आकार देता है, हमें सुरभित करता है। *नव सम्वत्सर अपनी नवीनता को प्रकृति के माध्यम से व्यक्त करता है। हम भी अपनी प्रकृति में जीने का अभ्यास करें। कृत्रिमता के छल से उबरकर अपने मधु का अनुसन्धान करते हुये हम अपने भीतर सूख रहे रस-रुचि-राग को जगाने का संकल्प ले सकें तो सम्वत्सर की नवीनता हमारे जीवन में भी खिल सकेगी।

## "चौंसठ योगिनी कौन"

*चौंसठ योगिनी मंदिर या चौंसठ योगिनियां प्रायः आदिशक्ति मां काली का अवतार या अंश होती हैं। घोर नामक दैत्य के साथ युद्ध करते हुए माता ने उक्त 64 अवतार लिए थे। यह भी माना जाता है कि ये सभी माता पार्वती की सखियां हैं। इन 64 देवियों में से 10 महाविद्याएं और सिद्ध विद्याओं की भी गणना की जाती है। ये सभी प्रायः आद्य शक्ति काली के ही भिन्न-भिन्न अवतारी अंश हैं। कुछ लोग कहते हैं कि समस्त योगिनियों का संबंध मुख्यतः काली कुल से है और ये सभी तंत्र तथा योग विद्या से घनिष्ठ सम्बन्ध रखती हैं। भारत में 8 या 9 प्रमुख चौंसठ-योगिनी मंदिर का उल्लेख मिलता है। इसमें केवल पांच के लिखित साक्ष्य उपलब्ध होते हैं; 2 ओडिशा में तथा 3 मध्य प्रदेश में, समस्त योगिनियां अलौकिक शक्तिओं से सम्पन्न हैं तथा इंद्रजाल, जादू, वशीकरण, मारण, स्तंभन इत्यादि कर्म इन्हीं की कृपा द्वारा ही सफल हो पाते हैं।*

*प्रमुख रूप से आठ योगिनियों के नाम इस प्रकार हैं:-*
*1. सुर-सुंदरी योगिनी,*
*2. मनोहरा योगिनी,*
*3. कनकवती योगिनी,*
*4.कामेश्वरी योगिनी,*
*5. रति सुंदरी योगिनी,*
*6. पद्मिनी योगिनी,*
*7. नतिनी योगिनी और*
*8. मधुमती योगिनी*
*चौंसठ योगिनियों के नाम:-*
*1.बहुरूप, 3.तारा, 3.नर्मदा, 4.यमुना, 5.शांति, 6.वारुणी 7.क्षेमंकरी, 8.ऐन्द्री, 9.वाराही, 10.रणवीरा, 11.वानर-मुखी, 12.वैष्णवी, 13.कालरात्रि, 14.वैद्यरूपा, 15.चर्चिका, 16.बेतली, 17.छिन्नमस्तिका, 18.वृषवाहन, 19.ज्वालाकामिनी, 20.घटवार, 21.कराकाली, 22.सरस्वती, 23.बिरूपा, 24.कौवेरी. 25.भलुका, 26.नारसिंही, 27.बिरजा, 28.विकतांना, 29.महालक्ष्मी, 30.कौमारी, 31.महामाया, 32.रति, 33.करकरी, 34.सर्पश्या, 35.यक्षिणी, 36.विनायकी, 37.विंध्यवासिनी, 38. वीर कुमारी, 39. माहेश्वरी, 40.अम्बिका, 41.कामिनी, 42.घटाबरी, 43.स्तुती, 44.काली, 45.उमा, 46.नारायणी, 47.समुद्र, 48.ब्रह्मिनी, 49.ज्वाला मुखी, 50.आग्नेयी, 51.अदिति, 51.चन्द्रकान्ति, 53.वायुवेगा, 54.चामुण्डा, 55.मूरति, 56.गंगा, 57.धूमावती, 58.गांधार, 59.सर्व मंगला, 60.अजिता, 61.सूर्यपुत्री 62.वायु वीणा, 63.अघोर और 64.भद्रकाली।*

*1. चौंसठ योगिनी मंदिर, मुरैना:- मध्य प्रदेश के मुरैना स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर का विशेष महत्व है। प्राचीन काल में इस मंदिर को तांत्रिक विश्वविद्यालय कहा जाता था। उस काल में इस मंदिर में तांत्रिक अनुष्ठान करके तांत्रिक सिद्धियाँ हासिल करने के लिए तांत्रिकों का जमावड़ा लगा रहता था।*

*2. चौंसठ योगिनी मंदिर, जबलपुर:- चौंसठ योगिनी मंदिर जबलपुर, मध्य प्रदेश का प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह मंदिर जबलपुर की ऐतिहासिक संपन्नता में एक और अध्याय जोड़ता है। प्रसिद्ध संगमरमर चट्टानों के पास स्थित इस मंदिर में देवी दुर्गा की 64 अनुषंगिकों की प्रतिमा है। यह भेड़ाघाट में है।*

*3. चौंसठ योगिनी मंदिर, खजुराहो:- शिवसागर झील के दक्षिण पश्चिम में स्थित चौंसठ योगिनी मंदिर चंदेल कला की प्रथम कृति है। यह मंदिर भारत के सभी योगिनी मंदिरों में उत्तम है तथा यह निर्माण की दृष्टि से सबसे अधिक प्राचीन है।*

*4. चौंसठ योगिनी मंदिर हीरापुर उड़ीसा:- हीरापुर भुवनेश्वर से 20 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गांव है। इसी गांव में भारत की सबसे छोटी योगिनी मंदिर 'चौंसठ योगिनी' स्थित है।*

*5. रानीपुर:- झरिया बलांगिर उड़ीसा का चौंसठ योगिनी मन्दिर:- ईंटों से निर्मित यह ऐतिहासिक मन्दिर उड़ीसा के बलांगिर जिले के तितिलागढ़ तहसील रानीपुर झरिया नामक जुड़वे गांव में स्थित है।*

## मासिक शिवरात्रि

सनातन धर्म में मासिक शिवरात्रि पर्व का खास महत्व है। यह पर्व हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन देवों के देव महादेव और मां पार्वती की पूजा की जाती है। साथ ही शिव-शक्ति के निमित्त शिवरात्रि का व्रत रखा जाता है। इस व्रत को करने से साधक को मनचाहा वरदान मिलता है। धार्मिक मत है कि भगवान शिव की पूजा करने से विवाहित महिलाओं के सुख और सौभाग्य में वृद्धि होती है। वहीं, अविवाहित जातकों की शादी शीघ्र हो जाती है। साथ ही मनचाहा जीवनसाथी मिलता है। साधक श्रद्धा भाव से भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा करते हैं।

मासिक शिवरात्रि शुभ मुहूर्त वैदिक पंचांग के अनुसार, चैत्र माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 27 मार्च को देर रात 11 बजकर 03 मिनट पर शुरू होगी और अगले दिन 28 मार्च को शाम 07 बजकर 55 मिनट पर समाप्त होगी। मासिक शिवरात्रि पर निशा काल में शिव-शक्ति की पूजा होती है। अतः 27 मार्च को चैत्र माह की शिवरात्रि मनाई जाएगी।

मासिक शिवरात्रि शुभ योग मासिक शिवरात्रि पर साध्य और शुभ योग का निर्माण हो रहा है। साध्य योग का संयोग 27 मार्च को सुबह 09 बजकर 25 मिनट तक है। इसके बाद शुभ योग का संयोग बन रहा है। इसके साथ ही अभिजीत मुहूर्त का भी योग है। इन योग में भगवान शिव और मां पार्वती की पूजा करने से साधक की हर एक मनोकामना पूरी होगी।

शिव जी की पूजा विधि सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि से निवितृ हो जाएं।

मंदिर की साफ-सफाई कर गंगाजल का छिड़काव करें।

एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर शिव जी और पार्वती माता की मूर्ति स्थापित करें।

कच्चे दूध, गंगाजल, और शुद्ध जल से शिवलिंग का अभिषेक करें। शिव जी को बेलपत्र, धतूरा, और भांग आदि अर्पित करें।

भगवान शिव को मखाने की खीर, फल, हलवा या फिर चावल की खीर का भोग लगाएं।

साथ ही माता पार्वती को 16 श्रृंगार की सामग्री अर्पित करें।

दीपक जलाकर भगवान शिव और माता पार्वती की आरती करें। शिव चालीसा और शिव जी के मंत्रों का जप करें। अंत में सभी लोगों में पूजा का प्रसाद बांटें।

शिव जी के मंत्र शिव मूल मंत्र - ॐ नमः शिवाय॥

भगवान शिव का गायत्री मंत्र - ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात॥

महामृत्युंजय मंत्र - ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

ध्यान मंत्र - करचरण कृतं वाक्कायजं कर्मजं वा। श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधं। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व। जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो ॥

रुद्र मंत्र - ॐ नमो भगवते रुद्राये।।

## ध्यान कोई चमत्कार नहीं ध्यान विज्ञान एक रिसर्च है। खोज है स्वयं की स्वयं तक

1. ध्यान स्वयं का जागरण है, जो स्वयं को जीने की कला सिखाता है।
2. क्या ध्यानी व्यक्ति के जीवन में कोई दुख नहीं है? जिसको हम दुख समझ रहे हैं। वह अज्ञान है।
3. ऐसा क्या मिलता है। ध्यान में जो दुख विदा हो जाता है। समझ देखने की दृष्टि
4. क्या हम अपने जीवन का निर्माण स्वयं कर सकते हैं? बिल्कुल कर सकते हैं सुंदर विचारों के साथ
5. क्या जीवन से सारी शिकायतें विदा हो सकती हैं? शिकायत है ही नहीं, केवल आसक्ति मलकियत जीवन बंधन के कारण शिकायत है।
6. जहां हम अभी हैं, जिस जगह हैं, क्या सुखी हो सकते हैं? बिल्कुल अपनी दृष्टि समझ से हम अभी और यही सुखी हो सकते हैं।
7. संपूर्ण सुख कैसे संभव है? चेतना के उदगमन से।
8. क्या चेतन कोई प्रोसीजर है? हां बिल्कुल प्रोसीजर है। एक बच्चे के बढ़ने के जैसा
9. अपनी चेतना के ऊपर कैसे काम करें? किसी मास्टर की सहायता से।
10. गुरु का क्या महत्व है? गुरु ज्ञान, समझ, राज देकर हमें रास्ता दिखाकर हमारे सवालों को हल करने में हमारी मदद करता है।
11. क्या जीवन एक सवाल है? उनके लिए सवाल है । जो जीवन को नहीं जानते पहचानते नहीं।
12. क्या समस्त प्राणी सुखी हो सकते हैं? सभी सुखी ही है। दुख हमने निर्मित किया है, स्वयं की अज्ञानता के कारण।
13. क्या सुख दुख एक भरम है? जब हम दुख निर्मित नहीं कर सकते तो सुख भी कैसे निर्मित कर सकते हैं दोनों ही अज्ञानता का कारण है।
14. जीवन को जानते ही हम संपूर्ण को जान लेते हैं, जहां से जीवन की उत्पत्ति हुई है।
15. जीवन परमात्मा का सृजन है। सृजन में ही विलय है, यही जीवन का रहस्य है।
16. हर परिस्थिति में क्या हम सुखी रह सकते हैं? परिस्थिति का नाम अज्ञान है। अज्ञान में सदा दुख है। अज्ञान के हटते ही दुख सुख विदा हो जाता है। सिर्फ आनंद शेष बचता है।

आनंद का अर्थ है: जहां दुख भी सदा को गया और दुख ही चला गया सदा को, तो सुख भी चला गया सदा को ।

## कैसे पहचानें कि दैवीय शक्ति आपकी मदद कर रही है, जानिए ग्यारह संकेत

दुनिया में बहुत से लोग ऐसे हैं जिन्हें उनके जीवन में दैवीय सहायता मिलती है। किसी को ज्यादा तो किसी को कम। कुछ तो ऐसे हैं जिनके माध्यम से ऊपरी या दैवीय शक्तियां अच्छा काम करवाती हैं। सवाल यह उठता है कि आम व्यक्ति कैसे पहचानें कि उसकी दैवीय शक्तियां मदद कर रही है या उसकी पूजा-पाठ-प्रार्थना का असर हो रहा है? आओ जानते हैं इस बारे में 11 संक्षिप्त जानकारी।

**1. अच्छा चरित्र** : - शास्त्र कहते हैं कि दैवीय शक्तियां सिर्फ उसकी ही मदद करती है, जो दूसरों के दुख को समझता है, जो बुराइयों से दूर रहता है, जो नकारात्मक विचारों से दूर रहता है, जो नियमित अपने ईष्ट की आराधना करता है या जो पुण्य के काम में लगा हुआ है। यदि आप समझते हैं कि मैं ऐसा ही हूं तो निश चित ही दैवीय शक्तियां आपकी मदद कर रही हैं। आपको बस थोड़ा सा इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है कि आप अच्छे मार्ग पर हैं और आपको ऊपरी शक्तियां देख रही हैं।

**2. ब्रह्म मुहूर्त** : - विद्वान लोग कहते हैं कि यदि आपकी आंखें प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में अर्थात रात्रि 3 से 5 के बीच अचानक ही खुल जाती हैं तो आप समझ जाएं कि दैवीय शक्तियां आपके साथ हैं, क्योंकि यही वह समय होता है जबकि देवता लोग जाग्रत रहते हैं। यदि आप अपने बचपन से लेकर जवानी तक इस समय के बीच उठते रहे हैं तो समझ जाएं कि दैवीय शक्तियां आपके माध्यम से कुछ करवाना चाहती हैं या कि वे आपको एक अच्छी आत्मा समझकर यह संकेत दे रही हैं कि अब उठ जाओ। यह जीवन सोने के लिए नहीं है। आपको दुनिया में बहुत कुछ करना है। यह भी कहा जाता है कि सत्व गुण प्रधान लोग इस काल में स्वत: ही उठ जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार इस समय बहने वाली वायु को अमृततुल्य कहा गया है। यह अमृत वेला होती है। कहते हैं कि इस काल में दुनिया के मात्र 13 प्रतिशत लोगों की ही नींद खुलती है।

**3. सपने में देव दर्शन** : - यदि आपको बारंबार मंदिर या किसी देव स्थान के ही सपने आते रहते हैं। सपने में आप आसमान में ही उड़ते रहते हैं या सपने में आप देवी-देवताओं से वार्तालाप करते रहते हैं तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आप पर मेहरबान हैं।

**4. पूर्वाभास** : - यदि आपको आने वाली घटनाओं का पहले से ही ज्ञान हो जाता है या आपको पूर्वाभास हो जाता है तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियों की आप पर कृपा है।

**5. पारिवारिक प्रेम** : - आपकी पत्नी, बेटा, बेटी और आपके सभी परिजन आपकी आज्ञा का पालन कर रहे हैं, वे सभी आपसे प्यार करते हैं एवं आप भी उनसे प्यार कर रहे हैं तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आप से प्रसन्न हैं।

**6. भाग्य से भी तेज** : - जीवन में आपको अचानक से लाभ प्राप्त हो जाता है। आपके किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार की आपको बाधा उत्पन्न नहीं होती है और सभी कुछ आपको बहुत आसानी से मिल जाता है, तो आप समझ जाइए कि दैवीय शक्तियां आपकी मदद कर रही हैं।

**7. सुगंधित वातावरण का अहसास** : - यदि कभी-कभी आपको यह महसूस होता है कि मेरे आसपास कोई है या आपको बिना किसी कारण ही अपने आसपास सुगंध का अहसास हो तो समझ जाइए कि अलौकिक शक्तियां आपके आसपास आपकी मदद के लिए हैं।

**8. सुहानी हवा** : - आप पूजा कर रहे हैं और यदि आपको लगे कि अचानक सुहानी हवा का झोंका या प्रकाश पुंज आ गया और शरीर में सिहरन दौड़ने लगे। ऐसा तो पहले कभी हुआ नहीं तो समझिए कि देवी या देवता आप पर प्रसन्न हैं।

**9. ठंडी हवा का घेरा** : - भूमि पर रहते हुए भी कभी-कभी आपको यह अहसास हो कि मेरे आसपास बादल या ठंडी हवा का एक पुंज है जिसने मुझे घेरा हुआ है तो आप समझ जाइए कि अलौकिक या दैवीय शक्ति ने आपको घेर रखा है। ऐसा अक्सर बहुत ज्यादा पूजा-पाठ करने वाले व्यक्ति के साथ होता है।

**10. रोशनी का पुंज** : - अचानक ही आपको तेज रोशनी का पुंज दिखाई दे जिसकी कि आप कल्पना भी नहीं कर सकते या आपको अचानक ही कानों में मधुर संगीत सुनाई दे और आप आश्चर्य करें कि यहां आसपास तो कोई संगीत बज ही नहीं रहा फिर भी वह कानों में सीटी बजने की तरह सुनाई दे, तो आप समझ जाइए कि आप दैवीय शक्ति के सान्निध्य में हैं। ऐसा अक्सर उन लोगों के साथ होता है, जो निरंतर ही अपने ईष्टदेव का मंत्र जप कर रहे होते हैं।

**11. किसी की आवाज सुनाई देना** : - आप रात्रि में गहरी नींद में सो रहे हैं और आपको लगता है कि किसी ने मुझे आवाज दी और आप अचानक ही उठ जाते हैं, लेकिन फिर आपको आभास होता है कि यहां तो कोई नहीं है। लेकिन आवाज तो स्पष्ट थी। ऐसा आपके साथ कई बार हो जाता है तो आप समझ जाइए कि आप पर किसी अलौकिक शक्ति की मेहरबानी है। ऐसे में आप हनुमानजी का ध्यान करें और धन्यवाद दें।

## संगम विश्वविद्यालय का ग्यारवाह दीक्षांत समारोह संपन्न, गोल्ड मेडल पाकर आनंदित हुए विधार्थी, लड़कियों ने मारी बाजी

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

**भीलवाड़ा,** स्थानीय संगम विश्वविद्यालय में 25 मार्च को ग्यारवाह दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता श्री रामपाल सोनी, चेयरमैन, संगम समूह, मुख्य अतिथि प्रो. शैलेंद्र सराफ - निदेशक राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद, विशिष्ट अतिथि प्रोफेसर प्रदीप कुमार जोशी, पूर्व चेयरमैन यूपीएससी एवं चेयरमैन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी नई दिल्ली, प्रो पी के सिंह, डायरेक्टर आईआईएम त्रिचि रहे।विश्वविध्यालय के कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने बताया की ग्यारहवें दीक्षांत समारोह में कुल 41 पीएचडी की डिग्री, 27 टॉपर्स को गोल्ड मैडल, यू जी, पीजी डिग्री सहित कुल 661 छात्र छात्राओं को डिग्री प्रदान की गई।रजिस्ट्रार प्रोफेसर राजीव मेहता ने सर्वप्रथम सभी छात्र छात्राओं को सत्य, निष्ठा, ईमानदारी की शपथ दिलाई। कुलपति प्रोफेसर करुणेश सक्सेना ने विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा उन्होंने विश्वविद्यालय के शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक, शोध ,खेलकूद ,एनसीसी एनएसएस आदि उपलब्धियां के बारे में सभा को अवगत कराया। मुख्य अतिथि मुख्य अतिथि प्रो. शैलेंद्र सराफ - निदेशक राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान अहमदाबाद, मुख्य अतिथि प्रोफेसर प्रदीप कुमार जोशी, पूर्व चेयरमैन यूपीएससी ने सभी डिग्री लेने आए छात्र-छात्राओं को उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं दी। दीक्षांत भाषण में अतिथि प्रोफेसर प्रदीप कुमार जोशी, पूर्व चेयरमैन यूपीएससी एवं चेयरमैन नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने बदलते हुए युग में युवाओं को तैयार रहने के लिए कहा।नवीन आईटी तकनीक, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर अपने विचार रखे।अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री रामपाल सोनी ने सभी विद्यार्थियों को कहा कि विद्यार्थियों को तकनीक तथा समय के अनुसार अपने आप को परिवर्तित करना चाहिए तथा अपने मूल सिद्धांतों को हमेशा याद रखना चाहिए, उन्होंने सफल आयोजन के लिए संगम विश्वविद्यालय परिवार का सक्सेना का धन्यवाद ज्ञापित किया।इस अवसर पर आईडीपी, कॉम्पेंडियम, संगम उत्कर्ष, प्रतिबिंब, एलोक्वेंट आदि का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। प्रो वीसी प्रोफेसर मानस रंजन पाणिग्रही ने सभी अतिथियों, विद्यार्थियों का धन्यवाद ज्ञापित किया।इस अवसर पर संगम ग्रुप के वाइस चेयरमैन डॉ एसएन मोदानी, मैनेजिंग डायरेक्टर अनुराग सोनी, एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर वीके सोडाणी, आदि उपस्तीथ थे। परीक्षा नियंत्रक प्रोफेसर जग भूषण शर्मा ने परीक्षा एवं डिग्री के बारे में बताया कि इस बार डिग्री में विभिन्न सिक्योरिटी डिजिटल फीचर उपलब्ध कराए गए है।संचालन डा सीमा काबरा, डा अनुराग शर्मा द्वारा किया गया।जनसंपर्क अधिकारी डा राजकुमार जैन ने बताया की दीक्षांत कार्यक्रम से पूर्व अतिथियों को एनसीसी गार्ड दिया गया तथा प्रोसेशन के साथ कार्यक्रम स्थल तक लाया गया।समारोह के संयोजक प्रो विनेश अग्रवाल ने सफल आयोजन केलिए टीम सदस्यों का आभार जताया।गोल्ड मेडल में इस बार लड़कियों ने लड़कों से बाजी मारी है।

## युवा शक्ति के नाम एक विशेष पत्र

**प्रिय युवा साथियों,**

भारत के भविष्य, आपके नाम यह पत्र लिखते हुए मैं गौरव और आशा से भर जाता हूँ। भारत का संविधान हमें अधिकार तो देता ही है, साथ ही हमें कुछ मौलिक कर्तव्य भी सौंपता है। ये कर्तव्य केवल कानूनी दायित्व नहीं, बल्कि एक सभ्य समाज और सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हमारी नैतिक जिम्मेदारियाँ भी हैं।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और विकसित राष्ट्र की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि हम अपने मौलिक कर्तव्यों को समझें और उन्हें आत्मसात करें।

**1. राष्ट्र के प्रति निष्ठा और सम्मान**

भारत हमारी पहचान है। इसका सम्मान करना, संविधान का पालन करना और इसकी संप्रभुता की रक्षा करना हमारा पहला और सर्वोपरि कर्तव्य है।

**2. स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय धरोहर का सम्मान**

हमारी आज़ादी अनगिनत बलिदानों की

नींव पर खड़ी है। शहीदों और स्वतंत्रता सेनानियों के सपनों को साकार करना हमारा दायित्व है। हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत और धरोहरों की रक्षा करनी होगी।

**3. एकता और भाईचारे को बढ़ावा**

भारत विविधताओं से भरा देश है। जाति, धर्म और भाषा के भेदभाव से ऊपर उठकर हमें एकता और सौहार्द को बनाए रखना चाहिए।

**4. पर्यावरण की रक्षा और स्थायी विकास**

आज जलवायु परिवर्तन एक गंभीर संकट बन चुका है। वृक्षारोपण, जल संरक्षण और स्वच्छता को अपने जीवन का हिस्सा बनाना हर युवा का कर्तव्य है।

**5. वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवीनता को अपनाना**

हमारे राष्ट्र की प्रगति हमारे वैज्ञानिक सोच और नवाचार पर निर्भर करती है। तकनीकी कौशल और नवीन विचारों को अपनाकर भारत को आत्मनिर्भर बनाना हमारा दायित्व है।

**6. सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा और हिंसा से दूर रहना**

सरकारी और सार्वजनिक संपत्तियाँ राष्ट्र की धरोहर हैं। उनका संरक्षण करना और हिंसा के रास्ते से दूर रहना ही एक सच्चे नागरिक की पहचान है।

**7. कर्तव्यनिष्ठा और श्रम के प्रति सम्मान**

हर कार्य, चाहे छोटा हो या बड़ा, सम्माननीय है। परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। आत्मनिर्भरता और अनुशासन को अपनाकर हम देश की आर्थिक उन्नति में योगदान दे सकते हैं।

**8. शिक्षा और जागरूकता का प्रसार**

ज्ञान सबसे बड़ा शस्त्र है। युवाओं का कर्तव्य है कि वे शिक्षा प्राप्त करें और समाज में जागरूकता फैलाएँ, ताकि हर नागरिक अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ सके।

प्रिय युवा साथियों, भारत को विश्वगुरु बनाने की दिशा में आपकी भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। केवल अधिकारों की माँग करने से राष्ट्र आगे नहीं बढ़ता, जब तक कि हम अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाएँ। यही समय है, जब हम अपनी ऊर्जा को सकारात्मक दिशा में लगाएँ और एक सशक्त, स्वच्छ, विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में योगदान दें। आपके साहस, ज्ञान और कर्मठता में ही भारत का उज्ज्वल भविष्य है।

**आपका साथी,**
**डॉ. अंकुर शरण**
**(परिवर्तन के लिए समर्पित)**

# दिल्ली के एक लाख करोड़ रुपए के बजट का कोई सिद्धांत नहीं है, भाजपा सरकार ने पूरा बजट काल्पनिक आंकड़ों पर बनाया है- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** दिल्ली सरकार के बजट ने मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के उस झूठ का पर्दाफाश कर दिया है, जिसमें उन्होंने कहा था कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने सरकारी खजाना खाली कर दिया है। मंगलवार को आए बजट के आंकड़ों से साफ हो गया है कि ''आप'' सरकार 2965 करोड़ रुपए नई सरकार के लिए छोड़कर गई है। सीएम रेखा गुप्ता के झूठा को दिल्लीवालों के सामने रखते हुए ''आप'' के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली के एक लाख करोड़ रुपए के बजट का कोई सिद्धांत नहीं है। इसमें भाजपा सरकार की कोई गंभीरता नहीं दिख रही है। सरकार ने पूरा बजट एक काल्पनिक आंकड़ों पर बनाया है। भाजपा को बताना चाहिए कि क्या वह एक लाख करोड़ रुपए जुटाने के लिए दिल्ली के व्यापारियों पर टैक्स की दरें बढ़ाने जा रही है?

आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली बजट के अंदर एक बात तथ्यात्मक रूप से स्पष्ट हो गई है कि भाजपा की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता झूठ बोलती हैं। जब रेखा गुप्ता से पूछा गया कि महिलाओं को 2500 रुपए प्रतिमाह कब से देंगी तो उन्होंने कहा कि सरकारी खजाना खाली है। रेखा गुप्ता ने कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार सरकारी खजाना खाली करके गई है। मंगलवार को विधानसभा में बजट पेश करने के दौरान सीएम रेखा गुप्ता ने खुद अपने झूठ का पर्दाफाश कर दिया।

सौरभ भारद्वाज ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए कहा कि दिल्ली सरकार के सरकारी आंकड़ों में कहा गया है कि इस सरकार के बजट का ओपनिंग वैलेंस 2965 करोड़ रुपए है। ओपनिंग वैलेंस का मतलब होता है कि पुरानी सरकार (आम आदमी पार्टी की सरकार) कितना पैसा नई सरकार के लिए छोड़कर गई है। आम आदमी पार्टी की सरकार 2965 करोड़ रुपए भाजपा की नई सरकार के लिए छोड़कर गई है।

उन्होंने कहा कि मंगलवार को आया दिल्ली सरकार का बजट साफ दिखाता है कि इस बजट का कोई सिद्धांत नहीं है। एक लाख करोड़ रुपए के बजट ने दिखा दिया कि सरकार के अंदर कोई गंभीरता नहीं है कि वह सच्चाई के आधार पर बजट बनाए। भाजपा की दिल्ली सरकार ने पूरा का पूरा बजट एक काल्पनिक आंकड़ों पर बना दिया है। भाजपा ने बोल दिया कि पिछली बार सरकार ने 76 हजार करोड़ रुपए पैसा खर्च कर सकते हैं और 2025-26 में एक लाख करोड़ रुपए खर्च करेंगे।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि दिल्ली सरकार के पास 1 लाख करोड़ रुपए कहां से आएगा, यह भाजपा ने नहीं बताया। क्या यह पैसा व्यापारियों से आएगा? क्या अब भाजपा की सरकार एक लाख करोड़ रुपए जुटाने के लिए व्यापारियों के उपर टैक्स की दरें बढ़ाई जाएंगी? क्या उन व्यापारियों की गर्दन दबोची जाएगी, जो कह रहे थे कि वैश्य समाज की सरकार बनी है। सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि एक लाख करोड़ रुपए कहां से आएंगे? भाजपा को बताना चाहिए कि जब दिल्ली सरकार का बजट 76 हजार करोड़ रुपए से बढ़कर 1 लाख करोड़ बनेगा, तो वह पैसा व्यापारियों की गर्दन काट कर बनेगा या फिर कहीं और से यह पैसा आएगा? भाजपा ने यह बात कही नहीं है, लेकिन स्पष्ट है कि व्यापारियों के गर्दन पर ही हाथ रखा जाएगा।

सौरभ भारद्वाज ने आगे कहा कि आम आदमी पार्टी की सरकार ने जब 10 हजार करोड़ रुपए नेशनल स्मॉल सेविंग फंड से उधार लेने का प्रस्ताव दिया तो दिल्ली सरकार के वित्त सचिव एसी वर्मा ने अपनी नोटिंग में कहा था कि सरकार नेशनल स्मॉल सेविंग फंड से उधार नहीं ले सकते हैं। इससे बड़ी विपदा आ जाएगी। इससे आसमान गिर जाएगा। एसी वर्मा ही आज भी दिल्ली सरकार के वित्त सचिव हैं। एसी वर्मा पर आम आदमी पार्टी की सरकार के तमाम काम रोकने के आरोप भी लगे थे। आज जब वित्त सचिव एससी वर्मा दिल्ली सरकार का बजट बना रहे हैं तो वह कह रहे हैं कि 10 हजार करोड़ नहीं, बल्कि 15 हजार करोड़ रुपए कर्ज लेंगे।

## क्या है मुफ्त बिजली योजना? दिल्ली के 2 लाख से ज्यादा लोगों को मिलेगा लाभ; ऐसे उठा सकते हैं फायदा

केंद्र सरकार ने फरवरी 2024 में PM Surya Ghar Muft Bijli Yojana शुरू की थी। इस महत्वाकांक्षी योजना का उद्देश्य छत पर सौर पैनल लगाने को बढ़ावा देकर लाखों लोगों को सस्ती बिजली देना है। साथ ही इससे गर्मी में बढ़ती बिजली की मांग को पूरा करने में मदद मिलेगी। आइए जानते हैं कि पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली स्कीम क्या है?

**नईदिल्ली।** दिल्ली में बढ़ रही बिजली की मांग को पूरा करना बड़ी चुनौती है। इसके लिए सौर ऊर्जा बेहतर विकल्प है। बजट में इसे बढ़ावा देने की घोषणा की गई है। इसके लिए केंद्र सरकार की पीएम सूर्य घर योजना (PM Surya Ghar Muft Bijli Yojana) लागू किया जाएगा। इसके साथ ही दिल्ली सरकार "पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना - राज्य टाप अप" नामक एक नई योजना शुरू करेगी।

ऊर्जा मंत्री आशीष सूद का कहना है कि बजट में दिल्ली को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने और स्वच्छ भविष्य की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। प्रत्येक नागरिक को 24 घंटे निर्बाध बिजली उपलब्ध कराना है।

**100 करोड़ रुपये से शुरू होगा पायलट प्रोजेक्ट**

बिजली से संबंधित विभिन्न योजनाओं और परियोजनाओं के लिए ऊर्जा विभाग को 3,847 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है। पिछली आप सरकार ने 2024-25 के बजट में विभाग के लिए 3,353 करोड़ रुपये आवंटित किए थे।

बजट में बिजली की बढ़ती मांग को पूरा करने और राजधानी के आर्थिक विकास को गति देने के लिए स्वच्छ या नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से घरेलू बिजली उत्पादन बढ़ाने पर बल दिया गया है। दिल्ली में "पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना" को लागू करने के लिए केंद्र सरकार के नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय के साथ समझौता करने की प्रक्रिया चल रही है।"

**पीएम सूर्य घर योजना में कितनी मिलेगी सब्सिडी?**

इस योजना के अंतर्गत दिल्ली के आवासीय उपभोक्ताओं को 78,000 रुपये तक की सब्सिडी प्रदान की जाएगी। इस पहल को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए दिल्ली सरकार "पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना - राज्य टाप अप" नामक एक नई योजना प्रस्तावित की गई है। इसके लिए 50 करोड़ रुपये का बजट आवंटित किया गया है।

## आतिशी ने भ्रष्ट तरीके से जीता चुनाव? दिल्ली हाईकोर्ट ने जारी किया नोटिस

दिल्ली उच्च न्यायालय ने आप नेता और पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी को कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र से उनकी चुनावी जीत को चुनौती देने वाली याचिका पर नोटिस जारी किया है। याचिका में उन पर भ्रष्ट आचरण का आरोप लगाया गया है। अदालत ने चुनाव आयोग रिटर्निंग अधिकारी और पुलिस को कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र के चुनावों के सभी रिकॉर्ड सुरक्षित रखने का निर्देश दिया है। सुनवाई 30 जुलाई को होगी।

**नई दिल्ली।** दिल्ली उच्च न्यायालय ने बुधवार को आप नेता और पूर्व मुख्यमंत्री आतिशी को कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र से उनकी चुनावी जीत को चुनौती देने वाली याचिका पर नोटिस जारी किया, जिसमें उन पर भ्रष्ट आचरण का आरोप लगाया गया है। न्यायमूर्ति ज्योति सिंह ने भारत के चुनाव आयोग (ईसीआई), दिल्ली पुलिस और कालकाजी विधानसभा क्षेत्र के रिटर्निंग ऑफिसर को भी नोटिस जारी किया।

अदालत ने प्रतिवादियों से याचिका पर अपने जवाब दाखिल करने को कहा और सुनवाई 30 जुलाई के लिए टाल दी। हालांकि, ईसीआई के वकील और रिटर्निंग ऑफिसर ने कहा कि कानून के मुताबिक उन्हें चुनाव याचिका में पक्ष नहीं बनाया जा सकता था। अदालत ने कहा कि उनके लिए अपने जवाबों में अपनी आपत्तियों का उल्लेख करना खुला होगा।

**चुनावों के सभी रिकॉर्ड हों सुरक्षित-हाईकोर्ट**

इस बीच, अदालत ने चुनाव आयोग, रिटर्निंग अधिकारी और पुलिस को कालकाजी निर्वाचन क्षेत्र के चुनावों के सभी रिकॉर्ड सुरक्षित रखने का निर्देश दिया और कहा कि वे भविष्य में अपने आदेश में संशोधन की मांग कर सकते हैं। कालकाजी में रहने वाले याचिकाकर्ता कमलजीत सिंह दुग्गल और आयुष राणा ने आतिशी की चुनाव जीत को चुनौती दी है और दावा किया है कि वह और उनके पोलिंग एजेंट भ्रष्ट आचरण में लिप्त थे।

## स्पीकर से अनुरोध, अगले दो दिनों तक सदन में सिर्फ बजट पर चर्चा की जाए और जरूर हो तो सत्र को एक दिन के लिए बढ़ा दिया जाए- आतिशी

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली।** आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने स्पीकर द्वारा दिल्ली बजट पर चर्चा के लिए बहुत कम समय आवंटित करने पर सवाल उठाया है। उन्होंने आपत्ति जताते हुए दिल्ली विधानसभा के स्पीकर विजेंद्र गुप्ता को चिट्ठी लिखी है और पूछा है कि आखिर भाजपा की सरकार दिल्ली की जनता से क्या छिपाना चाहती है, जो वह वार्षिक बजट पर विस्तृत चर्चा से भाग रही है? उन्होंने पूछा है कि राज्य के बजट पर चर्चा लिए मात्र एक घंटा क्यों आवंटित किया गया और सरकार सदन में आर्थिक सर्वेक्षण पेश करने से क्यों बच रही है?

नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने दिल्ली बजट 2025-26 की विश्वसनीयता पर भी सवाल उठाया और पूछा कि क्या यह बजट काल्पनिक रेवेन्यू अनुमानों पर आधारित है और यही कारण है कि सरकार बजट पर विस्तृत चर्चा नहीं कराना चाहती है। उन्होंने प्रश्न किया कहा कि क्या 70 विधायकों वाली विधानसभा में वार्षिक बजट पर चर्चा के लिए सिर्फ एक घंटा खर्च किया जाएगा और क्या इसे पांच अन्य एजेंडा आइटम्स के बीच दबा दिया जाएगा? मेरा स्पीकर से अनुरोध है कि अगले दो दिनों तक सदन में सिर्फ बजट पर चर्चा की जाए और जरूर हो तो सत्र को एक दिन के लिए बढ़ा दिया जाए।

स्पीकर को लिखे पत्र में आतिशी ने कहा है कि मंगलवार को दिल्ली विधानसभा के समक्ष मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता द्वारा वार्षिक बजट अनुमान 2025-26 प्रस्तुत किया गया। आप (स्पीकर) एक अनुभवी विधायक और उससे भी अधिक अनुभवी जनप्रतिनिधि हैं। इसलिए आप अच्छे से जानते हैं कि वार्षिक बजट अनुमान किसी भी विधानसभा के समक्ष प्रस्तुत होने वाला सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज होता है। इसे प्रस्तुत करने के बाद कई दिनों तक इस पर चर्चा होती है। सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों के विधायक अपने विचार रखते हैं और वित्त मंत्री उन सभी मुद्दों का जवाब देते हैं, जिसके बाद बजट विधानसभा द्वारा पारित किया जाता है। यह चर्चा और बहस न केवल विधायकों के लिए महत्वपूर्ण होती है, बल्कि दिल्ली के मतदाता और देश भर के लोग इसे बड़े ध्यान से देखते हैं।

आतिशी ने लिखा है कि हमें अपेक्षा थी कि वर्तमान सत्र के शेष तीन दिन मुख्य रूप से बजट पर चर्चा में खर्च किए जाएंगे। लेकिन मंगलवार को देर रात मुझे बुधवार के लिए कार्यसूची प्राप्त हुई, जिसे देखकर मैं स्तब्ध रह गई कि कार्यसूची में इतने सारे विषय शामिल हैं कि बजट पर चर्चा के लिए मुश्किल से एक घंटा ही बच पाएगा।

उन्होंने आगे लिखा है कि चूंकि, सत्र का समय सुबह 11 बजे से शाम पांच बजे तक है, जिसमें एक घंटा नियम 280 के तहत, एक घंटा प्रश्नों के लिए और एक घंटा दोपहर के भोजन के लिए जाता है, तो केवल तीन घंटे ही शेष बचते हैं। इन तीन घंटों में बजट पर चर्चा सीएजी रिपोर्ट, नियम 55 के तहत जल संकट और जलभराव पर संक्षिप्त चर्चा, नियम 107 के तहत एक प्रस्ताव, विधानसभा समितियों की दो रिपोर्टों को अपनाना और मुख्यमंत्री द्वारा वित्तीय दस्तावेज प्रस्तुत करना जैसे कार्य शामिल हैं।

आतिशी ने सवाल किया है कि क्या इस तरह से बजट पर विस्तृत चर्चा हो सकती है? क्या 70 विधायकों वाली विधानसभा वार्षिक बजट पर केवल एक घंटे चर्चा करेगी? क्या इसे पांच अन्य एजेंडा आइटम्स के बीच दबा दिया जाएगा? ऐसा प्रतीत होता है मानो सरकार बजट पर विस्तृत चर्चा से बचना चाहती हो। यह बेहद चिंताजनक है। सबसे पहले, सरकार ने सभी संसदीय परंपराओं के विपरीत जाकर बजट से पहले आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत नहीं किया और अब बजट पर चर्चा को इतने सारे मुद्दों के बीच दबा दिया गया है। यह भी नहीं बताया गया कि बजट पर चर्चा के लिए कितना समय दिया जाएगा या सत्तारूढ़ दल और विपक्ष को कितना समय मिलेगा।

उन्होंने चिंता जताते हुए कहा है कि ऐसा लगने लगा है कि सरकार कुछ छिपाना चाहती है। इकोनॉमिक सर्वे में ऐसा कौन सा आर्थिक डेटा और विश्लेषण है, जो सरकार सामने नहीं लाना चाहती? क्या यह बजट 2025-26 काल्पनिक राजस्व अनुमानों और आर्थिक रुझानों पर आधारित है? क्या यही कारण है कि सरकार न तो आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत करना चाहती है और ना ही बजट पर ठोस चर्चा करवाना चाहती है?

आतिशी ने स्पीकर विजेंद्र गुप्ता से कहा है कि विधानसभा अध्यक्ष के रूप में संसदीय प्रक्रियाओं और परंपराओं की पवित्रता सुनिश्चित करना आपका दायित्व है। मेरा आपसे अनुरोध है कि अगले दो दिन केवल बजट पर चर्चा के लिए समर्पित किए जाएं। शेष चर्चा और कार्य 28 मार्च को रखे जा सकते हैं या यदि आवश्यक हो तो सत्र को एक दिन के लिए बढ़ाया जा सकता है।

## मनोज बाजपेयी ने टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क के साथ हर चाय को बनाया 'अपनी चाय'

मुख्य संवाददाता

**राष्ट्रीय।** : टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स के प्रमुख ब्रांड टाटा सोलफुल ने मिलेट-बेस्ड स्नैक्स और पैकेज्ड फूड्स के क्षेत्र में अपनी खास पहचान बनाई है। अब यह ब्रांड भारत की पारंपरिक चाय पीने की आदतों में बदलाव लाने के लिए टाटा सोलफुल नो मैदा (बिना मैदे वाला) रस्क लेकर आया है।

इस लॉन्च को प्रचारित करने के लिए टाटा सोलफुल ने मशहूर अभिनेता और ब्रांड एंबेसडर मनोज बाजपेयी को शामिल किया है। उनका नया कैंपेन 'हर चाय को अपनी चाय बनाए' टैगलाइन के साथ भारतीयों की विशेष रूप से चाय पीने की ललक को एक प्रकार से बढ़ा बना दिया है।

उल्लेखनीय है रस्क भारतीय चाय के साथ लंबे समय से जुड़ा हुआ स्नेक्स है, लेकिन अधिकतर पारंपरिक रस्क मैदा से बने होते हैं। टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क पूरी तरह से मैदा-मुक्त है, जो इसे सेहतमंद विकल्प बनाता है। यह दो स्वादिष्ट फ्लेवर्स – एरोमेटिक इलायची और रिच बटर में उपलब्ध है। इसकी विशेषता यह है कि यह चाय में डुबाने के बाद भी कुरकुरा बना रहता है।

इस कैंपेन का मुख्य आकर्षण एक अनोखी फिल्म है, जिसमें मनोज बाजपेयी एक औपचारिक चाय पार्टी में स्वादहीन चाय के साथ टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क खाते हैं और माहौल को एक मज़ेदार चाय टाइम में बदल देते हैं। फिल्म भारतीयों के कड़क चाय प्रेम और पारंपरिक अंग्रेज़ी चाय संस्कृति के बीच के अंतर को दिलचस्प तरीके से दिखाती है। मनोज बाजपेयी की सहज और देसी छवि इस ब्रांड की उच्च गुणवत्ता और भारतीयता को बेहतरीन रूप से दर्शाती है।

लॉन्च पर बोलते हुए, टाटा सोलफुल की सीएमओ, रसिका प्रशांत ने कहा: "चाय और रस्क भारतीय घरों का एक अहम हिस्सा हैं, लेकिन अधिकतर रस्क मैदा से बने होते हैं, जो रोज़मर्रा की सेहत के लिए सही नहीं माने जाते। टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क के ज़रिए हम उपभोक्ताओं को एक बेहतर और सेहतमंद विकल्प दे रहे हैं, जिसमें स्वाद और क्रंच का पूरा आनंद मिलेगा। इस कैंपेन के ज़रिए हम हास्य और सहजता से उपभोक्ताओं तक यह संदेश पहुंचा रहे हैं कि टाटा का रस्क चुनकर वे अपनी हर चाय को और खास बना सकते हैं। मनोज बाजपेयी की गर्मजोशी और विश्वसनीयता हमें पूरे भारत में उपभोक्ताओं से जुड़ने में मदद करेगी। यह सिर्फ एक प्रोडक्ट लॉन्च नहीं, बल्कि भारतीयों के चाय पीने की परंपरा को नया रूप देने की कोशिश है।"

इस कैंपेन को द वॉम्ब क्रिएटिव एजेंसी ने कॉन्सेप्ट किया है, जिसमें डिजिटल शॉर्ट फिल्मों की एक सीरीज़ भी शामिल है। इन फिल्मों में मनोज बाजपेयी टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क के अनोखे फायदों – नो मैदा, बेहतरीन स्वाद और जबरदस्त क्रंच – को दर्शाते हैं। द वॉम्ब के सीसीओ, सुयश खाब्या ने कहा: "कौन नहीं चाहेगा कि वह बकिंघम पैलेस में क्वीन के साथ चाय पिए? लेकिन उनकी चाय फीकी होती है! इसी विचार से हमें यह अनोखा कॉन्सेप्ट मिला, जिसमें मनोज बाजपेयी टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क निकालते हैं और अपनी चाय का असली मज़ा लेते हैं। यह सेटिंग अलग है, हास्य सूक्ष्म है और ब्रांड का इंटेग्रेशन बिल्कुल सटीक है। यह साधारण होने के बावजूद अनदेखा नहीं किया जा सकता।"

इस कैंपेन पर बात करते हुए, अभिनेता मनोज बाजपेयी ने कहा: "मैं हमेशा मानता हूँ कि एक अच्छी चाय के साथ सही साथी होना ज़रूरी है। टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क वही परफेक्ट क्रंच और स्वाद देता है, बिना मैदा के समझौते के। यह प्रोडक्ट चाय पीने की परंपरा को नए अंदाज़ में पेश करता है और इसे और भी खास बनाता है। इस कैंपेन का हिस्सा बनना मेरे लिए बेहद रोमांचक है, जिसमें हास्य, परंपरा और इनोवेशन का बेहतरीन मेल है। टाटा सोलफुल नो मैदा रस्क के साथ हर चाय वाकई में अपनी चाय बन जाती है।"

फिलहाल, यह प्रोडक्ट उत्तर, पूर्व और मध्य भारत में लॉन्च किया गया है और जल्द ही इसे अन्य बाजारों में भी लाया जाएगा। यह कैंपेन टीवी, ओटीटी प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, इन्फ्लुएंसर पार्टनरशिप और ऑन-ग्राउंड एक्टिवेशन के ज़रिए प्रमोट किया जाएगा। इस बहु-चैनल रणनीति का उद्देश्य उन उपभोक्ताओं तक पहुँचना है जो स्वाद के साथ सेहत का भी ख्याल रखते हैं।

## 27 वर्षों के संघर्ष ने किया कमाल, सेपक टकराव वर्ल्ड कप भारत के नाम:पेरिका सुरेश

स्वतंत्र सिंह भुल्लर

**नई दिल्ली।** पाटलिपुत्रा स्पोर्ट्स कंपलेक्स पटना में आयोजित पांच दिवसीय सेपक टकराव वर्ल्ड कप में भारत ने 45 देश के प्रतिभागियों को शिकस्त देते हुए वर्ल्ड कप भारत के नाम कर इतिहास रस दिया है। सेपक टकराव वर्ल्ड कप में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने वाले तथा तेलंगाना प्रदेश सेपक टकराव फेडरेशन के अध्यक्ष पेरिका सुरेश ने सेपक टकराव फेडरेशन ऑफ इंडिया, भारतीय खिलाड़ियों, कोच एवं मैनेजर सभी का आभार व्यक्त करते हुए उन्हें विश्व कप जीतने की बहुत-बहुत बधाई दी।

उन्होंने समस्त देशवासियों को इस जीत की बधाई देते हुए कहा कि हमारे खिलाड़ियों ने इस रोमांचक मुकाबले में अपनी योग्यता क्षमता एवं खेल कौशल को दिखाकर विश्व के सामने एक नए मापदंड रखा है। उन्होंने कहा कि भारत के इस जीत ने जहां देश का मान बढ़ाया है, वही नए खिलाड़ियों को यह जीत ऊर्जा प्रदान करेगा। भारत ने वर्ष 2017 में गचिबौली स्टेडियम हैदराबाद में प्रथम वर्ल्ड कप की मेजबानी की थी। भारत के खिलाड़ियों के 27 वर्षों के संघर्ष एवं वर्ल्ड कप जीतने का जज्बा रंग लाया है तथा विश्व पटेल पर भारत सेपक टकराव वर्ल्ड कप विजेता बनकर विश्व गुरु बनने का काम किया है।

## 10वीं की पढ़ाई छोड़ जल्दी पैसे कमाने के पीछे भागा, दोस्त की दुकान से लिया आइडिया; फिर करने लगा चोरियां

राजधानी दिल्ली के आरके पुरम में मदर डेयरी से चोरी का अनोखा मामला सामने आया है। चोरों ने पहले दुकान लीज पर लेने का झांसा दिया फिर दो दिन तक बिक्री का जायजा लिया और मौका पाकर 70 हजार रुपये नकद और चार लीटर देशी घी चुराकर फरार हो गए। पुलिस ने 24 घंटे के भीतर मास्टरमाइंड समेत तीनों आरोपितों को बागपत से गिरफ्तार कर लिया है।

**दक्षिणी दिल्ली।** आरके पुरम थाना क्षेत्र में चोरी का अलग ही मामला सामने आया है। चोरों ने पहले मदर डेयरी संचालक को दुकान लीज पर लेने का झांसा दिया। फिर दो दिन का बिक्री और हिसाब-किताब देखते रहे। मौका मिलते ही डेयरी से 70 हजार रुपये नकद और चार लीटर देशी घी लेकर चंपत हो गए।

आरके पुरम पुलिस ने शिकायत मिलने के 24 घंटे के भीतर मास्टर माइंड समेत तीनों आरोपितों को बागपत से गिरफ्तार कर लिया है। उनकी निशानदेही पर चोरी की रकम में से 37 हजार रुपये नकद और देशी घी बरामद की।

**क्या है पूरा मामला?**

दक्षिणी पश्चिम जिले की अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त आकांक्षा ने मामले की जानकारी देते हुए बताया कि 23 मार्च को पीड़ित हर्ष यादव ने ऑनलाइन एफआईआर आरके पुरम थाने में दर्ज कराई। शिकायत के मुताबिक, 21 मार्च को तीन व्यक्तियों ने उनसे संपर्क किया। आरके पुरम, सेक्टर-8 में उनकी मदर डेयरी बूथ को लीज पर लेने की पेशकश की।

**परिचित व्यक्ति को भेजे थे पैसे**

डेयरी में वस्तुओं की दैनिक बिक्री की जांच के बहाने में दो दिन दुकान में आए और 23 मार्च को 70 हजार रुपये नकद और 4 लीटर देसी घी लेकर भाग गए। टीम ने जांच शुरू की। आसपास से पूछताछ में एक दुकानदार ने बताया कि आरोपितों में से एक ने उनके मोबाइल फोन के माध्यम से किसी परिचित व्यक्ति को कुछ राशि भेजी थी।

## एकता कपूर के साथ मनाया गया सैफी फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड के चेयरमैन फैज सैफी का जन्मदिन

मुख्य संवाददाता

राजनीतिक राजधानी में एक शानदार शाम देखने को मिली, जब सैफी फिल्म्स प्राइवेट लिमिटेड के दूरदर्शी चेयरमैन फैज सैफी ने अपने जन्मदिन को भव्य अंदाज में मनाया।

यह शाम ग्लैमर, पावर और मनोरंजन का एक बेहतरीन मिश्रण थी, जिसमें अलग-अलग इंडस्ट्री की नामी हस्तियां, मसलन- गिरिराज सिंह, राज भूषण चौधरी, नितिन गडकरी, एकता कपूर, दिव्यांका त्रिपाठी, मुरली मनोहर जोशी जैसी कई अन्य ने फैज सैफी को अपनी हार्दिक शुभकामनाएं देने के लिए एक साथ आईं। इस अवसर पर बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता, निर्देशक, राजनेता और संगीतकार मौजूद थे, जिन्होंने इस उत्सव की शोभा बढ़ाई।

फैज सैफी ने कहा, 'मैं अपने दोस्तों, सहकर्मियों और शुभचिंतकों का आभारी हूं, जिन्होंने मेरा साथ दिया। यह उत्सव सिर्फ मेरे बारे में नहीं है, बल्कि सिनेमा की दुनिया और उससे परे हम सभी ने जो अविश्वसनीय यात्रा साझा की है, उसके बारे में है।'

# समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है साहित्य (महला की कलम से)

कहते हैं कि साहित्य ही समाज का असली दर्पण होता है। समाज में जो भी घटित होता है, मतलब कि समाज में जो भी गतिविधियां होतीं हैं, लेखक उनसे कहीं न कहीं प्रभावित होता है और वह अक्सर उन्हीं चीजों, घटनाओं, गतिविधियों को अपने साहित्य में अपनी कलम के माध्यम से काग़ज़ के कैनवास पर उतारता है और समाज को अपने विचारों के माध्यम से दर्शाता है। यह साहित्य ही होता है जो किसी भी समाज की उन्नति और विकास की आधारशिला रखता है। दूसरे शब्दों में कहें तो एक साहित्यकार समाज का अभिन अंग होता है और वह साहित्य की रचना भी समाज के माध्यम से ही करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह साहित्यिक रचना ही होती है जो समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाती है।कुल मिलाकर यह बात कही जा सकती है कि साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। हाल ही में प्रख्यात साहित्यकार विनोद कुमार शुक्ल को वर्ष 2024 के लिए 59 वां ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। श्री शुक्ल को हिंदी साहित्य में उनके अद्वितीय योगदान, सृजनात्मकता और विशिष्ट लेखन शैली के लिए भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की गई है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वे हिंदी के 12वें साहित्यकार हैं, जिन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। श्री शुक्ल छत्तीसगढ़ के ऐसे पहले लेखक हैं, जिन्हें यह सम्मान मिलने जा रहा है। विकीपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार उनका जन्म 1 जनवरी 1937 को भारत के राज्य छत्तीसगढ़ के राजनंदगांव में हुआ और आज वे 88 वर्ष के हैं। उन्होंने प्राध्यापन को रोज़गार के रूप में चुनकर पूरा ध्यान साहित्य सृजन में लगाया। गौरतलब है कि श्री शुक्ल ने उपन्यास एवं कविता विधाओं में खूब साहित्य सृजन किया है। वे स्वयं कहते हैं कि ' मैं बच्चों के लिए छोटा-छोटा लिखता हूं और मुझे आसान सा आधार मिल गया है कि मैं इस तरह के छोटे-छोटे काम करता रहूं।बच्चों के लिए लिखना मुझे बड़ा अच्छा लगता है।' कहना ग़लत नहीं होगा कि उनके लेखन में जहां एक ओर सरलता का प्रादुर्भाव है, तो वहीं पर दूसरी ओर उनकी लेखन शैली संवेदनशील होने के साथ ही बहुत ही अद्वितीय भी है।उनकी भाषिक बनावट अद्भुत है तथा उन्होंने समकालीन हिंदी कविता को अपने मौलिक कृतित्व से सम्पन्नतर बनाया है और इसके लिए वे पूरे भारतीय काव्य परिदृश्य में अलग से पहचाने जाते हैं। मुख्य रूप से वे हिंदी साहित्य में अपने प्रयोगधर्मी लेखन के लिये प्रसिद्ध हैं। उन्हें 'जादुई-यथार्थ' के आसपास की शैली के रूप में महसूस किया जा सकता है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि उनका पहला कविता संग्रह 1971 में लगभग जय हिन्द नाम से प्रकाशित हुआ। उनके अन्य कविता संग्रहों में क्रमशः 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह' (वर्ष 1981), 'सब कुछ होना बचा रहेगा' (वर्ष 1992), 'अतिरिक्त नहीं' (वर्ष 2000), 'कविता से लंबी कविता' (वर्ष 2001), 'आकाश धरती को खटखटाता है' (वर्ष 2006), 'पचास कविताएँ' (वर्ष 2011), 'कभी के बाद अभी' (वर्ष 2012), 'कवि ने कहा' तथा 'चुनी हुई कविताएँ' (वर्ष 2012) व 'प्रतिनिधि कविताएँ' (वर्ष 2013) शामिल हैं। उनके उपन्यासों में क्रमशः 'नौकर की कमीज' (1979), 'खिलेगा तो देखेंगे' (वर्ष 1996), 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' (वर्ष 1997), 'हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़' (वर्ष 2011), 'यासि रासा त' (वर्ष 2017) तथा 'एक चुप्पी जगह' (वर्ष 2018) शामिल हैं। उनके कहानी संग्रहों में क्रमशः 'पेड़ पर कमरा' (वर्ष 1988), 'महाविद्यालय' (वर्ष 1996), 'एक कहानी' (वर्ष 2021) तथा 'घोड़ा और अन्य कहानियाँ' (वर्ष 2021) शामिल हैं। इतना ही नहीं, उनकी कृतियों के अनुवाद भी हुए हैं। गौरतलब है कि श्री शुक्ल के उपन्यास 'नौकर की कमीज' पर प्रसिद्ध फिल्मकार मणि कौल ने वर्ष 1999 में इसी नाम से एक फिल्म भी बनाई थी। पाठकों को बताता चलूं कि श्री शुक्ल को इससे पहले साहित्य अकादमी पुरस्कार के अलावा भी कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं। पुरस्कारों में क्रमशः गजानन माधव मुक्तिबोध फेलोशिप ' (म.प्र. शासन), रज़ा पुरस्कार ' (मध्यप्रदेश कला परिषद), शिखर सम्मान (म.प्र. शासन), राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान (म.प्र. शासन), दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान' (मोदी फाउंडेशन), साहित्य अकादमी पुरस्कार (भारत सरकार), हिन्दी गौरव सम्मान (उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, उ.प्र. शासन), मातृभूमि पुरस्कार, वर्ष 2020 (अंग्रेजी कहानी संग्रह 'ब्ल्यू इज लाइक ब्ल्यू' के लिए), साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सर्वोच्च सम्मान 'महत्तर सदस्य' सम्मान (वर्ष 2021) शामिल हैं। बहरहाल, भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किए जाने की घोषणा की है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि ज्ञानपीठ पुरस्कार भारतीय ज्ञानपीठ न्यास द्वारा भारतीय साहित्य के लिए दिया जाने वाला सर्वोच्च पुरस्कार है और भारत का कोई भी नागरिक जो भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं में से किसी भाषा में उत्कृष्ट लेखन कार्य करता हो, इस पुरस्कार के योग्य है।इस पुरस्कार में ग्यारह लाख रुपये की धनराशि, प्रशस्तिपत्र और वाग्देवी की कांस्य प्रतिमा दी जाती है। गौरतलब है कि वर्ष 1961 में स्थापित प्रथम ज्ञानपीठ पुरस्कार वर्ष 1965 में मलयालम लेखक जी. शंकर कुरुप को प्रदान किया गया था। यह पुरस्कार उन्हें उनके काव्य संग्रह 'ओडक्कुझल' के लिए प्रदान किया गया था। जिस समय शंकर कुरुप को यह पुरस्कार प्रदान किया गया था, उस समय पुरस्कार की धनराशि एक लाख रुपए थी तथा 1982 तक यह पुरस्कार लेखक की एकल कृति के लिये दिया जाता था, लेकिन इसके बाद से यह लेखक के भारतीय साहित्य में संपूर्ण योगदान के लिये दिया जाने लगा। हाल फिलहाल पाठकों को बताता चलूं कि विनोद कुमार शुक्ल को ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजे जाने की बात पर उन्होंने कहा है कि 'ज्ञानपीठ पुरस्कार से जिम्मेदारी का अहसास होता है।' उन्होंने कहा है कि 'मैंने बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ सुना, बहुत कुछ महसूस किया, लेकिन उसका केवल एक अंश ही लिख सका।' पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि वे भारत के सर्वोच्च साहित्यिक सम्मान ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त करने वाले राज्य छत्तीसगढ़ के पहले लेखक भी हैं। साहित्य के प्रति उनका कितना लगाव है, यह इस बात से स्पष्ट होता है कि उन्होंने हाल ही में ज्ञानपीठ पुरस्कार जीतने के बाद यह बात कही है कि 'मैं अपनी जिंदगी का पीछा अपने लेखन से करना चाहता हूं।' कहना ग़लत नहीं होगा कि शुक्ल जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलना एक ओर जहां पर हिंदी साहित्य जगत के लिए गौरव का विषय है वहीं दूसरी ओर यह उनकी असाधारण रचनात्मकता, मौलिक लेखन शैली और साहित्य के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता,रूचि को दर्शाता है। वे संवेदनाओं को बहुत ही गहराई से काग़ज़ के कैनवास पर उकेरते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनकी रचनाओं की विशेषता यह है कि वे अत्यंत सरल, सहज और आम बोलचाल की भाषा में लिखी गई होती हैं, लेकिन उनमें गहरी दार्शनिकता और मानवीय संवेदनाएं निहित होतीं हैं। वे जीवन के हर पहलू को गहराई से अध्ययन करते हैं और उसे काग़ज़ पर सहजता और सरलता से पिरो देते हैं। शुक्ल जी जीवन की साधारण से साधारण घटनाओं, अनुभवों को असाधारण रूप से बहुत ही सूक्ष्मता से सही दृष्टिकोण और संवेदनशीलता से प्रस्तुत करते हैं।कहना ग़लत नहीं होगा कि श्री शुक्ल जी का लेखन हिंदी साहित्य में एक अलग व अनूठी पहचान बनाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि ज्ञानपीठ पुरस्कार मिलने के बाद साहित्य के क्षेत्र में उनकी पहुंच दूर-दूर तक हो सकेगी, जिससे भारतीय साहित्य का समृद्ध भंडार और विस्तृत हो सकेगा। आज साहित्य पर बाजारवाद और दिखावे का बड़ा प्रभाव है। साहित्यकार कलिष्टता की ओर बढ़ते चले जा रहे हैं। साहित्य चोरी तो जैसे आम बात सी हो चली है। साहित्य से संवेदनशीलता, मौलिकता और सरलता तथा सहजता जैसे गायब सी है। हमें यह बात याद रखनी चाहिए कि साहित्य कोई भी उसमें मौलिकता बहुत ही महत्वपूर्ण और जरूरी है। बिना मौलिकता और संवेदनशीलता के कोई भी साहित्य निष्प्राण ही कहलाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि साहित्य में सच्चाई प्रकट होनी चाहिए और उसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित, और सुंदर होनी चाहिए।एक अच्छे साहित्य में दिलो-दिमाग पर असर डालने के गुण होने चाहिए।एक अच्छा साहित्य हमें मानवीय करुणा, संवेदनशीलता, सद्भाव, एकात्म, भाषायी ज्ञान, सांस्कृतिक ज्ञान, संयम, सौहार्द प्रदान करता है और श्री शुक्ल जी के साहित्य में यह सबकुछ है।श्री शुक्ल जी ने अपने लेखन के माध्यम से यह बखूबी दर्शाया है कि साहित्य क्लिष्ट व कठिन शब्दों का खेल मात्र नहीं है, बल्कि साहित्य इससे कहीं ऊपर है। वास्तव में,उन्होंने अपने लेखन से यह दर्शाया है कि साधारण जीवन की छोटी-छोटी बातों में भी असाधारण सुंदरता निहित हो सकती है।सच तो यह है कि संवेदना ही एक ऐसा भाव है, जो साहित्य और समाज को जोड़ता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि संवेदनहीन साहित्य समाज को कभी प्रभावित नहीं कर सकता और वह मात्र मनोरंजन कर सकता है। साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ-साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखंड की विसंगतियों, विद्रूपताओं एवं विरोधाभासों को रेखांकित कर समाज को संदेश प्रेषित करता है, जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है। अंत में यही कहूंगा कि श्री शुक्ल जी का साहित्य साधारण जीवन के साधारण व छोटे-छोटे अनुभवों की सच्ची अभिव्यक्ति है। कहना चाहूंगा कि उनके साहित्य से नव-लेखकों, साहित्यकारों, शोधार्थियों को सदैव नवीन ऊर्जा, सकारात्मकता व प्रोत्साहन मिलता रहेगा। उनके शानदार, जानदार लेखन को यह लेखक नमन करता है। जय-जय।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# डिजिटल भारत में विचारों की बेड़ियां

सरकार द्वारा ओटीटी प्लेटफार्मों की निगरानी, सोशल मीडिया पर टेकडाउन आदेश और आईटी नियम 2021 ने डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित किया है। सेंसरशिप और आत्म-नियमन से प्लेटफार्म अधिक सामग्री हटाने लगे हैं, जिससे विचारों की विविधता प्रभावित होती है। झूठी सूचनाओं और साइबर अपराधों को रोकने के लिए कुछ हद तक नियमन आवश्यक है।

**प्रियंका सौरभ**

धारा 79 डिजिटल मंचों को मध्यस्थ सुरक्षा प्रदान करती है, लेकिन हालिया सरकारी हस्तक्षेप ने इस सुरक्षा को चुनौती दी है। सरकार द्वारा ओटीटी प्लेटफार्मों पर निगरानी, सोशल मीडिया पर टेकडाउन आदेश, और आईटी नियम 2021 का कड़ा अनुपालन डिजिटल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित कर रहा है। सेंसरशिप और आत्म-नियमन के भय से प्लेटफार्म अधिक सामग्री हटाने लगे हैं, जिससे विचारों की विविधता प्रभावित होती है। हालांकि, झूठी सूचनाओं और साइबर अपराधों को रोकने के लिए कुछ हद तक नियमन आवश्यक है। इसीलिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्लेटफार्म जवाबदेही के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। भारत को यूरोप के डिजिटल सर्विसेज एक्ट और अमेरिका के सेक्शन 230 जैसे संतुलित मॉडल से सीख लेकर, एक पारदर्शी और न्यायसंगत डिजिटल नीति अपनानी होगी। सूचना की इस नित परिवर्तनशील धारा में, जहाँ डिजिटल प्लेटफॉर्म विचारों के विस्तृत वितान की भूमिका निभा रहे हैं, वहीं उन पर लगने वाली बंदिशें एक नवीन प्रश्नचिन्ह उत्पन्न करती हैं। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और नियमन की कठोरता के मध्य झूलते इस युग में, सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (IT Act) की धारा 79 एक महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि निर्मित करती है।

**धारा 79: मध्यस्थता का कवच या नियमन की तलवार?**

आईटी अधिनियम की धारा 79 डिजिटल मंचों को एक ऐसा आश्रय प्रदान करती है, जो उन्हें उपयोगकर्ताओं द्वारा प्रस्तुत सामग्री की जवाबदेही से मुक्त रखता है, बशर्ते कि: वे मात्र संदेश वाहक की भूमिका निभाएं, न कि नियंत्रक की। किसी अवैध सामग्री की सूचना मिलने पर, नियमानुसार उसे हटाने का यत्न करें। नवीनतम आईटी नियम, 2021 के प्रावधानों का अनुपालन करें। किन्तु, सरकार के हालिया कदमों ने इस कवच को किसी हद तक छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया है, जहाँ अभिव्यक्ति की आज़ादी और नियमन की शक्ति के मध्य एक सतत संघर्ष दृष्टिगोचर होता है।

**सरकारी हस्तक्षेप: एक यथार्थपरक व्याख्या**

सूचना और संप्रेषण के इस युग में सरकार द्वारा लागू किए गए कुछ प्रमुख हस्तक्षेपों पर यदि दृष्टिपात करें, तो पाते हैं कि ओटीटी प्लेटफार्मों पर बढ़ती निगरानी ने रचनात्मकता को एक कठोर परिधि में बाँधने का प्रयास किया है। सोशल मीडिया पर टेकडाउन आदेश विचारों के मुक्त प्रवाह में एक बाधा के समान प्रतीत होते हैं। आईटी नियम, 2021 का क्रियान्वयन डिजिटल संवाद के सहज प्रवाह को नियंत्रित करने की मंशा रखता है। कई डिजिटल प्लेटफार्मों पर सामग्री प्रबंधन को लेकर पारदर्शिता की कमी उपयोगकर्ताओं के अधिकारों पर प्रभाव डालती है। स्वतंत्र पत्रकारिता एवं वैकल्पिक दृष्टिकोणों को प्रतिबंधित करने की प्रवृत्ति लोकतांत्रिक मूल्यों को कमजोर कर सकती है। इन घटनाओं से यह स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा प्लेटफार्मों की स्वतंत्रता को सीमित करने और दायित्व को बढ़ाने की दिशा में एक अनवरत प्रयास किया जा रहा है।

**विचारों की स्वतंत्रता बनाम उत्तरदायित्व का प्रश्न**

सेंसरशिप और कंटेंट टेकडाउन जैसे कदम कलात्मक स्वतंत्रता, पत्रकारिता और राजनीतिक आलोचना पर गहरी छाया डालते हैं। आत्म-नियमन (self-regulation) के भय से कई प्लेटफार्म स्वयं ही अधिक सामग्री हटाने लगते हैं, जिससे संवाद की विविधता प्रभावित होती है। सूचना तक पहुँच की स्वतंत्रता सीमित होने से नवाचार और बौद्धिक विमर्श बाधित होता है। डिजिटल मंचों पर झूठी सूचनाओं, घृणा व द्वेष फैलाने वाली सामग्री का उन्मूलन आवश्यक है।

उपयोगकर्ताओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु कुछ हद तक नियमन अपरिहार्य है। साइबर अपराध, ऑनलाइन उत्पीड़न और फेक न्यूज़ को रोकने के लिए प्लेटफार्मों को अधिक सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। प्लेटफार्मों को समुदायिक मानकों और निष्पक्ष नीतियों का पालन करना चाहिए ताकि विचारों की अभिव्यक्ति को बाधित किए बिना एक सुरक्षित डिजिटल वातावरण बनाया जा सके।

**संतुलन की आवश्यकता: मध्य मार्ग की खोज**

किसी भी लोकतांत्रिक समाज में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और डिजिटल प्लेटफार्मों की जिम्मेदारी के मध्य संतुलन आवश्यक होता है। इसके लिए: संविधान के अनुच्छेद 19(1)(a) के तहत अभिव्यक्ति की सुरक्षा सुनिश्चित हो। एक न्यायसंगत और पारदर्शी कंटेंट मॉडरेशन प्रणाली विकसित की जाए।ओटीटी और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों हेतु स्वतंत्र नियामक संस्था का गठन किया जाए। डिजिटल अधिकारों एवं दायित्वों की स्पष्ट व्याख्या हो।

तकनीकी विशेषज्ञों, नागरिक समाज, और विधायकों के बीच निरंतर संवाद सुनिश्चित किया जाए। डिजिटल प्लेटफार्मों के लिए एक निष्पक्ष और पारदर्शी अपील तंत्र विकसित किया जाए ताकि उपयोगकर्ता अपनी आपत्तियों को दर्ज कर सकें। कंटेंट मॉडरेशन और सेंसरशिप पर डेटा पारदर्शिता रिपोर्ट्स सार्वजनिक रूप से उपलब्ध कराई जाएं।

**वैश्विक संदर्भ और भारत की स्थिति**

यूरोपीय संघ का "डिजिटल सर्विसेज एक्ट" एक आदर्श उदाहरण है, जो ऑनलाइन प्लेटफार्मों के लिए संतुलित दायित्व निर्धारित करता है। अमेरिका में 'सेक्शन 230' प्लेटफार्मों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व के बीच संतुलन प्रदान करता है। भारत को एक ऐसा ढांचा विकसित करने की आवश्यकता है, जो न केवल अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा करे बल्कि डिजिटल सुरक्षा और जवाबदेही को भी सुनिश्चित करे। सरकार, न्यायपालिका, और नागरिक समाज के सहयोग से एक प्रभावी डिजिटल नीति विकसित करना आवश्यक है। सूचना के इस महासागर में, जहाँ विचार लहरों की भांति गतिशील हैं, वहाँ नियमन और स्वतंत्रता के संतुलन की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। आईटी अधिनियम की धारा 79 डिजिटल प्लेटफार्मों को सुरक्षा प्रदान करती है, किन्तु हालिया सरकारी हस्तक्षेप यह दर्शाते हैं कि इस सुरक्षा कवच को सीमित किया जा रहा है। यदि सरकार एक समावेशी और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अपनाए, तो भारत का डिजिटल परिदृश्य एक स्वतंत्र, सुरक्षित और न्यायसंगत दिशा में अग्रसर हो सकता है।

डिजिटल भारत की शक्ति उसके नागरिकों की विचार अभिव्यक्ति में ही निहित है। यदि सरकार, डिजिटल मंच और समाज मिलकर एक संतुलित रणनीति अपनाते हैं, तो यह तकनीकी युग लोकतंत्र की मूल भावना को सशक्त बना सकता है और भारत को वैश्विक डिजिटल क्रांति में अग्रणी बना सकता है। यदि सरकार, डिजिटल मंच और समाज मिलकर एक संतुलित रणनीति अपनाते हैं, तो भारत डिजिटल क्रांति में अग्रणी बन सकता है, जहाँ अभिव्यक्ति स्वतंत्र और सुरक्षित बनी रहेगी।

# रेखा जाटव मामले में भीम आर्मी हिसार की मांग सबसे पहले सभी दोषियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की जाए

अनाज मंडी चौकी इंचार्ज, सिटी थाना प्रभारी और CIA स्टॉफ के मुलाजिमों की सस्पैंड किया जाए। पीड़ित की झुग्गी में हुई नुकसान की भरपाई के लिए पीड़ित बहन को उचित मुआवजा दिया जाए और बहन को किसी सरकारी महकमे में जॉब दी जाए।

बहन रेखा जाटव मामले ने पकड़ी तूल हजारों लोगों ने किया सिविल हॉस्पिटल हिसार में धरना प्रदर्शन।

बहन रेखा जाटव मामला जा पहुंचा राष्ट्रीय महिला आयोग में।

अगर हिसार पुलिस ने दोषी पुलिस कर्मचारियों पर जल्द कार्रवाई नहीं की तो, हिसार पुलिस के खिलाफ भीम आर्मी करेगी बड़ा आंदोलन (एडवोकेट संतलाल अंबेडकर)

**हिसार/चण्डीगढ/नई दिल्ली,**

भीम आर्मी नेता एडवोकेट संतलाल अंबेडकर ने मीडिया के सामने राष्ट्रीय महिला आयोग की सदस्या माननीया ममता कुमारी जी को धरनास्थल पर मौके पर ही फोन से बातचीत की ओर पीड़ित रेखा जाटव के मामले की घटना से संबंधित दी जानकारी दी, इस मामले में माननीया ममता कुमारी सदस्या राष्ट्रीय महिला आयोग ने कहा कि हमे लिखित में शिकायत भेजें हम दोषी हिसार पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों पर कार्रवाई करवाएंगे। फिर भीम आर्मी के नेताओ ने लिखित में वाट्सअप पर महिला आयोग को शिकायत भेजी।

सिविल अस्पताल हिसार में धरना स्थल के पास मौके पर दल बल के साथ पहुंचे डीएसपी सुनील कुमार और एस. पी. ऑफिस अमरजीत जी पीड़ित से मिलकर हाल चाल जाना और आश्वासन दिया कि सभी दोषियों पर कानूनी कार्रवाई होगी और पीड़ित रेखा ने लिखित में हिसार पुलिस को दिए अपने बयान दिए ओर पुलिस ने कहा कि जल्द एफआईआर की कॉपी पीड़ित को दे दी जायेगी, डीएसपी सुनील के आश्वासन पर सभी पीड़ितो ने अपना धरना समाप्त कर दिया।

आज धरना स्थल पर प्रदर्शन कारियों ने जमकर हिसार पुलिस और हरियाणा सरकार के खिलाफ नारेबाजी की । भीम आर्मी नेता एडवोकेट संतलाल अंबेडकर ,संदीप हिसारिया, भाई संजय, अमित जाटव, प्रदीप यादव, सुनील चौहान,पीड़िता का पति अतुल जाटव, विजय हरिचंद, गुड्डु, विकी जाटव इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

**एडवोकेट संतलाल अंबेडकर**
**भीम आर्मी नेता**

# भारत में गर्मी का जल्दी आना और लू का बढ़ना

बढ़ते तापमान से कृषि, जल संकट, सार्वजनिक स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। फरवरी में असामान्य रूप से अधिक गर्मी, रात के तापमान में वृद्धि, समुद्री तापमान का असर और शहरी हीट आइलैंड प्रभाव इस समस्या को और गंभीर बना रहे हैं। इसका असर शिक्षा, श्रम उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा पर भी पड़ रहा है।

**-डॉ. सत्यवान सौरभ**

भारत में लू की घटनाएँ जलवायु परिवर्तन के कारण तेज़ी से बढ़ रही हैं। भारतीय मौसम विभाग के अनुसार, मैदानी इलाकों में जब तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक हो जाता है और यह स्थिति लंबे समय तक बनी रहती है, तो इसे लू के रूप में परिभाषित किया जाता है। 2024 में भारत ने 554 लू के दिन अनुभव किए, जबकि 2023 में यह संख्या 230 थी। यह वृद्धि कृषि, जल उपलब्धता और सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही है, जिससे तत्काल शमन उपायों की आवश्यकता है।

फरवरी, जो आमतौर पर सर्दियों का महीना होता है, अब अत्यधिक गर्मी का अनुभव कर रहा है। ओडिशा, तेलंगाना और महाराष्ट्र में फरवरी 2025 में तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से अधिक दर्ज किया गया, जो जलवायु परिवर्तन की ओर इशारा करता है। उदाहरण: फरवरी 2025 में मुंबई ने 38.7 डिग्री सेल्सियस का तापमान दर्ज किया, जो पांच वर्षों में सबसे गर्म फरवरी का दिन था। इसने दैनिक जीवन को बाधित किया और गर्मी से संबंधित बीमारियों में वृद्धि की। वैश्विक तापमान में वृद्धि के कारण शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार और तीव्र हीटवेव देखी जा रही हैं, जिससे जनसंख्या पर भारी दबाव पड़ रहा है। रात के तापमान में भी अप्रत्याशित वृद्धि हो रही है। 31 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सामान्य से 1°C अधिक रात का तापमान दर्ज किया गया, जबकि 22 राज्यों में 3°C-5°C की वृद्धि देखी गई। दिल्ली में 2024 में 74 वर्षों की सबसे गर्म फरवरी की रात दर्ज की गई, जिससे कमजोर वर्ग के लिए रिकवरी का समय कम हो गया। समुद्री हीटवेव अंतर्देशीय तापमान को बढ़ाती हैं और मानसून के पैटर्न को प्रभावित करती हैं। 2023 में बंगाल की खाड़ी में समुद्री हीटवेव के कारण पूर्वी भारत में मानसून में देरी हुई और प्री-मानसून गर्मी बढ़ी। कंक्रीट संरचनाएँ, कम हरियाली और प्रदूषकों की उपस्थिति से शहरी क्षेत्रों में गर्मी अधिक रहती है। अप्रैल 2023 में अहमदाबाद के शहरी क्षेत्रों में तापमान आसपास के ग्रामीण इलाकों से 3-4 डिग्री सेल्सियस अधिक था।

राज्यों के बीच समन्वय सुनिश्चित करते हुए राष्ट्रीय अनुकूलन योजना में हीटवेव शमन को शामिल करना आवश्यक है। अहमदाबाद की हीट एक्शन प्लान (2013) हर साल 1190 मौतों को रोकने में मदद करता है। शहरी नियोजन में हरित इमारतों, निष्क्रिय शीतलन और गर्मी प्रतिरोधी सामग्रियों का उपयोग बढ़ाना चाहिए। तेलंगाना की कूल रूफ नीति (2021) ताप-परावर्तक छतों को बढ़ावा देती है, जिससे इनडोर तापमान कम होता है। वृक्षारोपण, छत पर बागवानी और जल निकायों के संरक्षण से तापमान कम किया जा सकता है। दिल्ली की शहरी वन पहल ने कई हॉटस्पॉट में स्थानीय तापमान को 2-3 डिग्री सेल्सियस

तक कम किया। स्थानीय मौसम निगरानी, हीटवेव पूर्वानुमान और शहरी हीट आइलैंड मानचित्रण का विस्तार किया जाना चाहिए। कमज़ोर श्रमिकों के लिए हीट इंश्योरेंस, समायोजित कार्य घंटे और शीतलन आश्रय सुनिश्चित करने की आवश्यकता है। राजस्थान के हीट इंश्योरेंस पायलट (2023) ने अत्यधिक गर्मी वाले दिनों में दैनिक वेतनभोगी श्रमिकों को वित्तीय मुआवज़ा प्रदान किया।

अत्यधिक गर्मी के कारण स्कूलों में गर्मी की छुट्टियाँ लंबी हो सकती हैं, जिससे पाठ्यक्रम पूरा करना मुश्किल हो जाता है। कई स्कूलों में पर्याप्त शीतलन व्यवस्था नहीं होती, जिससे छात्रों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है। परीक्षा के समय लू पड़ने से छात्रों का प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है। अत्यधिक गर्मी के कारण श्रमिकों की उत्पादकता में कमी आती है, खासकर निर्माण, खेती और अन्य बाहरी कामों में। बिजली की खपत बढ़ने से ऊर्जा संकट उत्पन्न हो सकता है, जिससे बिजली कटौती बढ़ती है। हीटवेव के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ बढ़ती हैं, जिससे अस्पतालों पर दबाव बढ़ता है और स्वास्थ्य सेवा का खर्च बढ़ जाता है। झीलों, तालाबों और नदियों का जल स्तर तेजी से गिरता है, जिससे पेयजल की समस्या गहराती है। भूजल स्तर में गिरावट होती है, जिससे सिंचाई और पेयजल की आपूर्ति प्रभावित होती है। जंगलों में आग लगने की घटनाएँ बढ़ती हैं, जिससे जैव विविधता को नुकसान होता है। गर्मी के कारण कई पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं का पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है। गेहूं, धान और अन्य प्रमुख फसलों की पैदावार में गिरावट आती है, जिससे खाद्य सुरक्षा प्रभावित होती है। अत्यधिक गर्मी और जल संकट के कारण पशुपालन भी प्रभावित होता है।

अधिक गर्मी सहने वाली और कम पानी में पनपने वाली फसलों का विकास और उपयोग किया जाए। किसानों को माइक्रो-इरिगेशन तकनीक (टपक सिंचाई) अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। हरी छतें, जलाशयों और खुले हरे क्षेत्रों को बढ़ावा देना। सार्वजनिक स्थलों पर पेड़ों की छाया और वाटर स्प्रे सिस्टम लगाना। स्मार्ट शहरों में तापमान अनुकूलन तकनीकों को अपनाना। हीट-रेसिस्टेंट निर्माण सामग्री और ऊर्जा-कुशल डिज़ाइन को बढ़ावा देना। समुद्र के तापमान को नियंत्रित करने के लिए वैश्विक और क्षेत्रीय प्रयासों को मजबूत करना। तटीय इलाकों में मैंग्रोव वनों को पुनर्जीवित करना, जो प्राकृतिक रूप से तापमान को संतुलित करने में सहायक होते हैं। यूरोप का हीट एक्शन प्लानः फ्रांस और स्पेन ने हीटवेव के दौरान कूलिंग सेंटर और सार्वजनिक अलर्ट सिस्टम लागू किए हैं। ऑस्ट्रेलिया का जल प्रबंधनः सूखा-प्रभावित क्षेत्रों में जल संचयन और संरक्षण के लिए प्रभावी नीतियाँ लागू की गई हैं। अमेरिका का 'ग्रीन इंफ्रास्ट्रक्चर' प्रोग्रामः शहरी इलाकों में हरियाली और छायादार क्षेत्रों को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

भारत में बढ़ती गर्मी और लू के प्रभावों को कम करने के लिए बहुआयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है। इसके लिए सरकार, समाज और वैज्ञानिक समुदाय को मिलकर दीर्घकालिक समाधान विकसित करने होंगे। जलवायु अनुकूलन, स्मार्ट शहरी योजना, कृषि नवाचार और वैश्विक सहयोग से ही इस चुनौती से निपटा जा सकता है। गर्मी की लहरों के बढ़ते खतरे के कारण जलवायु-अनुकूलन योजनाओं को लागू करना आवश्यक हो गया है। प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, हीट एक्शन प्लान और लचीले बुनियादी ढांचे को मजबूत करना महत्वपूर्ण है। शहरी हरियाली, परावर्तक छतें और टिकाऊ जल प्रबंधन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। साथ ही, महात्मा गांधी नरेगा जैसी योजनाओं का विस्तार और शीतलन-केंद्रित शहरी नीतियों को लागू करना सार्वजनिक स्वास्थ्य, आजीविका और भविष्य की स्थिरता को सुनिश्चित करने में सहायक होगा।

## जापान में पेश हुई 2026 टोयोटा लैंड क्रूजर 300, इंजन और कॉस्मैटिक बदलावों की जगह मिले ये अपडेट

जापानी वाहन निर्माता Toyota की ओर से दुनिया के कई देशों में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक कंपनी की ओर से जापान में 2026 Toyota Land Cruiser 300 को पेश कर दिया गया है। इस एसयूवी में किस तरह के बदलावों को किया गया है। किस कीमत पर जापान में इसे ऑफर किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** दुनिया के कई देशों में अलग अलग सेगमेंट में वाहनों की बिक्री करने वाली निर्माता Toyota की ओर से 2026 Land Cruiser 300 को पेश कर दिया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से इस एसयूवी को अभी जापान में पेश किया गया है। इसमें किस तरह के बदलाव किए गए हैं। किस कीमत पर इस एसयूवी को ऑफर किया जा रहा है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**अपडेट हुई Toyota Land Cruiser 300**

टोयोटा की ओर से प्रीमियम एसयूवी के तौर पर कई देशों में ऑफर की जाने वाली Land Cruiser को अपडेट कर दिया है। निर्माता की ओर से अपडेट के बाद इसके 2026 वर्जन को जापान में पेश किया गया है।

**क्या हुए बदलाव**

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक निर्माता की ओर से एसयूवी के 2026 वर्जन में तकनीकी तौर पर कई बदलाव किए हैं। लेकिन इसके इंजन और डिजाइन में किसी भी तरह का बदलाव नहीं किया गया है।

**मिले ये अपडेट**

जानकारी के मुताबिक टोयोटा की ओर से एसयूवी में 12.3 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम को दिया है। हालांकि इसके बेस वेरिएंट में सात इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम दिया जाएगा। इसके अलावा इसमें एंटी थेफ्ट फीचर, फिंगरप्रिंट ऑथेंटिकेशन स्टार्ट बटन, इमोबिलाइजर सिस्टम, टिल्ट सेंसर अलार्म जैसे कुछ फीचर्स के साथ कस्टमाइजेबल ग्राफिक्स को ऑफर किया गया है।

**नहीं होगी रिजर्व**

इस एसयूवी की खास बात यह है कि जापान में 2026 Toyota Land Cruiser 300 एसयूवी को रिजर्व नहीं करवाया जा सकेगा। क्योंकि निर्माता इस एसयूवी के नए वर्जन के लिए बुकिंग शुरू करने से पहले पुराने ऑर्डर्स को डिलीवर करना चाहती है।

**कितना दमदार इंजन**

2026 Toyota Land Cruiser 300 में 3.3 लीटर की क्षमता का वी6 डीजल इंजन मिलता है। इसके अलावा इसमें 3.5 लीटर की क्षमता का ट्विन टर्बोचार्ज वी6 पेट्रोल इंजन का विकल्प भी मिलता है। साथ ही फुलटाइम 4WD और 10 स्पीड ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन को एसयूवी में दिया जाता है।

**कितनी है कीमत**

जापानी बाजार में इस एसयूवी के 2026 वर्जन के बेस वेरिएंट को 5252500 जापानी येन की कीमत पर ऑफर किया गया है, जो भारतीय रुपये में करीब 29.5 लाख रुपये होते हैं। वहीं इसके डीजल इंजन वाले GR वेरिएंट की कीमत 8136800 जापानी येन है जो भारतीय रुपये में करीब 45.7 लाख रुपये होते हैं। पिछले मॉडल के मुकाबले में 2026 वर्जन की कीमत में 73500 रुपये से लेकर 85700 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई है।

# फिर आई मर्सिडीज बेंज की कारों में खराबी

## आग लगने के खतरे के कारण भारत में रिकॉल की कारें

परिवहन विशेष न्यूज

मर्सिडीज बेंज रिकॉल इंडिया जर्मनी की लग जरी वाहन निर्माता Mercedes Benz की कारों में एक बार फिर खराबी की जानकारी मिली है। जिसके बाद निर्माता की ओर से अपनी कई कारों को Recall किया गया है। किस तरह की खराबी की जानकारी मिलने के बाद कारों को वापस बुलाया गया है। कितनी यूनिट्स के लिए Recall जारी किया गया है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** भारत में सामान्य कारों के साथ ही महंगी और लग्जरी कारों की हर महीने हजारों यूनिट्स की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता Mercedes Benz की कारों में एक बार फिर से गड़बड़ी की जानकारी सामने आई है। जिसके बाद कई कारों को Recall किया गया है। रिपोर्ट के मुताबिक किस तरह की समस्या की जानकारी मिलने के बाद किस किस मॉडल की कितनी कारों को वापस बुलाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**Mercedes की कारों के लिए जारी हुआ रिकॉल**

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक मर्सिडीज बेंज की ओर से अपनी कारों के लिए रिकॉल को जारी किया गया है। जानकारी के मुताबिक मर्सिडीज के तीन मॉडल्स की कारों में इस बार खराबी की जानकारी सामने आई है।

**किन कारों के लिए जारी हुआ Recall**

जानकारी के मुताबिक मर्सिडीज के जिन तीन मॉडल्स की कारों में खराबी की जानकारी मिली है, उनमें AMG E63 S, E 53 4Matic+ और CLE Cabriolet मॉडल की कारें शामिल हैं।

**क्या मिली खराबी**

रिपोर्ट के मुताबिक AMG E63S और E 53 4Matic+ में ट्रांसमिशन वायरिंग हार्नेस में खराबी की जानकारी सामने आई है। जिस कारण पानी जाने से शॉर्ट सर्किट होने पर थर्मल ओवरलोड हो सकता है और गाड़ी में आग लगने का खतरा हो सकता है।

वहीं CLE Cabriolet में फ्रंट पैसेंजर शटऑफ के बारे में चेतावनी लेवल गायब होने के बाद रिकॉल को जारी किया गया है।

**कितनी यूनिट्स को वापस बुलाया**

जानकारी के मुताबिक मर्सिडीज की ओर से E 63 S की 50 यूनिट्स में खराबी की जानकारी मिली है। इन यूनिट्स को 14 सितंबर 2022 से 12 अक्टूबर 2023 के बीच बनाया गया था।

Mercedes Benz E 53 4Matic+ की 53 यूनिट्स में खराबी की जानकारी मिलने के बाद बुलाया गया है। इन कारों को 21 जनवरी 2021 से 20 जनवरी 2023 के बीच बनाया गया था।

Mercedes CLE Cabriolet की 59 यूनिट्स में खराबी पाई गई है। इनको 13 अप्रैल 2024 से 24 जून 2024 के बीच बनाया गया है।

**पहले भी जारी हुआ है रिकॉल**

मर्सिडीज की कारों में पिछले महीने भी खराबी की जानकारी मिलने के बाद रिकॉल जारी किया जा चुका है। तब भी करीब 2543 यूनिट्स के लिए रिकॉल को जारी किया गया था। खास बात यह है कि सामान्य कारों के मुकाबले महंगी और लग्जरी कारों को ज्यादा बेहतर तरीके से बनाया जाता है, लेकिन फिर भी लगातार मर्सिडीज की कारों में इस तरह की खराबी की जानकारी सामने आने के बाद निराशा होती है।

# नई किआ ईवी 6 हुई भारत में लॉन्च, 663 किलोमीटर रेंज के साथ मिलेंगे बेहतरीन फीचर्स

साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ की ओर से भारतीय बाजार में EV6 को ऑफर किया जाता है। लेकिन कंपनी की ओर से मार्च 2025 में इसके फेसलिफ्ट वर्जन को लॉन्च कर दिया गया है। पुराने वर्जन के मुकाबले नए वर्जन में क्या बदलाव किए गए हैं। अब इसे किस कीमत पर लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** साउथ कोरियाई वाहन निर्माता किआ की ओर से भारतीय बाजार में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। किआ की ओर से 26 March 2025 को अपनी प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी Kia EV6 के नए वर्जन को लॉन्च किया गया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। कितनी दमदार बैटरी और मोटर दी गई है। किस कीमत पर नए वर्जन को लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**नई Kia EV6 हुई लॉन्च**

किआ की ओर से प्रीमियम इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर ऑफर की जाने वाली Kia EV6 के नए वर्जन को भारत में लॉन्च कर दिया है। कंपनी की ओर से पुराने वर्जन के मुकाबले कुछ बदलावों के साथ इसे लॉन्च किया गया है।

**क्या हुए बदलाव**

नई EV6 में कई बदलावों को किया गया है। पुराने वर्जन के मुकाबले इसकी लंबाई, फ्रंट को बढ़ाया गया है। इसके अलावा इसमें नए डिजाइन वाली हेडलाइट और बंपर को दिया गया है। साथ ही नई एसयूवी में पहले से ज्यादा बड़ी बैटरी को दिया गया है, जिससे इसकी रेंज में बढ़ोतरी हो गई है।

**कितनी दमदार बैटरी और मोटर**

नई Kia EV6 में 84 kWh की क्षमता की बैटरी को दिया गया है। जिसे फुल चार्ज करने के बाद 663 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है। इसमें ड्यूल मोटर ऑल व्हील ड्राइव सिस्टम दिया गया है जिससे इसे 325 पीएस की पावर और 605 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। एसयूवी को सिर्फ 18 मिनट में 10 से 80 फीसदी तक चार्ज किया जा सकता है। 15 मिनट के चार्ज के बाद इसे 343 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है।

**कैसे हैं फीचर्स**

नई किआ EV6 में कंपनी की ओर से कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया गया है। इसमें कनेक्टिड एलईडी डीआरएल, सीक्वेंशनल इंडीकेटर्स, 19 इंच अलॉय व्हील्स, डबल डी कट स्टेयरिंग व्हील, डिजिटल रियर व्यू मिरर, अपडेटिड हेड्स-अप डिस्प्ले, 12.3 इंच कर्व्ड पैनोरमिक डिस्प्ले, वायरलेस एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, 15 वाट का वायरलेस फोन चार्जर, रिमोर्ट पार्किंग असिस्ट, ओटीए अपडेट, 360 डिग्री कैमरा और Level-2 ADAS जैसे फीचर्स को दिया गया है। एसयूवी को Snow-White Pearl, Aurora Black Pearl, Wolf Grey, Runway Red औश्र Yacht Blue Matte जैसे रंगों के विकल्प में ऑफर किया गया है।

**कितनी है कीमत**

Kia EV6 को 65.9 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है। इस एसयूवी को सिर्फ GT Line वेरिएंट में ही ऑफर किया गया है। इसके पहले इस एसयूवी को जनवरी 2025 में हुए ऑटो एक्सपो में 17 जनवरी 2025 को पेश किया गया था।

## साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस? गर्मियों में टायरों के लिए कौन है बेस्ट

गर्मियों में टायरों के लिए कौन-सी हवा का इस्तेमाल करना चाहिए यह एक जरूरी सवाल है जो बहुत से वाहन मालिकों के दिमाग में आता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आपको अपनी गाड़ी के टायर में साधारण हवा या नाइट्रोजन गैस में से किसे भरवाना चाहिए। दोनों में से किसे भरवाना सबसे बेहतर रहेगा।

**नई दिल्ली।** गर्मियों का मौसम आते ही तेज धूप, गर्म हवाएं चलने के साथ ही सड़कें भी गर्म हो जाती है। सड़कों के गर्म होना वाहनों के लिए कई चुनौतियां आती है। इनमें से एक चुनौती है टायरों का सही से रखरखाव करना। टायरों में हवा का सही दबाव बनाए रखने से न केवल गाड़ी की परफॉर्मेंस बनी रहती है, बल्कि ज्यादा माइलेज मिलने के साथ ही आपकी सुरक्षा भी बनी रहती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि गर्मी के मौसम में टायरों के लिए साधारण हवा और नाइट्रोजन गैस में से कौन बेहतर होती है और दोनों में से कौन सा ऑप्शन आपके लिए सबसे अच्छा हो सकता है।

**साधारण हवा**

इसे आमतौर पर टायरों में भरते हैं। इसमें करीब 78% नाइट्रोजन, 21% ऑक्सीजन और 1% दूसरी गैसें होती है। यह आसानी से हर जगह उपलब्ध हो जाती है और बहुत कम कीमत में टायरों में भरी जा सकती है। गर्मी में इसका टायरों में इस्तेमाल करने पर कुछ नुकसान देखने के लिए मिल सकते हैं। दरअसल, गर्मी के कारण टायरों के अंदर तापमान बढ़ता है, जिससे हवा का दबाव भी बढ़ सकता है। जिसका सीधा असर टायरों पर पड़ता है और टायर को नुकसान भी पहुच सकता है। वहीं, नहीं के कारण टायर के रिम में जंग लगने की संभावना भी रहती है।

**नाइट्रोजन गैस**

पिछले कुछ वर्षों से इसे टायरों के लिए बेहतर ऑप्शन के रूप में बताया जा रहा है। इसमें नमी और ऑक्सीजन की मात्रा न के बराबर होती है। गर्मियों में इसका इस्तेमाल करने का यह फायदा मिलता है कि यह तापमान के उतार-चढ़ाव के साथ फैलती या सिकुड़ती है। इससे टायरों में दबाव स्थिर रहता है, जिससे टायर की उम्र बढ़ती है और ड्राइविंग सुरक्षित रहती है। नाइट्रोजन रबर को ऑक्सीजन से बचाने का काम करने के साथ ही रिम पर जंग लगने की समस्या को भी कम करती है। हालांकि, इसे भरवाने की सुविधा हर जगह पर नहीं होती है और इसकी कीमत भी साधारण हवा से ज्यादा होती है।

**गर्मियों के लिए कौन बेहतर?**

गर्मियों में टायरों का परफॉर्मेंस कई चीजों पर निर्भर करता है, जिसमें मौसम की तीव्रता, सड़क की स्थिति और ड्राइविंग आदतें शामिल है। साधारण हवा रोजमर्रा इस्तेमाल के लिए पर्याप्त है, खासकर उन लोगों के लिए जो नियमित रूप से टायरों के दबाव की जांच करते हैं। अगर आप लंबी दूरी का सफर करते हैं या गर्मी में टायरों की सुरक्षा और स्थिरता को प्राथमिकता देना चाहते हैं, तो नाइट्रोजन गैस आपके लिए एक बेहतर ऑप्शन हो सकता है। यह फ्यूल की खपत को कम कर सकता है, क्योंकि एयर प्रेशर स्थिर रहता है, तो घर्षण सही रहता है।

# अब तक की सबसे दमदार और लग जरी एसयूवी डिफेंडर ओक्टा भारत में हुई

लैंड रोवर और जगुआर की ओर से भारतीय बाजार में कई कारों और एसयूवी की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से Defeneder Octa को लॉन्च कर दिया गया है। दावा किया जा रहा है कि यह एसयूवी अब तक की सबसे दमदार और लग जरी एसयूवी होगी। इसे किस कीमत पर भारत में लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

**नई दिल्ली।** जगुआर लैंड रोवर की ओर से भारत में कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से 26 March 2025 को देश में अब तक की सबसे दमदार और लग्जरी एसयूवी Defeneder Octa को लॉन्च कर दिया गया है। इस एसयूवी में कितना दमदार इंजन दिया गया है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे ऑफर किया गया है। किस कीमत पर एसयूवी को लॉन्च किया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

**लॉन्च हुई Defender Octa**

डिफेंडर ऑक्टा को भारतीय बाजार में औपचारिक तौर पर 26 मार्च 2025 को लॉन्च कर दिया गया है। निर्माता की ओर से दावा किया जा रहा है कि यह अब तक की सबसे दमदार और लग्जरी एसयूवी होगी।

**कितना दमदार इंजन**

डिफेंडर ऑक्टा एसयूवी में 4.4 लीटर की क्षमता के वी8 ट्विन टर्बो माइल्ड हाइब्रिड पेट्रोल इंजन को दिया गया है। इस इंजन से एसयूवी को 635 पीएस की पावर और 750 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में इसे सिर्फ चार सेकेंड (Defender Octa specifications) लगते हैं। इसकी टॉप स्पीड 250 किलोमीटर प्रति घंटा तक है।

**कैसे हैं फीचर्स**

Defender Octa एसयूवी को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। इसमें ऑफ रोड लॉन्च मोड, ऑफ रोड एबीएस, एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल, 360 डिग्री व्यू, 20 और 22 इंच एल्यूमिनियम अलॉय व्हील्स, मैट्रिक्स एलईडी लाइट्स, मेरिडियन ऑडियो सिस्टम, एपल कार प्ले, एंड्राइड ऑटो, 11.4 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, केबिन एयर प्यूरीफायर, ऑफ रोडिंग के लिए ऑक्टा मोड जैसे कई फीचर्स को दिया गया है।

**कितनी लंबी-चौड़ी है एसयूवी**

Defender Octa की वाटर वेटिंग क्षमता एक हजार एमएम की है। इसकी ग्राउंड क्लियरेंस 323 एमएम है और इसके चारों पहियों में डिस्क ब्रेक को दिया गया है। इसकी लंबाई 5003 एमएम है। इसकी चौड़ाई 2105 एमएम और ऊंचाई 1995 एमएम है। इसका व्हील बेस 3023 एमएम है और अधिकतम टोइंग क्षमता 3500 किलोग्राम है।

**कंपनी के अधिकारियों ने कही यह बात**

लैंड रोवर जैगुआर इंडिया के एमडी राजन अंबा ने कहा कि डिफेंडर भारत में हमारे लिए एक गेम-चेंजर रहा है, जो न केवल हमारे सबसे ज़्यादा बिकने वाले मॉडल के रूप में उभरा है, बल्कि अपने लॉन्च के बाद से मांग में शानदार बढ़ोतरी के साथ अपनी श्रेणी में सबसे ज़्यादा बिकने वाला मॉडल भी है। इस प्रतिष्ठित वाहन ने बाजार में एक अडिग ब्रांड इक्विटी का निर्माण किया है, जो ग्राहकों के साथ गहराई से जुड़ता है जो इसकी बेजोड़ क्षमता, विलासिता और रोमांच को महत्व देते हैं। आज, डिफेंडर OCTA के लॉन्च के साथ, हम डिफेंडर परिवार में सबसे कठिन और सबसे टिकाऊ मॉडल पेश कर रहे हैं, जो विलासिता और उच्च-प्रदर्शन क्षमता को दूसरे स्तर पर ले जाता है। नए डिफेंडर OCTA के साथ, हम एक ऐसा वाहन पेश कर रहे हैं जो न केवल सबसे चुनौतीपूर्ण इलाकों पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है, बल्कि एक प्रीमियम ड्राइविंग अनुभव भी प्रदान करता है।

**कितनी है कीमत**

डिफेंडर ऑक्टा को 2.59 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत (Defender Octa price in India) पर लॉन्च किया गया है। इसके एडिशन वन को 2.79 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर खरीदा जा सकता है। लेकिन यह एडिशन सिर्फ निर्माण के पहले ही साल में उपलब्ध होगा।

**किनसे है मुकाबला**

डिफेंडर ऑक्टा को प्रीमियम ऑफ रोडिंग एसयूवी के तौर पर दमदार फीचर्स के साथ लॉन्च (luxury SUV India) किया गया है। भारत में इस एसयूवी का मुकाबला मर्सिडीज एएमजी जी-63 जैसी एसयूवी के साथ होगा।

# कहानी: पति के नोट्स



विजय गर्ग

**मेरा उन दिनों इश्क चल रहा था. यह इश्क एक पति को छोड़ कर आई वाली से था. मेरी हो सकने वाली बीवी ने शादी के लिए सिर्फ एक शर्त रखी थी कि वह मेरे नाम के बजाय अपने पिता के घर का सरनेम और पिछले पति का सरनेम इस्तेमाल करेगी. नई क्रांति मैं भी करना चाहता था और बाकी आवाजों के मुकाबले यह शर्त मुझे कुछ आसान भी लगी.**

यदि पत्नी का काम और व्यक्तित्व अलग पहचान बनाने लगता है, तो फिर एक पति को जलन क्यों होने लगती है? एक पति क्यों चाहता है कि उस की पत्नी ताउम्र उस की दासी बन कर रहे...

दूसरे शादीशुदा लोगों की तरह मैं भी एक पति हूं. कुछ साल पहले मैं भी एक आम आदमी था, कुछ कर दिखाने की लगन वाला. पौपुलेशन कंट्रोल और टीएफआर के आंकड़े देख कर मुझे भी विश्व के भविष्य की चिंता होने लगी थी. शादी नहीं करूंगी. बिना शादी के आदमी के साथ रहूंगी. बच्चे पैदा नहीं करूंगी वगैरहवगैरह.

इन्हीं में से एक आवाज यह भी थी कि मैं शादी के बाद पति का नाम धारण नहीं करूंगी.

मेरा उन दिनों इश्क चल रहा था. यह इश्क एक पति को छोड़ कर आई वाली से था. मेरी हो सकने वाली बीवी ने शादी के लिए सिर्फ एक शर्त रखी थी कि वह मेरे नाम के बजाय अपने पिता के घर का सरनेम और पिछले पति का सरनेम इस्तेमाल करेगी. नई क्रांति मैं भी करना चाहता था और बाकी आवाजों के मुकाबले यह शर्त मुझे कुछ आसान भी लगी. लिहाजा शादी हो गई.

मेरी बीवी की पहली शादी और तलाक दोनों बिना अंबानी वाली शादी के हुए थे. कोई धूमधड़ाका नहीं, कोई 13 फंक्शन नहीं, बाद में कोर्टकचहरी भी थोड़ी सी. बहुतों को मालूम ही नहीं पड़ा कि कब शादी हुई, कब तलाक हुआ और अब कब मेरे से शादी हुई.

हम तो जमाने के साथ बदल गए पर जमाना नहीं बदला. मेरी तरह मेरी बीवी भी अखबारों और वैबसाइटों पर लिखती है. उस के नाम भी पार्टियों के न्योते आते हैं. बड़ी तकलीफ होती है जब निमंत्रणपत्र पढ़ कर लगता है कि मेरी बीवी का एक पति और भी है. निमंत्रण पत्र उस के और उस के पति के नाम आते हैं. आप को याद है न, वह अपने पिता के घर का नाम और पिछले पति का नाम इस्तेमाल करती है.

चलिए, यहां तक तो ठीक है. वह मुझे तसल्ली देती है कि मैं अब उस का इकलौता पति हूं. वह मुसलिम जरूर है पर इसलाम एक से ज्यादा पत्नियों की ही इजाजत देता है, एक से ज्यादा पतियों की नहीं.

अब इनवाइट आता है तो जाना भी पड़ता है. दिन का मामला हो तो आदमी गोल भी कर दे. काली अंधेरी रातों में दिल्ली में बमगोले फट रहे हों, बीवी बेचारी अकेली कैसे आएगी. हां, चली तो जाएगी पर वापस आने की दिक्कत है. कुछ अमीर बीवियां ड्राइवर इसीलिए रखती हैं पर पति की बात ही और है. खैर, पार्टी में पहुंचे. भीतर घुसते ही आवाज सुनाई पड़ी, "आइए जहीर साहब, कैसे हैं आप?"

मैं पीछे मुड़ कर देखता हूं कि होस्ट किस से मुखातिब हैं. पर वहां कोईर् और नहीं दिखाई पड़ा. मेरी बीवी की बांछें खिल जाती हैं.

"माफ कीजिए, मेरा नाम " मैं सफाईर् देता हूं.

"ओह, माफ कीजिए," आननफानन में वे मुझ से पल्ला झाड़ लेते हैं.

"अरे, जहीर साहब नहीं आए?" वे मेरी बीवी से पूछते हैं.

१-4 सैकंड यह तमाशा चला. मेजबान को बेहद शर्मिंदा करने के बाद हम आगे बढ़ते हैं. पीछे से कानों में आवाज आती है, मेजबान हम अजूबों के बारे में किसी को बता रहा है.

१ घंटे की पार्टी में करीब ६ लोगों से इस तरह का वास्ता पड़ा. दूसरे आदमी के बाद मैं ने सफाई देना बंद कर दिया. बाकी 4 लोगों ने जब मुझे 'जहीर साहब' कह कर संबोधित किया तो मैं ने वैसे ही तपाक से जवाब दिया जैसे 'रमेश' कहे जाने पर देता. अब कुछ लोगों के लिए मैं 'जहीर साहब' था और बाकी के लिए 'रमेश' किसी तरह पार्टी खत्म हुई. मैं ने ड्राइवरी का रोल संभाला और घर आ पहुंचा.

घर पर भी काफी देर तक पार्टी के चेहरे नजर आते रहे. पार्टी निहायत आर्टी किस्म की थी. ऐसी पार्टी वह होती है जिस में लोग टाट और परदों के बने कपड़े पहन कर आते हैं. लोहा कूटने वाली औरतों जैसे मोट चांदी के जेवर पहनते हैं और शास्त्रीय संगीत पर अमेरिकन अंगरेजी में बहस करते हैं.

इतमीनान की बात सिर्फ यह थी कि इस में बाकी पति भी मेरे जैसे थे. इन पतियों की जमात बढ़ती जा रही है. अकसर आप ने देखा होगा कि नयानया पैसा आने के बाद लोग अपनी बीवीबहनों को महंगे होटलों और रेस्ताराओं में ले जाते हैं. वहां पति तो अपने व्यापार या राजनीति और क्रिकेट पर बहस करते हैं और बीवियां अपनी मेज पर या दूसरी मेजों पर बैठी दूसरी औरतों के कपड़े और गहनों को निहारती रहती हैं.

उस पार्टी में जाने के बाद मुझे एक और राज पता चला. पति वहां खुल कर शराब पीने जाते हैं. घर पर तो पत्नी डांट देती है लेकिन खुलेआम कुछ कहना मुश्किल होता है. हर शाम नशे में धुत हो जाने की शुरुआत इन्हीं पार्टियों से होती है. शराब मुफ्त की होती है. पत्नी कहीं और व्यस्त होती है. आप को कोई घास डालने वाला नहीं होता. लिहाजा, आप अपने को जाम में डुबो देते हैं.

उस दिन पहली बार यह भी एहसास हुआ कि हम पतियों ने अपनी बीवियों को कितनी सदियों तक बोर किया है और बीवियों ने उफ तक नहीं की. उन्हें गहनों से लाद दिया, महंगी साड़ी में लपेट दिया.

उन्होंने अपने होंठों पर एक स्थायी उबाऊ मुसकान पोत ली और आप निश्चिंत हो कर हाहा, हूहू करते रहे. आप की बीवी से या तो शुरु में एक बात होती है, "कहिए भाभीजी, कैसी हैं?" या अंत में, "अच्छा भाभीजी कभी घर आइए न."

पत्नी का जवाब होता है, "क्या करूं मेरा तो इन के बगैर निकलना होता ही नहीं और फिर इन बच्चों का होमवर्क. आजकल तो पता नहीं इन टीचरों को क्या हो गया है. होमवर्क बच्चों को नहीं, मातापिता को मिलने लगा है."

मेरे वाली पार्टी में ऐसा कुछ नहीं था. एक तात्कालिक सर्वेक्षण से पता चला कि या तो वहां आई बीवियों के बच्चे थे नहीं या फिर आया या नौकरों के हवाले कर दिए गए थे. लेकिन वहां बच्चों के होमवर्क की नहीं, अनुष्का के लेटैस्ट अफेयर का जिक्र हो रहा था.

उसी पार्टी में मुझे यह भी पता चला कि दिल्ली के उच्चवर्ग में इन दिनों इन्फ्लुऐंसर के सितारों का जोर है. इस तरह की कोई पार्टी तब तक पूरी नहीं होती, जब तक कोई कोई इन्फ्लुऐंसर आधे कपड़ों वाली वहां मौजूद न हो और फिल्म, डांस और थिएटर की तरह इन दिनों टैलीविजन और इंटरनैट शादियां तोड़ने में लगा हुआ है. एक की शादी टूट चुकी है, दूसरी की टूटने वाली है और तीसरी ने फैसला किया है कि शादी में रखा ही क्या है. बाकी मामलों में पति ने पुराने किस्म की पत्नी की भूमिका निभा ली है. हम भी तो इसी को झेल रहे थे.

उस भूमिका की सटीक व्याख्या यह है कि पति पत्नी की सरेआम डांट खाए, उस के मेहमानों के सामने खीसें निपोरे खड़ा रहे, घंटों की खरीदारी के दौरान थैला उठाए और उस का ड्राइवर बनने को तैयार रहे. अगर वह ऐसा नहीं करेगा तो शादी में दरार पड़ जाएगी. पत्नी अपने अलग दोस्त बना लेगी और उसे शराब के सहारे छोड़ देगी. कोई दूसरी मिलेगी इस का चांस कम है.

मगर इस में औरत का कोई दोष नहीं है. सारा मसला पुरुष मन का है. सदियों से पुरुषों ने औरतों पर राज किया है, उन से खाना बनवाया है, उन्हें बच्चे पैदा करने और उन्हें पालने में लगाए रखा है. जब मांबाप शादी तय करते हैं तो यह सब पता चल जाता है.

लड़का कहता है, "मैं ने नहीं, तुम्हारे बाप ने मेरे बाप से कह कर शादी तय की है, इसलिए यह तो तुम्हें करना ही होगा."

जहां पैसा हकारत का हैऔर सारा काम नौकरों से करवाने का चलन है, वहां औरतें लेटीलेटी मोटी होती रहती हैं या फिर समाज कल्याण में लग जाती हैं.

मगर इश्क की बात और है. वहां लड़का शादी के लिए मिन्नत करता है, लड़की का पलड़ा भारी हो जाता है. चाहे वह पहले कितनों के साथ रह चुकी हो या शादी कर चुकी हो. जब इश्क का जोर ठंडा होता है तो टकराहट शुरू होती है और आदिम पुरुष का अहं जाग उठता है. अधिकांश मामलों में शुरू की टकराहट के बाद समझौता हो जाता है. लेकिन यदि पत्नी का काम और व्यक्तित्व अपनी अलग पहचान बनाने लगता है तो या तो पति अपने को समेट लेता है या फिर पत्नी को छोड़ देता है. अकसर पति अपनी बीवी के मुकाबले अपने काम में बड़ी लाइन खींचने या कुछ ज्यादा कर दिखाने के बजाय उस से जलने, कुढ़ने और परेशान रहने लगते हैं.

इस बारे में ऐक्सपर्ट्स में मतभेद है कि १ मजबूत और आजाद व्यक्तित्व वाले पतिपत्नी आपस में अच्छी तरह निभा पाते हैं या नहीं. वैसे है यह किसी मजबूर रस्से पर चलने के समान. आसान रास्ता तो यह है कि पत्नी दबे व्यक्तित्व वाली हो, आप महीने में एक बार ट्रिप पर ले जाएं. 4 बार बाहर खाना खिला दीजिए, १ बार मायके छोड़ आइए, उस की ड्रैस, लिपस्टिक और हेयरस्टाइल की तारीफ कर दीजिए, दफ्तर जाने से पहले और पहुंचने के बाद भींच कर प्यार कर लीजिए और किचन समेट दें कभी कोई संकट नहीं आएगा. मगर यदि वह आप की चालबाजी समझ जाती है और अपनी जिंदगी से ज्यादा बड़ा हिस्सा मांगती है तो सब से पहले आप को अपने काम में आगे बढ़ना होगा और फिर उस की नकेल को सफाई से थामना होगा कि कहां ढील देनी है और कहां कसना है. यह न भूलें कि जो ठोकर खाई होती है उसे मालूम रहता है कि अड़चन कैसी होती है.

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# कहानी: अकेली लड़की

विजय गर्ग



रूबीना का रिजर्वेशन जिस बोगी में था, उसमें लगभग सभी लड़के ही थे ।

टॉयलेट जाने के बहाने रुबिना पूरी बोगी घूम आई थी, मुश्किल से दो या तीन औरतें होंगी ।

मन अनजाने भय से काँप सा गया।

पहली बार अकेली सफर कर रही थी, इसलिये पहले से ही घबराई हुई थी।

अतः खुद को सहज रखने के लिए चुपचाप अपनी सीट पर मैगज़ीन निकाल कर पढ़ने लगी नवयुवकों का झुंड जो शायद किसी कैम्प जा रहे थे, के हँसी – मजाक , चुटकुले उसके हिम्मत को और भी तोड़ रहे थे ।

रूबिना के भय और घबराहट के बीच अनचाही सी रात धीरे – धीरे उतरने लगी।

सहसा सामने के सीट पर बैठे लड़के ने कहा —

"हेलो , मैं एहसान और आप ? "

भय से पीली पड़ चुकी रुबिना ने कहा –"जी मैं ''''"

"कोई बात नहीं , नाम मत बताइये ।

वैसे कहाँ जा रहीं हैं आप ?"

रुबिना ने धीरे से कहा–"इलाहबाद"

"क्या इलाहाबाद' ?

वो तो मेरा नानी -घर है।

इस रिश्ते से तो आप मेरी बहन लगीं ।

खुश होते हुए एहसान ने कहा ।

और फिर इलाहाबाद की अनगिनत बातें बताता रहा कि उसके नाना जी काफी नामी व्यक्ति हैं ,

उसके दोनों मामा सेना के उच्च अधिकारी हैं और ढेरों नई – पुरानी बातें ।

रुबिना भी धीरे – धीरे सामान्य हो उसके बातों में रूचि लेती रही ।

रुबिना रात भर एहसान जैसे भाई के महफूज़ साए के ख्याल से सोती रही

सुबह रुबिना ने कहा – "लीजिये मेरा पता रख लीजिए , कभी नानी घर आइये तो जरुर मिलने आइयेगा ।"

"कौन सा नानी घर बहन ?

वो तो मैंने आपको डरते देखा तो झूठ – मूठ के रिश्ते गढ़ता रहा ।

मैं तो पहले कभी इलाहबाद आया ही नहीं ।"

"क्या'.. ?" — चौंक उठी रुबीना ।

"बहन ऐसा नहीं है कि सभी लड़के बुरे ही होते हैं,

कि किसी अकेली लड़की को देखा नहीं कि उस पर गिद्ध की तरह टूट पड़ें ।

हम में ही तो पिता और भाई भी होते हैं ।"कह कर प्यार से उसके सर पर हाथ रख मुस्कुरा उठा एहसान ।

रुबिना एहसान को देखती रही जैसे कि कोई अपना भाई उससे विदा ले रहा हो रुबिना की आँखें गीली हो चुकी थी'तभी जाते जाते एहसान ने रुबीना से कहा, और हा बहन मेरा नाम एहसान नही दीपक है'.!

काश इस संसार मे सब ऐसे हो जाये न कोई अत्याचार, न व्यभिचार, भय मुक्त समाज का स्वरूप हमारा देश, हमारा प्रदेश, हमारा शहर, हमारा गांव जहाँ सभी बहन ,बेटियों,खुली हवा में सांस ले सकें निर्भय होकर कहीं भी कभी भी आ जा सके'.!!

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब**

# शिक्षा सुधार में निजी स्कूलों को भी देना होगा योगदान

विजय गर्ग



आजादी के बाद से भारत की स्कूली शिक्षा प्रणाली में कई तरह के सुधार हुए हैं, फिर भी छात्रों में सीखने का संकट बना हुआ है। बेशक शिक्षा की पहुंच बढ़ी है, लेकिन बुनियादी साक्षरता अब भी कम है। शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) फिर से बता रही है कि कक्षा पांच के कमोबेश आधे बच्चे दूसरी कक्षा की सरल पाठ्य सामग्री बहुत मुश्किल से पढ़ पाते हैं। चीन ने जहां 20वीं सदी में दशकों तक प्राथमिक शिक्षा में किए गए रणनीतिक निवेश का लाभ उठाया है, वहीं भारत अब तक स्कूली शिक्षा सुधार के लिए डाटा-आधारित नजरिया नहीं अपना सका है। 2009 से चल रहे अंतरराष्ट्रीय छात्र मूल्यांकन कार्यक्रम (पीआईएसए) जैसे वैश्विक मूल्यांकनों से दूरी भारत को उस मूल्यांकन से दूर कर देता है, जिसकी हमें जरूरत है। जाहिर है, मूल्यांकन और पाठ्यक्रम को सही करने के किसी व्यवस्थित नजरिये के बिना कोई भी ढांचागत बदलाव दूर की कौड़ी साबित होगा।

सुखद बात है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी), 2020 इन कमियों को स्वीकार करती है और इसमें कई महत्वपूर्ण सुधार बताए भी गए हैं। हमें यह समझना ही होगा कि ऐसी शिक्षा प्रणाली, जो बुनियादी व पारिस्थितिकी तंत्र के स्तर पर संघर्षरत हो, उस तरह के बदलाव नहीं ला सकती, जिसकी जरूरत हमें विकसित भारत के लक्ष्य तक पहुंचने में है

इस सूरतेहाल में निजी स्कूलों की भूमिका काफी बढ़ गई है। राज्य के धीरे-धीरे पीछे हटने के साथ ही निजी संस्थानों ने इस रिक्तता को भरने का काम किया है। आज कई राज्यों में 50 फीसदी से अधिक बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते हैं। हालांकि, यह क्षेत्र अब भी बंटा हुआ है, जिसके कारण नवाचार का प्रसार सीमित हो रहा है। स्कूल सहयोग करने के बजाय प्रतिस्पर्द्धा करते हैं और अक्सर मुट्ठी भर संस्थानों तक सफल मॉडल सिमटकर रह जाता है। मगर कई निजी स्कूलों ने बहुभाषी शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय पाठ्यक्रम और वैश्विक संपर्क की शुरुआत भी की है, जिससे छात्रों को एक-दूसरे से जुड़ी दुनिया के लिए तैयार किया जा रहा है। इतना ही नहीं, शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली टेक कंपनियों के सहयोग से कक्षाओं को ज्यादा आकर्षक, व्यक्तिगत और भविष्यपरक बनाया गया है। हालांकि, ये लाभ भी समान रूप से सबको उपलब्ध नहीं हैं, मुख्य रूप से शहरी और महंगे स्कूल ही ऐसी सुविधाएं मुहैया कराते हैं। ऐसे में, उद्देश्य और जिम्मेदारी को परिभाषित करने, विश्वास को मजबूत बनाने और डाटा-आधारित सरकारी-निजी सहयोग को आगे बढ़ाने की रणनीति खासा महत्वपूर्ण बन जाती है।

सरकारें अक्सर दीर्घकालिक ढांचागत सुधार को प्राथमिकता नहीं देतीं। निजी स्कूलों को यहीं पर आगे आना चाहिए। उनको न सिर्फ अपना संस्थान बेहतर बनाना चाहिए, बल्कि व्यापक पारिस्थितिकी तंत्र को आकार देने में भी मदद करनी चाहिए। बेशक, वे सामाजिक उद्यम के रूप में संचालित होती हैं, पर ज्यादातर स्कूलों के पास बदलाव लाने के लिए जरूरी संसाधन मौजूद हैं। उन्हें आर्थिक हितों से परे जाकर जिम्मेदारी की भावना के साथ काम करना चाहिए।

इसी तरह, तमाम योगदानों के बावजूद निजी स्कूलों को संदेह की नजर से देखा जाता है। यह नजरिया, जो कई मामलों में सही भी है, उन्हें फायदे के आधार पर चलने वाली संस्था के रूप में पेश करता है। इतिहास हमें यह बताता है कि निजी पहल ने अनेक क्षेत्रों में नवाचार को आगे बढ़ाया है। ऐसे में, स्कूली तंत्र को भला क्यों अपवाद बनाकर रखा जाए? हमें राज्य, निजी स्कूलों और एड-टेक कंपनियों में सामंजस्य के तरीके भी बदलने होंगे। हमें प्रदर्शन और सामूहिक जवाबदेही पर आधारित साझेदारी की जरूरत है। राज्य ऐसे मॉडल बना सकते हैं, पर निजी स्कूलों को भी सीखने की समझ बढ़ाने, योग्यता-आधारित शिक्षा पर जोर देने और रोजगार संबंधी क्षमता पैदा करने को प्राथमिकता देनी चाहिए। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए एआई का भी इस्तेमाल करना चाहिए।

जाहिर है, हमें तत्काल कदम उठाने होंगे। अगर हमें 2047 तक विकसित भारत का लक्ष्य हासिल करना है, तो स्कूली शिक्षा को फिर से परिभाषित करना होगा। इसमें निजी स्कूलों की भूमिका नवाचार, डाटा आधारित फैसले लेने और व्यापक परिवर्तन के केंद्र की होनी चाहिए।

# अल्ट्रा प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ के खतरे

विजय गर्ग

**अगर आप रेल या सड़क से लंबी यात्रा कर रहे हों या फिर कहीं घूमने गए हों और बीच सफ़र में भूख लग जाए तो पेट भरने के लिए दाल, चावल या रोटी जैसे विकल्पों की तुलना में आपको चिप्स, बिस्किट और कोल्ड ड्रिंक्स जैसे भरपूर विकल्प मिल जाएंगे.**

कई बार हम यूं ही टाइम पास करने के लिए या फिर पेट भरा होने के बावजूद स्वाद की वजह से भी इन्हें खाते हैं. लेकिन क्या आप जानते हैं कि खाने-पीने की पारंपरिक चीज़ों की जगह खाए जाने वाले ये स्वादिष्ट विकल्प 'अल्ट्रा प्रोसेस्ड फ़ूड' कहलाते हैं और इनका ज़्यादा इस्तेमाल सेहत के लिए हानिकारक होता है?

यही नहीं, विशेषज्ञों का कहना है कि इन्हें कुछ इस तरह से तैयार किया जाता है ताकि इन्हें खाने में मज़ा आए और हम इनके आदी हो जाएं.

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) और इंडियन काउंसिल फ़ॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशन (आईसीआरआईईआर) की हाल ही में आई एक रिपोर्ट में कहा गया है कि पिछले 10 सालों में भारत में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फ़ूड के बाज़ार में तेज़ी से बढ़ोतरी हुई है.

**क्या होता है अल्ट्रा प्रोसेस्ड फ़ूड**

वह अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड का मतलब कुछ इस तरह बताते हैं, "सरल शब्दों में समझें तो अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड वह खाद्य सामग्री है, जिसे आप आमतौर पर अपने किचन में नहीं बना सकते. यह सामान्य खाने की तरह नहीं दिखती. जैसे कि पैकेट में आने वाले चिप्स, चॉकलेट, बिस्किट और बड़े पैमाने पर बनाए गए ब्रेड और बन वगैरह."

"हर समुदाय अपने स्वाद और पसंद के हिसाब से खाना तैयार करता है. इसे भी फूड प्रोसेसिंग यानी खाद्य प्रसंस्करण कहा जा सकता है. अगर हम दूध से दही बनाते हैं तो वो प्रोसेसिंग है. लेकिन अगर किसी बड़ी इंडस्ट्री में दूध से दही बनाया जाए और उसे स्वादिष्ट बनाने के लिए रंग, फ्लेवर, चीनी या कॉर्न सिरप डाला जाए तो यह अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड होगा."

"अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड वह खाद्य सामग्री है, जिसे आप आमतौर पर अपने किचन में नहीं बना सकते. यह सामान्य खाने की तरह नहीं दिखती.",

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड में डाली जाने वाली ये चीज़ें उनकी पोषकता नहीं बढ़ातीं बल्कि उन्हें इसलिए डाला जाता है ताकि आप इन्हें खाते रहें, इनकी बिक्री होती रहे और ज्यादा मुनाफ़ा हो. ऐसे में इन्हें सिर्फ़ बड़े उद्योग ही तैयार कर सकते हैं.

अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड को कॉस्मैटिक फ़ूड भी कहा जाता है. विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक़, अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड ऐसी सामग्री से बनाए जाते हैं जिन्हें औद्योगिक तकनीकों और प्रक्रियाओं से तैयार किया जाता है.

**डब्लयूएचओ के अनुसार, अल्ट्रा प्रोसेस्ड चीज़ों के कुछ उदाहरण हैं-**

**कार्बोनेटेड कोल्ड ड्रिंक**

मीठे, फ़्रैट वाले या नमकीन स्नैक्स, कैंडी

बड़े पैमाने पर तैयार ब्रेड, बिस्किट, पेस्ट्री, केक, फ्रूट योगर्ट

रेडी टू ईट मीट, चीज़, पास्ता, पिज़्ज़ा, फ़िश, सॉसेज, बर्गर, हॉट डॉग

**इन्स्टेंट सूप, इन्स्टेंट नूडल्स, बेबी फॉर्मूला**

विशेषज्ञों के अनुसार इन सब चीज़ों में औद्योगिक प्रक्रिया के तहत चीनी, नमक, फ़ैट्स (वसा) या इमल्सिफ़ाई (दो अलग-अलग तरह के पदार्थों को मिलाना) करने वाले केमिकल और प्रिज़र्वेटिव डाले जाते हैं, जिन्हें हम अमूमन अपने किचन में इस्तेमाल नहीं करते.

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ न्यूट्रिशन में पूर्व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वी सुदर्शन राव बताते हैं कि जब सभ्यता की शुरुआत हुई तभी से प्रिज़र्वेशन (संरक्षण) का इस्तेमाल होने लगा.

इसका मुख्य काम भोजन को लंबे समय के इस्तेमाल के लिए बैक्टीरिया और फफूंद आदि से ख़राब होने से बचाना था.

"हमारे पूर्वजों ने ये जाना कि अगर खाद्य पदार्थों से नमी को निकाल लिया जाए तो उसे प्रिज़र्व किया जा सकता है. इसलिए सबसे पहले खाद्य पदार्थों को धूप में सुखाने से शुरुआत हुई, क्योंकि उन्होंने जाना कि सूखे हुए खाद्य पदार्थों को लंबे समय तक इस्तेमाल किया जा सकता है."

हैदराबाद स्थित, इंडियन कॉउंसिल फ़ॉर मेडिकल रिसर्च में वैज्ञानिक रह चुके डॉ. वी सुदर्शन राव बताते हैं कि प्रिज़र्वेशन के लिए नमक, शुगर का उपयोग होने लगा, जिन्हें आप प्रिज़र्वेटिव कह सकते हैं. लेकिन अब नई तकनीक आने की वजह से प्रिज़र्वेशन में कई बदलाव आए हैं.

इसी बात को समझाते हुए गुजरात के राजकोट में नगरपालिका निगम के स्वास्थ्य विभाग में डॉ . जयेश वकानी बताते हैं, "उदाहरण के तौर पर आप अचार लीजिए. उसमें अधिक नमक, शुगर, सिरका और सिट्रिक एसिड को इस्तेमाल किया जाता है, जो प्राकृतिक तौर पर प्रिज़र्वेटिव का काम काम करते हैं. अगर कृत्रिम प्रिज़र्वेटिव इस्तेमाल करने होते हैं तो भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ़एसएसआई) के मानकों के अनुसार उन्हें इस्तेमाल करना होता है."

खाद्य पदार्थों में होने वाले प्रिज़र्वेटिव, जिनमें कई प्रकार के एंटीमाइक्रोबियल, एंटीऑक्सिडेंट, सॉर्बिक एसिड आदि शामिल हैं, उनका हर खाद्य सामग्री में इस्तेमाल नहीं हो सकता.

खाद्य पदार्थों में बैक्टीरिया को रोकने के लिए एंटीमाइक्रोबियल प्रिज़र्वेटिव का उपयोग होता है. वहीं तेल में एंटीऑक्सिडेंट, जबकि सॉर्बिक एसिड प्रिज़र्वेटिव का इस्तेमाल फफूंद से बचाने के लिए होता है.

प्रिज़र्वेटिव का इस्तेमाल केवल खाद्य सामग्रियों में ही नहीं होता,



बल्कि कॉस्मेटिक्स जैसे क्रीम, शैम्पू, सनस्क्रीन में भी होता है, ताकि इन्हें लंबे समय तक उपयोग किया जा सके.

लेकिन क्या ये हानिकारक हो सकते हैं? इस सवाल का जवाब देते हुए डॉ. जयेश वकानी कहते हैं, "किसी भी पदार्थ या खाद्य सामग्री में प्रिज़र्वेटिव का उपयोग सुरक्षा मानकों को ध्यान में रखकर किया जाता है और जितनी मात्रा की ज़रूरत हो, केवल उतना होता है, क्योंकि ज़्यादा इस्तेमाल का कोई फ़ायदा नहीं होता."

डॉ. वी सुदर्शन राव कहते हैं कि भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफ़एसएसआई) खाद्य सामग्रियों में इस्तेमाल होने वाले प्रिज़र्वेटिव की जाँच करता है और ये पाया गया है कि ६0-70 साल तक लेने पर भी इनका शरीर को कोई नुक़सान नहीं होता.

उपभोक्ताओं को जागरूक करने वाली संस्था 'कंज़्यूमर वॉइस' के सीईओ आशिम सान्याल कहते हैं कि खाने-पीने की चीज़ों को लंबे समय तक ख़राब होने से बचाने के अलावा टेस्ट बढ़ाने और रंग डालकर आकर्षक बनाने में भी प्रिज़र्वेटिव को इस्तेमाल किया जाता है.

ये प्रिज़र्वेटिव कृत्रिम होते हैं और सीमित मात्रा में ही डाले जाते हैं. लेकिन अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड को ख़राब होने से बचाने के लिए जो तरीक़े अपनाए जाते हैं, उससे ये बेहद हानिकारक बन जाते हैं.

कि खाद्य पदार्थों में प्रिज़र्वेटिव के इस्तेमाल को अलग करके नहीं देखा जा सकता बल्कि इसे अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड से जोड़कर देखा जाना चाहिए.

"डब्लयूएचओ भी कहता है कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड प्रिज़र्वेटिव और केमिकल से भरपूर होते हैं. इनकी आदत डलवाने के लिए इनमें कुछ एडिक्टिव (लत लगाने वाले पदार्थ) भी डाले जाते हैं. सब्ज़ी, दाल आदि बनाना भी प्रोसेस्ड फूड कहलाता है लेकिन अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड वो होता है, जिसे टेक्निकल इनोवेशन के ज़रिए प्रयोगशाला में नए रूप में ढाला जाता है. इसमें शुगर, सैचुरेटेड फैट्स आदि के अलावा प्रिज़र्वेटिव के मिश्रण बहुत ज़्यादा मात्रा में होते हैं.

उनके अनुसार, "डब्लयूएचओ भी कहता है कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड प्रिज़र्वेटिव और केमिकल से भरपूर होते हैं. इनमें प्रिज़र्वेटिव इसलिए डाले जाते हैं ताकि लंबे समय तक इस्तेमाल किया जा सके. इनकी आदत डलवाने के लिए इनमें कुछ एडिक्टिव भी डाले जाते हैं."

आशिम सान्याल कहते हैं कि उदाहरण के तौर पर चिप्स, कोल्ड ड्रिंक या अन्य खाद्य पदार्थों की बच्चों से लेकर बुज़ुर्गों तक को आदत पड़ जाती है और यही आदत डलवाने के लिए ऐसे पदार्थ डाले जाते है.

उनके अनुसार, "ये वैज्ञानिक तौर पर भी साबित हो चुका है कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड बहुत सी बीमारियों की जड़ बन चुका है. हमने जब भी जाँच की तो पाया कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड में प्रिज़र्वेटिव और अन्य केमिकल की मात्रा काफ़ी ज़्यादा होती है."

डॉ. आशिम सान्याल कहते हैं, "अल्ट्रा प्रोसेसिंग में पोषक तत्व ख़त्म हो जाते हैं. इस खाने में कोई गुणवत्ता नहीं रहती. जैसे तंबाकू या सिगरेट की लत लगती है, वैसे ही ऐसे भोजन के भी एडिक्टव होने के कारण लत पड़ जाती है."

विशेषज्ञों का कहना है कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड के साथ दिक्कत यह है कि हमें पता ही नहीं चलता कि इन्हे कितना ज़्यादा खाया जा रहा है.

डॉक्टर अरुण गुप्ता कहते हैं, "खाना खाते वक्त हमारा दिमाग हमें सिग्नल देता है कि अब पेट भर गया. लेकिन अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड को कुछ इस तरीक़े से तैयार किया जाता है कि आपको इन्हें खाने में मज़ा आए. जब आप इसे खा रहे होते हैं तो दिमाग़ से ऐसा सिग्नल नहीं आता कि पेट भर गया और आप इसे खाते चले जाते हैं."

अगर कृत्रिम प्रिज़र्वेटिव का इस्तेमाल मानकों से ज़्यादा मात्रा और लंबे समय तक किया जाए तो शरीर में कैंसर भी बन सकता है.

कई बार खाद्य पदार्थों की शेल्फ़ लाइफ़ बढ़ाने के लिए ऐसे प्रिज़र्वेटिव डाले जाते हैं, जिनसे नुक़सान हो सकता है.

वह कहते हैं, "इनमें प्रिज़र्वेटिव और कलरिंग एजेंट जैसे केमिकल होते हैं, जिनसे शरीर में एलर्जी हो सकती है या फिर शरीर की इम्युनिटी कमज़ोर हो जाती है. भले ही तुरंत पता न चले, लेकिन लंबे समय में ये ख़तरनाक साबित हो सकते हैं."

जहां एक ओर देश कुपोषण की चुनौती झेल रहा है, वहीं मोटापे की बढ़ती समस्या का सामना भी कर रहा है. मोटापा बढ़ाने में अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड भी भूमिका निभा रहे है

"कभी कभार इन्हें खाया जा सकता है, लेकिन जब हम इनका इस्तेमाल अपने भोजन के दस फ़ीसदी से ज़्यादा करने लगते हैं, यानी कि २000 कैलोरी में २00 कैलोरी से ज़्यादा अगर अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड से आ रही हों तो नुक़सान की शुरुआत हो जाती है."

सबसे पहले तो वज़न बढ़ने लगता है, जो ख़ुद में कई बीमारियों को आमंत्रण देता है. इससे डायबिटीज़, ब्लड प्रेशर, दिल और किडनी से जुड़ी बीमारियाँ और यहा तक कि कैंसर होने का ख़तरा बढ़ जाता है.

, "हालिया शोध ये भी इशारा करते हैं कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड इस्तेमाल करने से डिप्रेशन और एंग्ज़ाइटी भी हो सकती है. ऐसा क्यों है, इस पर अभी शोध चल रहे हैं."

आमतौर पर ये देखा गया है कि हर उम्र और वर्ग के लोग अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड खाते हैं, लेकिन भारत के लिहाज से देखें तो बच्चों को ज़्यादा ख़तरा है, क्योंकि आमतौर पर बच्चों को मीठी चीज़ें पसंद होती हैं. वे चिप्स, कैंडी, चॉकलेट, पैक्ड जूस और कोल्ड ड्रिंक्स खाना पसंद करते हैं.

संबंध में ज़्यादातर शोध वयस्कों पर हुए हैं, लेकिन २017 में हुए एक शोध में पता चला था कि क़रीब पचास फ़ीसदी बच्चों को अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड से नुक़सान हो रहा है और ये उन्हें मोटापे की ओर धकेल रहा है.

क्या है बचने का रास्ता?

जानकार बताते हैं कि अल्ट्रा प्रोसेस्ड फूड खाने की आदत से बचना चाहिए.

अगर आप एक हफ़्ते में चार बार ऐसा भोजन या खाद्य पदार्थ खाते हैं तो धीरे-धीरे इसके सेवन में कमी लाएं.

लोगों को फूड लेबल के बारे में जागरूक करने की भी ज़रूरत है. इसके अलावा, ऐसे खाद्य पदार्थ बनाने वाली कंपनियों को भी सामग्रियों के फ्रंट पर प्रमुखता से जानकारी देनी चाहिए.

, "हम फ्रंट ऑफ़ पैक न्यूट्रिशनल लेबलिंग पर ज़ोर दे रहे हैं, ताकि लेबल में सामने की ओर ये चीज़ें बताई जाएं कि इसमें शुगर ज़्यादा है, नमक ज़्यादा है या फ़ैट ज़्यादा है. इन मुख्य चीज़ों पर ध्यान दिया जाएगा तो 80 फ़ीसदी समस्या पर रोक लग सकेगी. अभी ये सारी जानकारियाँ लेबल के पीछे लिखी होती हैं और इतनी छोटी होती हैं कि ग्राहकों का ध्यान ही नहीं जाता."

अमेरिकी देशों ने फ्रंट लेबलिंग शुरू की है और इससे लोगों की खाने की आदत में बदलाव आया है, क्योंकि वे जागरूक हुए हैं. वहीं इस बात पर भी बहस होती है कि अगर लेबलिंग में जानकारी दी गई तो इससे ब्रिकी पर असर पड़ेगा. इसके जवाब में आशिम सान्याल कहते है कि सिगरेट और तंबाकू पर चेतावनी डाली गई है, क्या इससे ऐसे उत्पादों की ब्रिकी बंद हो गई?

वहीं, डॉक्टर गुप्ता कहते हैं कि इस मामले में सबसे बड़ी भूमिका सरकार की है.

"सरकार की ज़िम्मेदारी सबसे बड़ी है. लोग क्या खा रहे हैं, उन्हें पता होना चाहिए. इसके अलावा, मीडिया, समाज और संस्थाओं का भी फ़र्ज़ है कि लोगों को इस बारे में जागरूक करें. फिर लोगों की अपनी मर्ज़ी है कि क्या करना है."

जिस तरह से दो साल तक के शिशुओं के लिए बेबी फूड का विज्ञापन करने पर भारत में रोक लगाई गई है, उसी तरह ज़्यादा नमक, चीनी और फ़ैट वाली सामग्रियों को लेकर भ्रामक प्रचार पर भी रोक लगनी चाहिए.

वह कहते हैं, "लोगों को पता चलना चाहिए कि कौन सी चीज़ हानिकारक है. हो सकता है कि फिर भी लोग खाएं, लेकिन उन्हें पता होगा कि इन चीज़ों को कम खाना चाहिए."

# नवरात्रि विशेष : इन नौ औषधियों में वास है नवदुर्गा का

मां दुर्गा नौ रूपों में अपने भक्तों का कल्याण कर उनके सारे संकट हर लेती हैं। इस बात का जीता जागता प्रमाण है, संसार में उपलब्ध वे औषधियां,जिन्हें मां दुर्गा के विभिन्न स्वरूपों के रूप में जाना जाता है। नवदुर्गा के नौ औषधि स्वरूपों को सर्वप्रथम मार्कण्डेय चिकित्सा पद्धति के रूप में दर्शाया गया। चिकित्सा प्रणाली का यह रहस्य वास्तव में ब्रह्माजी ने दिया था जिस बारे में दुर्गा कवच में संदर्भ मिल जाता है। ये औषधियां समस्त प्राणियों के रोगों को हरने वाली हैं। शरीर की रक्षा के लिए कवच समान कार्य करती हैं। इनके प्रयोग से मनुष्य अकाल मृत्यु से बचकर सौ वर्ष जी सकता है। आइए जानते हैं दिव्य गुणों वाली नौ औषधियों को जिन्हें नवदुर्गा कहा गया है।

१ प्रथम शैलपुत्री यानि हरड़ नवदुर्गा का प्रथम रूप शैलपुत्री माना गया है। कई प्रकारकी समस्याओं में काम आने वाली औषधि हरड़, हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप हैं। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है, जो सात प्रकार की होती है। इसमें हरीतिका ( हरी ) भय को हरने वाली है।

पथया - जो हित करने वाली है।
कायस्थ - जो शरीर को बनाए रखने वाली है।
अमृता - अमृत के समान
हेमवती - हिमालय पर होने वाली।
चेतकी -चित्त को प्रसन्न करने वाली है।
श्रेयसी ( यशदाता )- शिवा यानी कल्याण करने वाली।

२ द्वितीय ब्रह्मचारिणी यानि ब्राह्मी ब्राह्मी, नवदुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। यह आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली, रूधिर विकारों का नाश करने वालीऔर स्वर को मधुर करने वाली है।

इसलिए ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है। यह मन एवं मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है और गैस व मूत्र संबंधी रोगों की प्रमुख दवा है। यह मूत्र द्वारा रक्त विकारों को बाहर निकालने में समर्थ औषधि है। अतः इन रोगों से पीड़ित व्यक्ति को ब्रह्मचारिणी कीआराधना करना चाहिए।

तृतीय चंद्रघंटा यानि चन्दुसूर नवदुर्गा का तीसरा रूप है चंद्रघंटा, इसे चन्दुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है, जो लाभदायक होती है।

यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है, इसलिए इसे चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली, हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है। अतः इस बीमारी से संबंधित रोगी को चंद्रघंटा की पूजा करना चाहिए।

४ चतुर्थ कुष्माण्डा यानि पेठा नवदुर्गा का चौथा रूप कुष्माण्डा है। इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है, इसलिए इस रूप को पेठा कहते हैं।

इसे कुम्हड़ा भी कहते हैं जो पुष्टिकारक, वीर्यवर्धक व रक्त के विकार को ठीक कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिकरूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत समान है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर हृदय रोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त पित्त एवं गैस को दूर करता है। इन बीमारी से पीड़ितव्यक्ति को पेठा का उपयोग के साथ कुष्माण्डादेवी की आराधना करना चाहिए।

५ पंचम स्कंदमाता यानि अलसी नवदुर्गा का पांचवा रूप स्कंदमाता है जिन्हें पार्वती एवं उमा भी कहते हैं। यह औषधि के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त, कफ, रोगों की नाशक औषधि है।

"अलसी नीलपुष्पी पावर्तती स्यादुमा क्षुमा।
अलसी मधुरा तिक्ता स्त्रिग्धापाके कदुर्गरुः।।
उष्णा दृष शुकवातन्धी कफ पित्त विनाशिनी।₹

इस रोग से पीड़ित व्यक्ति ने स्कंदमाता की आराधना करना चाहिए।

६ षष्ठम कात्यायनी यानि मोइया नवदुर्गा का छठा रूप कात्यायनी है। इसे आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका। इसके अलावा इसे मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त, अधिक विकार एवं कंठ के रोग का नाश करती है।

इससे पीड़ित रोगी को इसका सेवन व कात्यायनी की आराधना करनी चाहिए।

७ सप्तम कालरात्रि यानि नागदौन दुर्गा का सप्तम रूप कालरात्रि है जिसे महायोगिनी, महायोगीश्वरी कहा गया है।

यह नागदौन औषधि केरूप में जानी जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है। इस पौधे को व्यक्ति अपने घर में लगाने पर घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली एवं सभी विषों का नाश करने वाली औषधि है। इस कालरात्रि की आराधना प्रत्येक पीड़ित व्यक्ति को करना चाहिए।

८ अष्टम महागौरी यानि तुलसी नवदुर्गा का अष्टम रूप महागौरी है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति औषधि के रूप में जानता है क्योंकि इसका औषधि नाम तुलसी है जो प्रत्येक घर में लगाई जाती है। तुलसी सात प्रकार की होती है- सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र।

ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती है एवं हृदय रोग का नाश करती है।

"तुलसी सुरसा ग्राम्या सुलभा बहुमंजरी।
अपेतराक्षसी महागौरी शूलघ्नी देवदुन्दुभिः
तुलसी कटुका तिक्ता हुध उष्णाहाहपित्तकृत।
मरुदनिप्रदो हध तीक्षणाष्णः पित्तलो लघुः।"

इस देवी की आराधना हर सामान्य एवं रोगी व्यक्ति को करना चाहिए।

९ नवम सिद्धिदात्री यानि शतावरी नवदुर्गा का नवम रूप सिद्धिदात्री है, जिसे नारायणी याशतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल एवं वीर्य के लिए उत्तम औषधि है। यह रक्त विकार एवं वात पित्त शोध नाशक और हृदय को बल देने वाली महाऔषधि है।

सिद्धिदात्री का जो मनुष्य नियमपूर्वक सेवन करता है। उसके सभी कष्ट स्वयं ही दूर हो जाते हैं। इससे पीड़ित व्यक्ति को सिद्धिदात्री देवी की आराधना करना चाहिए। इस प्रकार प्रत्येक देवी आयुर्वेद की भाषा में मार्कण्डेय पुराण के अनुसार नौ औषधि के रूप में मनुष्य की प्रत्येक बीमारी को ठीक कर रक्त का संचालन उचित एवं साफ कर मनुष्य को स्वस्थ करती है। अतः मनुष्य को इनकी आराधना एवं सेवन करना चाहिए।

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
सर्व मंगलम मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्रयम्ब्के गौरी नारायणी नमो स्तुते।।

# यह हैं प्रमुख यज्ञ, राजा दशरथ को पुत्रेष्टि यज्ञ से मिली थी संतान

परिवहन विशेष न्यूज

हिंदू धर्म में यज्ञ की परंपरा वैदिक काल से चली आ रही है। धर्म ग्रंथों में मनोकामना पूर्ति व किसी बुरी घटना को टालने के लिए यज्ञ करने के कई प्रसंग मिलते हैं।

रामायण व महाभारत में ऐसे अनेक राजाओं का वर्णन मिलता है, जिन्होंने अनेक महान यज्ञ किए थे। देवताओं को प्रसन्न करने के लिए भी यज्ञ किए जाने की परंपरा है। आज हम आपको प्रमुख यज्ञ, उनसे जुड़ा विज्ञान आदि के बारे में बता रहे हैं। जानिए धर्म ग्रंथों में किन यज्ञों के बारे में बताया गया है-

**पुत्रेष्ठि यज्ञ** :- यह यज्ञ पुत्र प्राप्ति की कामना से किया जाता है। महाराज दशरथ ने यही किया था, परिणामस्वरूप श्रीराम सहित चार पुत्र जन्मे। राजा दशरथ का यह यज्ञ ऋषि ऋष्यशृंग ने संपन्न करवाया था।

**अश्वमेघ यज्ञ** :- इस यज्ञ का आयोजन चक्रवर्ती सम्राट बनने के उद्देश्य से किया जाता था। इस यज्ञ में एक राजा अपने घोड़े को अन्य राज्यों की सीमाओं में भेजता था। जिन राज्यों से वह घोड़ा बिना रोके आ जाता था, समझा जाता था कि उस राज्य के राजा ने आत्म समर्पण कर दिया है और जो राजा उस घोड़े को पकड़ लेता था, उसे चक्रवर्ती सम्राट बनने की इच्छा रखने वाले राजा से युद्ध करना पड़ता था। धर्म ग्रंथों के अनुसार, जो सौ बार यह यज्ञ करता था, वह इंद्र का पद प्राप्त करता है।

**राजसूय यज्ञ** :- यह यज्ञ अपनी कीर्ति और राज्य की सीमाएं बढ़ाने के लिए किसी राजा द्वारा किया जाता था। इसके अंतर्गत कोई पराक्रमी राजा स्वयं या अपने अनुयायियों को अन्य राज्यों से कर ( धन आदि ) लेने भेजता था। जो आसानी से कर दे देता था, उससे मित्रतापूर्वक व्यवहार किया जाता था और जो कर नहीं देता था उसके साथ युद्ध कर उससे जबर्दस्ती कर वसूला जाता था।

**विश्वजीत यज्ञ** :- विश्व को जीतने के उद्देश्य से। सभी कामनाएं पूरी करता है। श्रीराम के पूर्वज महाराज रघु ने किया था।

**सोमयज्ञ** :- सभी के कल्याण की कामना से। आधुनिक युग में सर्वाधिक होते हैं।

**पर्जन्य यज्ञ** :- यह यज्ञ बारिश की कामना से किया जाता है। यह यज्ञ आज भी किया जाता है। इसके अलावा विष्णु यज्ञ, शतचंडी यज्ञ, रूद्र यज्ञ, गणेश यज्ञ आदि किए जाते हैं। ये सभी परंपरा में हैं।

**क्यों किए जाते हैं यज्ञ ?**

ग्रंथों में यज्ञ की महिमा खूब गाई गई है। वेद में भी यज्ञों की संपूर्ण जानकारी है। यज्ञ से भगवान प्रसन्न होते हैं, ऐसा धर्मशास्त्रों में कहा गया है। ब्रह्मा ने मनुष्य के साथ ही यज्ञ की भी रचना की और मनुष्य से कहा इस यज्ञ के द्वारा ही तुम्हारी उन्नति होगी। यज्ञ तुम्हारी हर इच्छा व आवश्यकताओं को पूरी करेगा। तुम यज्ञ से देवताओं को खुश करो, वे तुम्हारी उन्नति करेंगे।

धर्म ग्रंथों के अनुसार, यज्ञ के माध्यम से हर मनोकामना पूरी हो सकती है। धन प्राप्ति, कर्मों के प्रायश्चित, अनिष्ट को रोकने के लिए, दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने के लिए, रोगों के निवारण के लिए यज्ञ करने का विधान है। देवताओं को प्रसन्न करे तथा धन-धान्य की अधिक उपज आदि के लिए भी यज्ञ किए जाते हैं। गायत्री उपासना में भी यज्ञ आवश्यक है। गायत्री को माता और यज्ञ को पिता कहा गया है। इन्हीं के संयोग से मनुष्य का आध्यात्मिक जन्म होता है।

**भगवान श्रीराम** :- भगवान श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञकिया था। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, श्रीराम राजसूय यज्ञ करना चाहते थे, भरत भी इसके लिए सहमत थे, लेकिन लक्ष्मण ने श्रीराम से कहा कि अश्वमेध यज्ञ की महिमा कहीं अधिक है। लक्ष्मण के परामर्श पर ही श्रीराम ने अश्वमेध यज्ञकिया था।

**धर्मराज युधिष्ठिर** :- युधिष्ठिर ने राजसूय व अश्वमेध दोनों यज्ञ किए थे। जब पांडवों ने इंद्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया और वहां धर्मपूर्वक शासन करने लगे। उसके बाद युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ किया था। महाभारत युद्ध समाप्त होने के बाद



युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण के कहने पर अश्वमेध यज्ञ भी किया था।

**राजा श्वेतकि** :- महाभारत के अनुसार, श्वेतकि एक पराक्रमी और प्रसिद्ध राजा थे। वह यज्ञप्रेमी था, उसने अनेक बड़े-बड़े यज्ञ किए। वह इतने यज्ञ करते कि ब्राह्मण व पुरोहित भी कराते-कराते थक जाते और ऊब जाते थे। एक बार उन्होंने दुर्वासा ऋषि के द्वारा महान यज्ञ करवाया। पहले 12 और फिर 100 वर्ष के यज्ञ में दक्षिणा दे-देकर राजा ने ब्राह्मणों को तृप्त कर दिया। इस यज्ञ के फलस्वरूप ही राजा श्वेतकि को स्वर्ग की प्राप्ति हुई।

**राजा जनमेजय** :- अर्जुन के पोते जनमेजय ने अपने पिता परीक्षित की मृत्यु का बदला लेने के लिए सर्पयज्ञ किया था। जब जनमेजय को पता चला कि उसके पिता की मृत्यु तक्षक नाग द्वारा काटने से हुई तब उसने यह यज्ञ किया था। इस यज्ञ में अनेक सर्प जलकर भस्म हो गए थे। जनमेजय ने आस्तिक मुनि के कहने पर यह यज्ञ संपूर्ण नहीं किया था।

**राजा ययाति** :- महाभारत के अनुसार, राजा ययाति ने सौ राजसूय, सौ अश्वमेध, हजार पुंडरीक याग, सौ वाजपेय, हजार अतिरात्र याग तथा चातुर्मास्य और अग्निष्टोम आदि यज्ञ किए थे।

**राजा सुहोत्र** :- महाभारत के अनुसार, राजा सुहोत्र ने एक हजार अश्वमेध, सौ राजसूय तथा बहुत सी दक्षिणा वाले अनेक क्षत्रिय यज्ञ किए थे।

धर्म ग्रंथों के अनुसार, यज्ञ की रचना सर्वप्रथम परमपिता ब्रह्मा ने की। यज्ञ का संपूर्ण वर्णन वेदों में मिलता है। यज्ञ का दूसरा नाम अग्नि पूजा है। यज्ञ से देवताओं को प्रसन्न किया जा सकता है साथ ही मनचाहा फल भी प्राप्त किया जा सकता है।

धर्म ग्रंथों में अग्नि को ईश्वर का मुख माना गया है। इसमें जो कुछ खिलाया ( आहूति ) जाता है, वास्तव में ब्रह्मभोज है। यज्ञ के मुख में आहूति डालना, परमात्मा को भोजन कराना है। निःसंदेह यज्ञ में देवताओं की आवभगत होती है। गीता में कहा है-

अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमद्भवः॥

अर्थात- समस्त प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं और अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है। वर्षा यज्ञ से होती है और वह यज्ञ कर्म से होता है।

यज्ञ एक महत्वपूर्ण विज्ञान है। इसमें जिन वृक्षों की समिधाएं उपयोग में लाई जाती हैं, उनमें विशेष प्रकार के गुण होते हैं। किस प्रयोग के लिए किस प्रकार की सामग्री डाली जाती है, इसका भी विज्ञान है। उन वस्तुओं के मिश्रण से एक विशेष गुण तैयार होता है, जो जलने पर वायुमंडल में विशिष्ट प्रभाव पैदा करता है। वेद मंत्रों के उच्चारण की शक्ति से उस प्रभाव में और अधिक वृद्धि होती है।

जो व्यक्ति उस यज्ञ में शामिल होते हैं, उन पर तथा निकटवर्ती वायुमंडल पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिक अभी तक कृत्रिम वर्षा कराने में सफल नहीं हुए हैं, किंतु यज्ञद्वारा वर्षा के प्रयोग बहुधा सफल होते हैं। व्यापक सुख-समृद्धि, वर्षा, आरोग्य, शांति के लिए बड़े यज्ञों की आवश्यकता पड़ती है, लेकिन छोटे हवन भी हमें लाभान्वित करते हैं।

हवन यज्ञ का छोटा रूप है। किसी भी पूजा अथवा जाप आदि के बाद अग्नि में दी जाने वाली आहुति की प्रक्रिया हवन के रूप में प्रचलित है। यज्ञ किसी खास उद्देश्य से देवता विशेष को दी जाने वाली आहूति है। इसमें देवता, आहूति, वेद मंत्र, ऋत्विक, दक्षिणा अनिवार्य रूप से होते हैं। हवन हिंदू धर्म में शुद्धीकरण का एक कर्मकांड है। कुंड में अग्नि के माध्यम से देवता के निकट हवि पहुंचाने की प्रक्रिया को हवन कहते हैं।

हवि, हव्य अथवा हविष्य वह पदार्थ है, जिनकी अग्नि में आहूति दी जाती हैं। हवन कुंड में अग्नि प्रज्वलित करने के बाद इस पवित्र अग्नि में फल, शहद, घी, काष्ठ ( लकड़ी ) आदि पदार्थों की आहूति प्रमुख होती है। ऐसा माना जाता है कि यदि आपके आस-पास किसी बुरी आत्मा इत्यादि का प्रभाव है तो हवन प्रक्रिया इससे आपको मुक्ति दिलाती है। शुभकामना, स्वास्थ्य एवं समृद्धि इत्यादि के लिए भी हवन किया जाता है।

# उत्तम पति प्राप्त करने का साधन स्वरूप व्रत

एक बार स्वर्गकी अप्सराओंने देवर्षि नारदजीसे पूछा- 'देवर्षे ! आप ब्रह्माजीके पुत्र हैं। हमें उत्तम पति पानेकी अभिलाषा है। भगवान-नारायण हमारे प्राणपति हो सकें, इसके लिये आप हमलोगोंको कोई व्रत बतानेकी कृपा करें।'

नारदजीने कहा-प्रायः सबके लिये कल्याणदायक नियम यह है कि प्रश्न करनेके पूर्व प्रश्नकर्ता विनयपूर्वक प्रणाम करे, पर तुमलोगोंने इस नियमका पालन नहीं किया, क्योंकि तुम्हें युवावस्थाका गर्व है। फिर भी तुमलोग देवाधिदेव भगवान्-विष्णुके नामका कीर्तन करो और उनसे वर माँगो - 'प्रभो ! आप हमारे स्वामी होनेकी कृपा करें।' इससे तुम्हारा सम्पूर्ण मनोरथ सिद्ध होगा- इसमें कोई संशय नहीं है। साथ ही मैं एक व्रत भी बताता हूँ, जिसे करनेसे भगवान्-श्रीहरि स्वयं वर देनेके लिये उद्यत हो जाते हैं।

चैत्र और वैशाखमास के शुक्लपक्षमें जो द्वादशी तिथि है, उस दिन यह व्रत करना चाहिये। रातमें विधिवत भगवान्-श्रीहरिकी पूजा करे। बुद्धिमान्व्यक्तिको चाहिये कि भगवान्की प्रतिमाके ऊपर लाल फूलोंसे एक मण्डप बनवाये, नृत्य, गीत एवं वाद्यके साथ रातमे जागरण करे तथा 'ॐ भवाय नमः', 'ॐ अनङ्गाय नमः', 'ॐ कामाय नमः', 'ॐ सुशास्त्राय नमः', 'ॐ मन्मथाय नमः' तथा 'ॐ हरये नमः' कहकर क्रमशः भगवान्के सिर, कटि, भुजा, उदर एवं चरण आदिकी पूजा करे। फिर भगवान्को प्रणामकर रात्रि-जागरणकी विधि सम्पन्न करके प्रातःकाल भगवान्की वह प्रतिमा वेद-वेदांगके जानकार ब्राह्मणको दान कर दे।

अप्सराओ ! इस प्रकार व्रत करनेपर इच्छानुकूल भगवान्विष्णु अवश्य पतिरूपमें तुम्हें प्राप्त होंगे। इसके पश्चात्ईखके पवित्र रस तथा मल्लिका आदिके फूलोंसे उन देवेश्वरकी पूजा करना।

इस प्रकार कहकर देवर्षि नारदजी उसी क्षण वहाँसे चले गये। उन अप्सराओंने व्रतकी विधि सम्पन्न की फलस्वरूप स्वयं भगवान्-श्रीहरि उनपर सन्तुष्ट होकर कृष्णावतारमें उनके पति हुए।

**सौजन्य वराहपुराण**

# कितने आश्चर्य की बात है भारत के 29 राज्यों के नाम ""श्री. संत तुलसीदास"" के इक दोहे में समाई हुई है। आप भी जाने

कितने आश्चर्य की बात है भारत के 29 राज्यों के नाम "श्री. संत तुलसीदास" के इक दोहे में समाई हुई है। आप भी जाने

"राम नाम जपते
अत्रि मत गुसिआउ।
पंक में उगोहमि अहि
के छबि झाउ"।।

रा-राजस्थान
म-महाराष्ट्र
ना-नागालैंड
म-मणिपुर
ज जम्मू कश्मीर
प-पश्चिम बंगाल
ते-तेलंगाना
अ-असम
त्रि-त्रिपुरा
म-मध्यप्रदेश
त-तमिलनाडु
गु-गुजरात
सि-सिक्किम
आ- आंध्रप्रदेश
उ-उत्तर प्रदेश
पं-पंजाब
क-कर्नाटक
मे-मेघालय
उ-उत्तराखंड
गो-गोवा
ह-हरियाणा
मि-मिजोरम
अ-अरुणाचल प्रदेश
हि- हिमाचल प्रदेश
के-केरल
छ-छत्तीसगढ़
बि*-बिहार
झा-झारखंड
उ-उड़ीसा



**है ना अत्यंत आश्चर्यजनक**

# क्या आप जानते हैं 'स्वयं में ईश्वर को अनुभव करना ध्यान, दूसरे में ईश्वर को अनुभव करना प्रेम और सबमें ईश्वर को अनुभव करने को ज्ञान कहते है ?'

हृदय में स्थित सत चित आनंद स्वरूप ईश्वर के कारण हमें अपने होने का अनुभव हो रहा है। यह सर्वव्यापी है परंतु देह तक सीमित होने की प्रतीति के कारण यह अनुभव देहव्यापी है।

इसे अहंकार का अनुभव मानना भूल है।अनुभव अहंकार का नहीं होता। अहंकार मान्यता है-अहम्मन्यता;

विचार है-मैं विचार।

अनुभव-होने का अनुभव, अस्तित्व का अनुभव सीधे ईश्वर ही है,न कि कुछ और।

जब तक कुछ और मान रखा है या कुछ और लगता है तब तक अहंकार समझना चाहिए जो झूठ है।

फर्क इस बात का पडेगा कि हम होने का अनुभव ईश्वर का मानते हैं या अपना ?

अपना मानते हैं तो अहंकार, अहम्मन्यता,देहाभिमान का अंकुश बना रहेगा।

ईश्वर का अनुभव स्वीकारते हैं तो अहम्मन्यता का अंकुश मिटने लगता है।

लेकिन ध्यान तो सीधे अस्तित्व को ईश्वर के रुप में या ईश्वर को अस्तित्व के रूप में अनुभव करना हे।

ईश्वर और अस्तित्व दो नहीं है।

अस्तित्व विशाल,व्यापक अर्थ में है जिसमें सब आगया।अलग कुछ बचा ही नहीं।

तभी ध्यान है।

स्वयं में विशाल,व्यापक अस्तित्व को अनुभव करना,ईश्वर को अनुभव करना ध्यान है।

यह भ्रान्ति,यह गलत सोच मिटानी होगी कि मुझे जो मेरे होने का अनुभव हो रहा है यह मेरा है।

मैं मेरा शब्द को ही तो माया कहा है।

क्या बिना मैं मेरा शब्दों का प्रयोग किये अस्तित्व का अनुभव नहीं किया जा सकता ?

ऐसा करना सीधे ईश्वर को अनुभव करना है

और यह ध्यान है।

मैं मैं करने से बेहोशी छाती है,

ईश्वर को देखने से,अनुभव करने से ध्यानावस्था निर्मित होने लगती है।

अहम्मन्यता से( मैं यह हूं,वह हूं इस मान्यता से )कब किसने सुख पाया ?झूठी चीज कैसे सुख दे सकती है ?

सुख के लिए सत्य पर,ईश्वर पर आने के अलावा और कोई उपाय नहीं है।

हम अपने होने के अनुभव के रूप में सीधे सत चित आनंद स्वरूप ईश्वर को अनुभव कर रहे हैं यह सच है।

इसे सच मानने,जानने, स्वीकारने पर ध्यान स्वतःसिद्ध है।

अपना फोकस बदलना है।

समझना यह है कि अब तक ईश्वर के होने के अनुभव को अपने होने का अनुभव मानने की भूल की जा रही थी इसे मिटाना है।

संदेश है-निर्भय होकर अस्तित्व बोध को ईश्वर के बोध के रुप में स्वीकारिये।

यह मेरा,आपका,इसका,उसका नहीं,ईश्वर का है।ईश्वर स्वयं है अनुभव के रूप में।

इसे मेरा मानने तक भूल भटकन जारी रहेगी।

ईश्वर स्वयं है जानते ही झूठा शासक अहंकार तिरोहित हो जायेगा।

यथा राजा तथा प्रजा।

अहंकार झूठा व अत्याचारी शासक है।

ईश्वर सच्चा और कल्याणकारी शासक है।

निर्भय होकर अस्तित्व बोध को ईश्वरीय बोध के रुप में अपनाने की बात है।

यह अपना नहीं है। अपना अस्तित्व,अपना अनुभव,अपना बोध जब तक मान रखा है तब तक स्थिति अहंकारविमूढात्मा की है।तब तक ध्यान नहीं।जब तक ध्यान नहीं, सुख-शांति नहीं।

'दूसरे में ईश्वर को अनुभव करना प्रेम है।'

वही सूत्र लागू होगा।

दूसरा,दूसरा करने से यह भ्रांति होती है कि कोई व्यक्ति उसके होने का अनुभव कर रहा है।

मानस में स्पष्ट कहा है-

मैं अरु मोर तोर तें माया।

मैं,मेरा,तू तेरा,वह उसका ये शब्द मायिक हैं,भ्रामक हैं।

इन शब्दों का उपयोग करने का मतलब है भटक जाना।

सत्य का अन्वेषण करने वाला तो इन शब्दों का प्रयोग करेगा ही नहीं।वह सीधे अस्तित्व को अनुभव करेगा।

चूंकि वह सीधे ईश्वर को अनुभव कर रहा है इसलिए वह प्रेम के रूप में होगा।

हम जब तक किसी को सुखी दुखी, अमीर-गरीब,मूर्खविद्वान, स्त्री पुरुष आदि के रूप में देखते हैं तब तक विभिन्न प्रतिक्रियाएं होती हैं,प्रेम नहीं होता।

उनका होना,उनका होना नहीं है,ईश्वर का होना है।

और ईश्वर परम प्रेमास्पद है।

अलग-अलग इष्ट भी हो सकते हैं। कोई दिक्कत नहीं।

हर एक हृदय में अपने इष्ट को सीधे देखा जा सके तो प्रेम प्रगटेगा ही क्यों कि इष्ट से किसे प्रेम नहीं है !

कोई अपने गुरु को भी हर हृदय में देख सकता है, अनुभव कर सकता है।

किसी भी व्यक्ति के होने का अनुभव उसके व्यक्तिगत होने का अनुभव नहीं है।

वह अनुभव आत्मा है,गुरु है, ईश्वर है।

हम न देखना चाहें तो और बात है।

अज्ञान की शुरुआत स्वयं से होती है,अंत भी स्वयं से होता है।

मैं, होने के अनुभव को आपके होने का अनुभव मान रहा हूं तो आपका मूल्यांकन मेरी बुद्धि से होगा।

होने का अनुभव ईश्वर है या ईश्वर का अनुभव है तो अब मूल्यांकन नहीं हो सकेगा।अब तो सीधा प्रेम ही होगा।

प्रेम,ईश्वर है।ईश्वर,प्रेम है।

'सबमें ईश्वर को अनुभव करना ज्ञान है।'

हम मित्र में ईश्वर को अनुभव करना स्वीकार सकते हैं, शत्रु में नहीं।

इसलिए शत्रु मित्र में समता रखने के लिए कही जाती है।

समता काल्पनिक बात लगती है क्योंकि इसे अनुभव करना होता है।समता के अनुभव से बचने की कोशिश होगी तो कल्पना लगेगी ही।

यह तो जो निर्भय होकर अनुभव करने की हिम्मत करता है उसके लिए फिर समता कोई काल्पनिक बात नहीं है।

इसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्वयं श्रीकृष्ण हैं जो महाभारत के मैदान में भी हंसते हुए बात कर रहे हैं।

ऐसा नहीं कि हमारे लिये यह असंभव है।असंभव होता तो कृष्ण समता का संदेश देते ही नहीं।संदेश देने का अर्थ है यह संभव है।

हम सबको उस समत्वयोग में स्थापित हो जाना चाहिए जिसमें शत्रु मित्र की कल्पना न उठे तथा सबके होने को,ईश्वर के होने के रूप में जाना जा सके, अनुभव किया जा सके।

₹सबर₹ में अनेकता की ध्वनि है।

ईश्वर एक है।

उसके होने के अनुभव को मैं मेरा करने के कारण भ्रम फैला हुआ है।

इसलिए जब भी हम किसी भी व्यक्ति का चिंतन करें हमें सावधान हो जाना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं ?

हम व्यक्ति को अनुभव कर रहे हैं या ईश्वर को अनुभव कर रहे हैं ?

बुद्धि अहंबुद्धि है या सत्य को समझने में सहायता करने वाली ?

जब तक अहंबुद्धि है तब तक ₹क्या करें बुद्धि में जमता नहीं या मन नहीं मानता₹

यह समस्या बनी रहेगी।

सात्विक बुद्धि सात्विक ज्ञान में सहायक होती है।

कृष्ण ज्ञान को तीन रुप में स्पष्ट करते हैं -

₹जिस ज्ञान से मनुष्य पृथक-पृथक सब भूतों में एक अविनाशी परमात्मभाव को विभागरहित समभाव से स्थित देखता है उस ज्ञान को तो तू सात्त्विक जान।।

किंतु जो ज्ञान अर्थात जिस ज्ञान के द्वारा मनुष्य संपूर्ण भूतों में भिन्न-भिन्न प्रकार के नाना भावों को अलग-अलग जानता है उस ज्ञान को तू राजस जान।।

परंतु जो ज्ञान एक कार्यरुप शरीर में ही संपूर्ण के सदृश आसक्त है तथा जो बिना युक्ति वाला, तात्त्विक अर्थ से रहित और तुच्छ है- वह तामस कहा गया है।।₹

कोई ऐसा हो सकता है जो ऐसा चाह सकता है कि सभी लोग इसे जानें और सुखी हों।

कोई ऐसा हो सकता है जो सत्संग जैसी सर्वोत्तम चीज का श्रेय लेकर सुखी होना चाहता है।वह भटका हुआ है।उसकी भटकन जारी है।

कोई ऐसा हो सकता है जो ध्यान केवल स्वयं पर देता है कि जिस सात्त्विक ज्ञान की इतनी प्रशंसा है वह ( मुझमें )प्रकट हुआ है या नहीं ?

हम तीनों में से कौन हैं इसे स्वयं को ही जान लेना चाहिए।

इसे व्यक्तिगत रुप से लेना जरूरी है तभी ध्यान रहेगा कि ( मैं ) सबमें एक अविनाशी परमात्मभाव को विभाग रहित समभाव से स्थित देख पा रहा हूं,जान पा रहा हूं या नहीं ?

कोई बाहरी आलोचना भय न हो क्योंकि अपनी कमी अपने को ही ठीक करनी होती है।

ऐसे साधक या सिद्ध में सत्य को स्पष्ट रुप से प्रकट करने की क्षमता होती है और किसी चीज में ईमानदारी हो या न हो मगर सत्य की साधना इसके बिना नहीं हो सकती।

# ओड़िशा में शुरू होगी मुख्यमंत्री बस सेवा

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भुबनेश्वर :** ओडिशा सरकार 'मुख्यमंत्री बस सेवा' शुरू करेगी, जो राज्य के सभी मार्गों पर चलेगी, परिवहन मंत्री विभूति जेना ने राज्य विधानसभा को सूचित किया है। उन्होंने कहा कि पिछली बीजद सरकार ने चुनावों को प्रभावित करने के लिए एलएसीसीएमआई बस सेवा शुरू की थी। हालांकि, मौजूदा सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि 'मुख्यमंत्री बस सेवा' राज्य के सभी रूटों पर चले।मंत्री ने सदन को बताया कि इस पहल के तहत वरिष्ठ नागरिकों, महिलाओं और छात्रों को किराए में 50% छूट मिलेगी। इसके अलावा, राज्य सरकार अपने बेड़े में 12 नई सुपर प्रीमियम डीलक्स बसें शामिल करेगी। इस पहल का उद्देश्य सार्वजनिक परिवहन को बढ़ाना और ओडिशा में यात्रियों के लिए बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करना है। जनवरी 2025 में, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने राज्य भर में सार्वजनिक परिवहन और पर्यटन को बढ़ाने के उद्देश्य से नई बस सेवाओं की एक श्रृंखला शुरू की। इस पहल के तहत पांच डबल डेकर बसें, दस हॉप-ऑन-हॉप-ऑफ बसें और पच्चीस इलेक्ट्रिक बसें शुरू की गईं, जिनका उद्देश्य भुवनेश्वर, कटक और पुरी जैसे प्रमुख शहरों के बीच संपर्क में सुधार लाना था। डबल डेकर बस को भुवनेश्वर, कटक और पुरी के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को एक अद्वितीय और कुशल यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। एक संरचित समय-सारिणी के अनुसार संचालित होने वाली इन बसों का उद्देश्य निवासियों और पर्यटकों दोनों के लिए सुविधाजनक परिवहन की सुविधा प्रदान करना है। भुवनेश्वर और कटक में, हाल ही में शुरू की गई ।हॉप-ऑन-हॉप-ऑफ बसें विशेष रूप से पर्यटकों को सेवा प्रदान करती हैं, तथा इन शहरों के बीच प्रमुख आकर्षणों और स्थलों को जोड़ती हैं। यह सेवा लचीलापन और

सुविधा प्रदान करती है, जिससे यात्री अपनी गति से सांस्कृतिक और ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण कर सकते हैं। लगातार ठहरने और किफायती किराए के साथ, हॉप-ऑन-हॉप-ऑफ बसें ओडिशा के शहरी केंद्रों में पर्यटन के अनुभव को बढ़ाने के लिए तैयार हैं।

इन सेवाओं के पूरक के रूप में, पच्चीस इलेक्ट्रिक बसों की शुरूआत, टिकाऊ और पर्यावरण अनुकूल परिवहन समाधान के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। इन इलेक्ट्रिक बसों से कार्बन उत्सर्जन में कमी आने तथा दैनिक यात्रियों और पर्यटकों के लिए हरित यात्रा विकल्प को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

# 12 कांग्रेस विधायकों ने निलंबन पर विधानसभा में कांग्रेस विधायकों और सुरक्षाकर्मियों में झड़प

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भुबनेश्वर:** विधानसभा में कांग्रेस विधायकों और सुरक्षाकर्मियों के बीच टकराव। कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र कदम घायल हो गए। विधानसभा से बाहर निकाले जा रहे कांग्रेस विधायकों और सुरक्षाकर्मियों के बीच हाथापाई हो गई। जिसमें कांग्रेस विधायक दल के नेता रामचंद्र कदम के घायल होने की खबर है।

उसके हाथ में चोट लगी है। विधानसभा में 108 एम्बुलेंस पहुंच गई हैं। विधानसभा के बाहर सुरक्षा बढ़ा दी गई है। पीसीसी अध्यक्ष भक्तचरण दास के साथ एक के बाद एक कांग्रेस नेता विधानसभा के बाहर पहुंचे। छात्र कांग्रेस कार्यकर्ता सदमे में बाहर बैठा था। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को उठा लिया। पुलिस एक युवा कांग्रेस कार्यकर्ता को जबरन उठा ले गई। कांग्रेस विधायकों ने निलंबन पर अपना विरोध जताया। निलंबित कांग्रेस विधायकों को बाहर निकाला जा रहा है। कांग्रेस ने कहा था कि वह निलंबन के विरोध में पूरी रात विधानसभा में धरना देगी। कांग्रेस ने अध्यक्ष के फैसले के खिलाफ सदन में विरोध प्रदर्शन किया था। अध्यक्ष ने मार्शल को निलंबित विधायक को सदन से बाहर निकालने का आदेश दिया।

कांग्रेस विधायक तारा बहिनीपति ने व्यवस्था का प्रश्न न उठाए जाने पर नाराजगी व्यक्त की है। परिणामस्वरूप, विधानसभा को कल तक के लिए स्थगित कर दिया गया है। तारा ने कहा कि लोकतंत्र की हत्या कर दी गई है। स्टार नेता ने कहा कि जब तक महिला सुरक्षा के लिए सदन समिति का गठन नहीं हो जाता, वह पूरी रात विधानसभा में बैठेंगे। कांग्रेस ने कहा था कि अगर हम कुएं में सोएंगे तो बाद में जबरदस्ती जगाएंगे तो देखे जाएंगे। आज कांग्रेस के 12 विधायकों को विधानसभा से निलंबित कर दिया गया है। अध्यक्ष ने उन्हें अव्यवस्थित आचरण के लिए निलंबित कर दिया है। अध्यक्ष ने तारा प्रसाद बहिनीपति और रमेश जेना को छोड़कर सभी सदस्यों को निलंबित कर दिया है। उन्हें कांग्रेस सदन नहीं चलाने के आरोप में निलंबित किया गया है। उन्हें 7 दिनों के लिए निलंबित कर दिया गया है। निलंबित विधायकों में रामचंद्र कदम, सोफिया फिरदौस, अशोक दास, राजन एक्का, दशरथ गमांग, सत्यजीत गमांग, सागर दास, प्रफुल्ल प्रधान, मंगू खिल, प्रियत सावंत, नीलामाधव हिक्का और कद्रका अप्पलास्वामी शामिल हैं।

# रांची में भाजपा नेता की हत्या, पूर्व मुख्यमंत्री ने मांगा हेमंत का इस्तीफा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

**जमशेदपुर**, रांची में बीजेपी नेता तथा जिला परिषद के पूर्व सदस्य अनिल टाईगर हत्या गोली मारकर कांके चौक के पास हत्या कर दी गयी है ।विधानसभा में विपक्ष के नेता सह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को नैतिक जिम्मेदारी लेते हुए इस्तीफे की मांग की है

इस हत्या हत्या किसने और क्यों की, इसकी जानकारी अभी पुरी तरह नहीं मिल पाई है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है। वहीं, रांची पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए एक शूटर को गिरफ्तार किया है ।

घटना को लेकर जो जानकारी सामने आ रही है, उसके मुताबिक अनिल टाइगर निजी काम से कांके चौक आए हुए थे। जहां उन्हें गोली मारी गई। पुलिस की तफ्तीश में अब तक जो जानकारी हासिल हुई है, उसके अनुसार जमीन विवाद में अनिल टाइगर की हत्या की गई है। अनिल टाइगर कांके इलाके के ही रहने वाले थे।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक अनिल टाइगर जिला परिषद के पूर्व सदस्य थे। वह राजनीतिक रूप से भी काफी सक्रिय माने जाते रहे हैं। उन्होंने आजसू और भारतीय जनता पार्टी के लिए सक्रिय रूप से राजनीति की थी।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, 'अपराधी बेखौफ होकर जनप्रतिनिधियों पर हमला कर रहे हैं। झारखंड में कानून-व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। राज्य में न जनप्रतिनिधि सुरक्षित हैं और न ही आम नागरिक। पुलिस के अधिकारी जब जमीन का धंधा करेंगे और करवाएंगे।

# नीति आयोग ने सरायकेला का किया भ्रमण ,ग्राम्य रोजगार श्रृजन को देखा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

**जमशेदपुर,** आजाद भारत में सरायकेला सेट का विलय भारत वर्ष में होने के साथ हुए उथल पुथल के बीच योजना आयोग की टीम का यहां 60-70 के दशक से से ही आना आरंभ हुआ ।आज भारत सरकार की नीति आयोग टीम द्वारा सरायकेला-खरसावां जिला अंतर्गत आकांक्षी प्रखंड के रूप में चयनित विकास कार्यक्रम के तहत गम्हरिया प्रखंड मे आज दूसरे दिन विभिन्न पंचायत का भ्रमण किया गया। सनद रहे कि 1950 में स्थापित, योजना आयोग भारत सरकार की एक संस्था थी जिसका मुख्य कार्य पंचवर्षीय योजनाएँ बनाना। जबकि 1 जनवरी 2015 को योजना आयोग के स्थान पर नीति आयोग की स्थापना हुई, जो एक थिंक टैंक के रूप में कार्य करते हुए उसकी जगह ली है । सरायकेला के औधोगिक इलाके के इस पास ग्रामीण रोजगार श्रृजन के देखा , परखा ,समझा।

जहा वाहा की महिलाओं ने दोनों आगंतुकों को झारखंडी पारंपरिक वेश भूषा में सुसज्जित किया ।

निदेशक युवा कार्य एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार बंगाराराजु वी.वी के थाटावर्थी और उपसचिव उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग ललित कुमार सिंह, वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार की दो सदस्यीय टीम ने

आकांक्षी प्रखंड कार्यक्रम के तहत किए जा रहे विकास कार्यों का निरीक्षण किया । गम्हरिया प्रखंड के रापचा पंचायत के पिंडरा बेड़ागांव मे एसएचजी समूह की दीदी द्वारा चूजा बतख पालन केंद्र तथा पंचायत भवन यशपुर में पशु टीकाकरण, एसएससी की दीदियों के द्वारा किए जा रहें खेती, आचार, सैनिटरी पैड्स, थैला पतल-डोंगा निर्माण आदि का जायजा लिया । इसके साथ लाभुकों के साथ बातचीत की । इस दौरान समूह के अन्य दीदियों को भी अपने स्वरोजगार से हो रही लाभ तथा उसके प्रक्रिया आदि की जानकारी देते हुए इच्छानुरूप क्षेत्र में रोजगार स्वरोजगार से जुड़ने हेतु प्रेरित करने की बात कही।

नीति आयोग की टीम के द्वारा गंजिया बराज मे डैम द्वारा भूमिगत पाइपलाइन के माध्यम से किसानो के खेती मे सिंचाई के लिए उपलब्ध कराई जा रही व्यस्था के सम्बन्ध मे जानकारी ली गई तथा लाभुकों के साथ संवाद स्थापित किया गया। किसानों के साथ संवाद के क्रम में यशपुर पंचायत के विभिन्न गांव के किसानों ने कहा कि उन्हें भूमिगत पाइपलाइन के माध्यम से किस प्रकार उन्हें खेती में सहयोग मिल रही है। किसानों के द्वारा बताया गया कि पहले सिर्फ बरसात या ठंड के दिन में ही खेती हो पाती थी अब पाइपलाइन के माध्यम से सिंचाई की व्यवस्था उपलब्ध होने के पश्चात मौसम तदनुरूप सब्जी, फल एवं अन्य उपजाऊ आनाज की खेती कर पा रहें है। किसानों ने बताया कि पहले खेती ना हो पाने के कारण उन्हें रोजगार के लिए अन्य जिला या राज्य में पलायन करना पड़ता था, आज वह खुद के खेत मे उपजाऊ खेती कर अपने परिवार का भरण-पोषण कर रहें है।अब उन्हें रोजगार के लिए दूसरे जिला/राज्य का पलायन नही करना पड रहा है। किसानों के साथ संवाद के क्रम में अतिथियों नें किसानों को नई तकनीक के प्रयोग को समझने तथा सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं लेने, अन्य इच्छुक किसानों को भी खेती के लिए प्रेरित करने की बात कही गई। उन्होंने कहा कि खेती के कार्यक्रम मे सहयोग मिलने से ना सिर्फ़ स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा मिलता है बल्कि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैं।

# क्रॉम्पटन ने इनफिनिया और स्लिमओ लॉन्च किए, अब रोशनी होगी ज्यादा दमदार और लुक होगा ज्यादा स्टाइलिश!

मुख्य संवाददाता

**दिल्ली :** शानदार और आकर्षक डेकोरेटिव लाइटिंग की नई रेंज पेश करते हुए, क्रॉम्पटन ग्रीव्स कंज्यूमर इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड ने अपने बैटन लाइट्स पोर्टफोलियो में दो नए उत्पाद शामिल किए हैं। कंपनी ने इनफिनिया 24W को लॉन्च किया है, जो प्रिस्टेक तकनीक से लैस एक अनूठी इनडायरेक्ट लाइटिंग प्रणाली है। इसकी डिज़ाइन में सजावटी एंडकैप्स दिए गए हैं, जो बेहद खूबसूरत फिनिश के साथ चमकदार रोशनी प्रदान करते हैं, जिससे यह हर तरह के इंटीरियर में परफेक्ट फिट बैठता है।

इसके अलावा, कंपनी ने स्लिमओ 20W भी लॉन्च किया है, जो 15% अधिक स्लिम बैटन है और इसे आधुनिक लिविंग स्पेस को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया गया है। यह एलईडी लाइटिंग आधुनिक तकनीक और स्टाइलिश लुक का बेहतरीन संयोजन है, जो घरों और कार्यालयों में शानदार रोशनी के साथ एक आकर्षक माहौल तैयार करता है। ये लाइटिंग फिक्स्चर न केवल जगह को रोशन करते हैं, बल्कि डेकोर को और खूबसूरत बनाकर उसमें आधुनिकता का अहसास भी जोड़ते हैं। इनका स्लीक और मॉडर्न डिज़ाइन पूरे माहौल को बदल देता है और आकर्षण का केंद्र बन जाता है।

आज के उपभोक्ता सिर्फ रोशनी के लिए लाइटें नहीं खरीदते, बल्कि वे ऐसी लाइटें चाहते हैं जो उनके घर की खूबसूरती में भी इजाफा करें। इसी सोच को ध्यान में रखते हुए क्रॉम्पटन ने अपनी नई लाइटिंग रेंज पेश की है, जो फंक्शनैलिटी और स्टाइल के बीच एक बेहतरीन संतुलन प्रदान करती हैं। खासतौर पर लिविंग रूम के लिए डिज़ाइन की गई ये लाइटें आधुनिक सौंदर्य और उच्च गुणवत्ता वाली रोशनी का बेहतरीन संयोजन पेश करती हैं। ये लाइटें लिविंग रूम के लिए खास तौर पर बनाई गई हैं, जो घर का सबसे खास हिस्सा होता है। इनका डिज़ाइन आधुनिक है और ये रोशनी के साथ-साथ सुंदरता भी प्रदान करती हैं। क्रॉम्प्टन की ये नई लाइटें घरों को रोशन भी करेंगी और उन्हें सुंदर भी बनाएंगी।

बैटन रेंज में दो नए मॉडल पेश करते हुए, निम्नलिखित उत्पादों को आज के जमाने के लिविंग स्पेसेस में सहजता से मिलाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह इनके कार्य करने की क्षमता और स्टाइल दोनों को बेहरत बनाते हैं।

इसकी मुख्य विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए:

**इसके प्रमुख फीचर्स हैं :**

**x** इनफिनिया 24W: इनफिनिया बैटन अपने बोल्ड, आकर्षक डिजाइन के साथ बिल्कुल अलग नजर आती है, इसे लगाने से कमरे की खूबसूरती और बढ़ जाती है। इसमें खूबसूरती का संयोजन फंक्शनैलिटी से किया गया है। प्रिसटेक तकनीक और क्रोम फिनिशिंग की विशेषता वाली इनफिनिया 24W बैटन की रोशनी हल्की और शांत होती है, जिससे कमरे में सुकून मिलता है। यह रौशनी आँखों को भी आराम देती है। इसमें आईस्माइल फीचर दिया गया है जोकि आपको एक सुकूनदायक अनुभव देता है।

**x** स्लिमओ 20W: स्लिमओ बैटन की डिजाइन काफी स्लीक है और यह बेहद कम जगह में आ जाती है। यह आज के जमाने के इंटीरियर्स के लिए एक आदर्श विकल्प है। इसके अनूठे एंड कैप्स और स्लिम प्रोफाइल इसे वर्ग में सबसे पतला बनाते हैं, यह एक बेहद खूबसूरत एवं स्टाइलिश अपीयरेंस देती है। लाइट के चारों ओर फैलने से रोशनी ज्यादा तेज होती है, और इससे एक संतुलित और आमंत्रित करने वाला माहौल मिलता है। स्लिमओ 20W बैटन लाइटवेट और लगाने में आसान है। यह उन लोगों के लिए एकदम सही विकल्प है जो अपने लाइटिंग समाधानों में फंक्शनैलिटी और डिजाइन दोनों को महत्व देते हैं।

बैटन रेंज में ये नए उत्पाद घर को सुंदर और रोशन दोनों बनाते हैं। ये लाइटें देखने में अच्छी हैं और बढ़िया रोशनी देती हैं। इनका डिज़ाइन एकदम स्लीक और मॉडर्न है और ये आँखों को भी आराम देती हैं। अपने अभिनव और ग्लेयर-फ्री रौशनी के साथ ये प्रोडक्ट्स आराम और खूबसूरती दोनों देते हैं।

## शमशाबाद बडेर में श्री आई माता जी धर्म रथ भैल का जोरदार स्वागत

परिवहन विशेष न्यूज

सीरवी समाज शमसाबाद बडेर में सोमवार को शाम 5: 00बजे श्री आई जी फार्म हाउस में *श्री आई माता जी धर्म रथ भैल* का आगमन हुआ। आईजी फार्म हाउस में भैल रथ का गाजे बाजे व गैर नृत्य के साथ जोरदार स्वागत हार्दिक अभिनन्दन किया। फिर शाम 6:00 बजे को श्री आई माता जी धर्म रथ भैल का गाजे बाजे ढोल बजाकर और गैर द्वारा शानदार नृत्य के साथ भव्य बधावा शुरू हुआ करीब 40मिनट तक माता जी का बंधावा चलता रहा । आई माता जी के जय घोष के नारे, अखंड ज्योति की जय जयकार, दीवान साहब के नारे, बिलाड़ा धाम के नारे भक्त गण नाचते झुमते माता जी भैल रथ की भव्य बधावा के साथ शमशाबाद बडेर प्रांगण में पहुंचे। तत्पश्चात माताजी की संध्या आरती बाबा मंडली व सभी भक्त गण द्वारा सम्पन्न हुई। धर्म प्रचारक श्री दीपाराम काग द्वारा माताजी का सम्पूर्ण इतिहास और सीरवी समाज का इतिहास को विस्तार से समझाकर समाज बंधुओं माताओ -बहनो और नई पीढ़ी बच्चों को नई प्रेरणा प्रदान की। बडेर प्रांगण में ऐतिहासिक धार्मिक कार्यक्रम में बडेर के दोनों समितियों के अध्यक्ष, सचिव के साथ पदाधिकारी गण एवं समस्त सदस्य गण, तेलंगाना प्रान्त के सचिव व सभी बडेरो के अध्यक्ष - सचिव और विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ हजारों की संख्या मे भक्तो की उपस्थिति को इस धार्मिक कार्यक्रम को अविस्मरणीय बना दिया।

# सीरवी समाज आईलापुर में भैल वधावा कार्यक्रम सम्पन्न

परिवहन विशेष न्यूज

**बिरमगुडा।** स्थित सीरवी समाज, तेलंगाना आईलापुर समाज बन्धुओं के तत्वावधान में एक दिवसीय कार्यक्रम के तहत भैल वधावा एवं जागरण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति में राजेश भायल, बुधाराम काग , मलाराम सोलंकी, मोहनलाल भायल, माणकचन्द गेहलोत, ने बताया कि प्रथम दिवस आईलापुर श्री आई माताजी मंदिर में जागरण, विशेष कार्यक्रम, रंगारंग गेर नृत्य, महिलाओं द्वारा कलश यात्रा व लाभार्थी परिवार द्वारा भैल वधावा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पधारे सम्मानित अतिथियों, विभिन्न समाजों के पदाधिकारियों सोहनलाल हाम्बड़, राजुराम परिहार, हरिश परिहार, भुराराम परिहार, मोहनलाल, प्रभुराम, वधावा कार्यक्रम भैल वधावा के लाभार्थी परिवार माणकचन्द गेहलोत, बुधाराम काग, गौतम काग, सोहनलाल गेहलोत, जयराम सेपटा, पुनम चन्द्र सेपटा का राजस्थानी परम्परा से विशेष सम्मान किया गया। भैल बाबाजी मंडली पुना बाबाजी भैल जति ,महेन्द्र बाबाजी मालवा निमाड़ (माध्य प्रदेश), पोकर बाबाजी, खेता बाबाजी, शंकर बाबाजी, राजेन्द्र पंवार, बाबूलाल परिहार, मुख्य अतिथि दीपाराम काग ने श्री आईमाता जी की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए बताया आईमाता जी की कृपा से देश के विभिन्न क्षेत्रों में सीरवी समाज बन्धु मेहनत, ईमानदारी, कार्य के प्रति लगन व अराध्य देवी के प्रति आस्था, पूजा अर्चना करते हुए सुख-समृद्ध है। युवाओं को संस्कारी कर उच्च शिक्षा दिलाने से समाज का चहुँमुखी विकास हो सकता है। पधारे समाज बन्धुओं के लिए भोजन प्रसादी की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर की गयी। कार्यक्रम में समाज के राजेश भायल, मोहनलाल भायल, मलाराम सोलंकी, अशोक सेपटा, प्रकाश चोयल, पुनम चन्द्र सेपटा, हिम्मताराम हाम्बड़, मांगीलाल पंवार, माणकचन्द गेहलोत, बाबूलाल मुलेवा, भानाराम सेपटा, चुतराराम बर्फा, राजुराम बर्फा, चुन्नीलाल चोयल, समस्त कार्यकारणी व समाज बन्धु उपस्थित थे। राजेश भायल, मोहनलाल भायल, माणकचन्द गेहलोत, मलाराम सोलंकी, ने भैल बधावा कार्यक्रम में पधारे समाज बन्धुओं का आभार प्रकट किया। कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। सीरवी समाज सम्पूर्ण डॉट कॉम ने आनंद चोयल ने किया।मंच का संचालन राजेश भायल, बुधाराम काग ने किया।

विशेष : 27 मार्च - विश्व रंगमंच दिवस

## रंगमंच पर निभा रहें किरदार ...!

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
हरेक पड़ाव से गुजर रहीं जिन्दगी,
एक-दूसरे के साथ करती बन्दगी।
कुछ ही कलाकार कर देते गन्दगी,
सब सही करते विधाता दिल्लगी।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
ईश्वर ने भी क्या रचा है ये संसार,
सबके दामन में भरपूर दिया प्यार।
कब किसके हिस्से में आ जाये हार,
कभी खुलते रहेंगे किस्मत के द्वार।

सजा है विश्व के पटल में रंगमंच,
सभी निभा रहें किरदार कर संच।
गुजरती गई जिन्दगी देखते ख्वाब,
करते रहे अभिनय झाड़ते है रुबाब।
यू एक-दूजे का मिलता रहा सहवास,
बुझती रही प्यास, खिलते रहें गुलाब!
जीवन चलता रहें अदाकारी हैं शबाब।

**संजय एम तराणेकर**
**(कवि, लेखक व समीक्षक)**

# डॉ. देवेन्द्र प्रधान को भावभीनी श्रद्धांजलि

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

**भूबनेश्वर:** भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. देवेन्द्र प्रधान के निधन पर उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी सहित उत्तराखंड, बिहार, हरियाणा समेत विभिन्न राज्यों के मंत्री, सांसद, विधायक, जनप्रतिनिधि एवं प्रमुख हस्तियों ने तालचेर के हांडी धुआं स्थित उनके आवास पर पहुंचकर अपनी संवेदना व्यक्त की। इस अवसर पर डॉ. सिंह ने मुख्यधारा की राजनीति में उनके द्वारा छोड़ी गई छाप, उनके व्यक्तित्व, उपलब्धियों तथा सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में उनके सरल एवं विनम्र व्यवहार को सभी ने याद किया।

**पुष्कर सिंह धामी, मुख्यमंत्री, उत्तराखंड**

डॉ. देबेन्द्र प्रधान के सार्वजनिक जीवन से ओडिशा और देश की जनता अच्छी तरह परिचित है। उन्होंने अपना जीवन लोगों की भलाई के लिए काम करते हुए और उन्हें आगे बढ़ने में मदद करते हुए बिताया। वह गरीबों और मजदूरों के बीच रहते थे। उन्होंने सादा जीवन जीते हुए महान सफलता हासिल की। उनके पुत्र, केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान, उस कार्य को जारी रख रहे हैं। उनका निधन देश, पार्टी और समाज के लिए अपूरणीय क्षति है।

**नवीन जिंदल, लोकसभा सांसद, कुरुक्षेत्र, प्रमुख उद्योगपति**

डॉ. देवेन्द्र प्रधान हम सभी के लिए आदरणीय थे। वह तीन बार ओडिशा भाजपा के अध्यक्ष रहे, साथ ही सांसद और मंत्री भी रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन देश और देशवासियों की सेवा में समर्पित कर दिया। उनके दिखाए रास्ते पर उनके बेटे धर्मेंद्र प्रधान देश का विकास कर रहे हैं।

**सतीश चंद्र दुबे, कोयला एवं खान राज्य मंत्री, भारत सरकार**

ओडिशा में भाजपा के निर्माण में डॉ. देवेन्द्र प्रधान का योगदान अवर्णनीय है। उनके आने से पहले ओडिशा में भी भाजपा की सरकार बन चुकी थी। मेरी उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि।

**पद्म श्री अद्वैत चरण गंडनायक, प्रख्यात मूर्तिकार**

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095 . newstransportvishesh@gmail .com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी .आर .बी . एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023